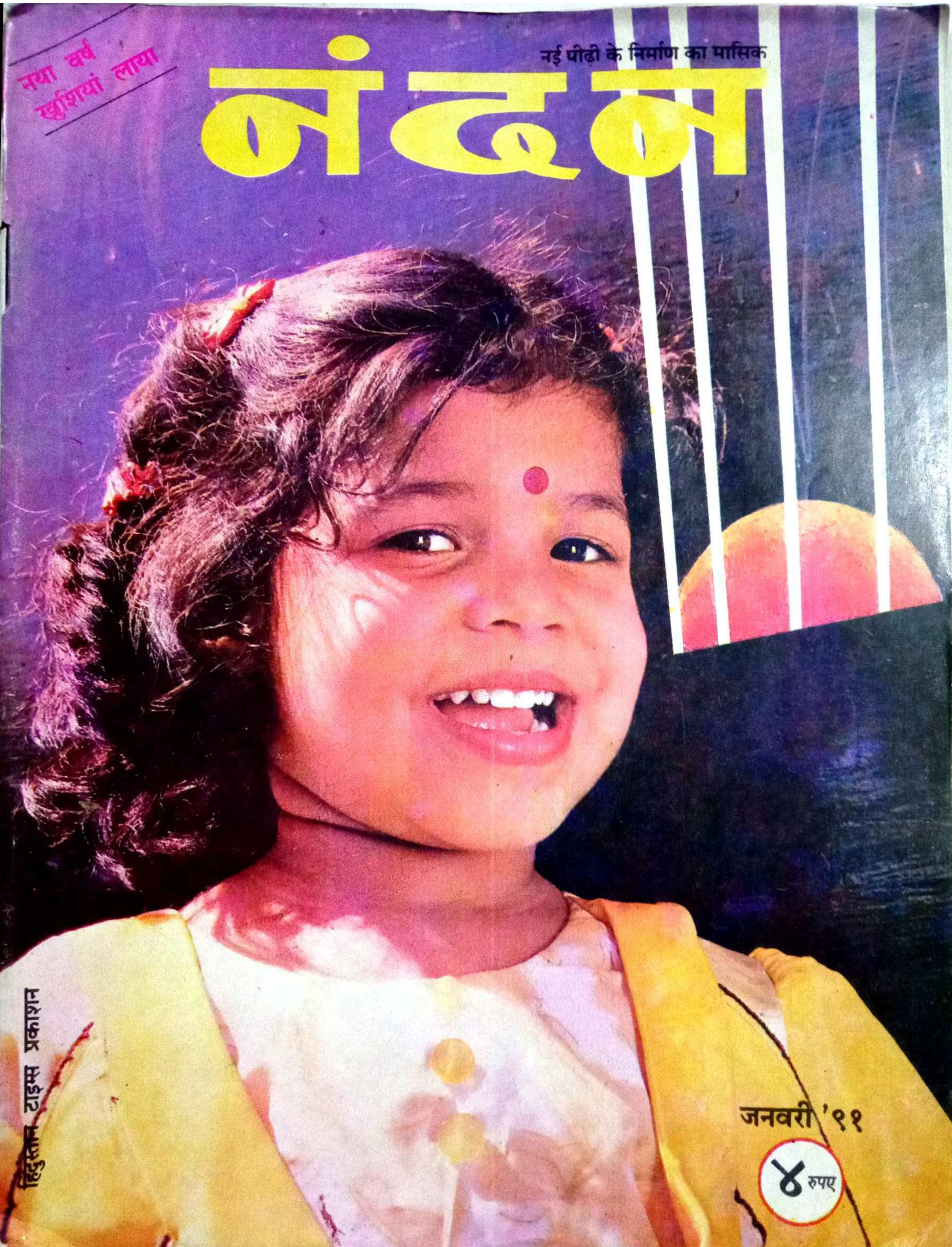
नया वर्ष खुशियां लाया

नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



जनवरी '९१

४ रुपए

हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

मैंगो से महान!



न्यूट्रीन के नेचुरो सदाबहार. मोटे-मोटे जूसी मैंगो बार.
आम के शुद्ध गूदे से तैयार.
मीठे-मीठे. रस की खान. वाकई! मैंगो से महान!

nutrine

डायमण्ड कॉमिक्स

पेश करते हैं





अंकुर बाल बुक क्लब

सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :–

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क दस रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्या शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हों तो डायमंड कामिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपके हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अंतर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

सदस्यता का कूपन

मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क दस रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ....

पिता का नाम ....

पता ....

डाकखाना .... जिला ....

डायमंड कामिक्स प्रा.लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002


इण्डाना सुपर बच्चे
अब
सुपर तेज़ बच्चों
के लिये
सुपर शक्ति
RUBIK'S CLOCK
अमित पॉल (१५ वर्ष)
रुबिक क्लॉक पज़ल का जादूगर
सुहेल मल्होत्रा (१२ वर्ष)
जूनियर राष्ट्रीय टेनिस खिलाड़ी
दीया वोहरा (८ वर्ष)
जूनियर तैराकी चैम्पियन
दिल्ली प्रदेश
INDANA
SUPER GLUCOSE
BISCUITS
100g
सुपर बच्चों के लिये एक सुपर बिस्कुट। सुपर ग्लूकोज़। ग्लूकोज़ के प्राकृतिक गुण... व शक्ति-स्फूर्ति से भरपूर। बच्चे इनको खाते जाते, और हमेशा आगे बढ़ते जाते।
स्वाद भरे और कुरकुरे बिस्कुट
इण्डाना सुपर ग्लूकोज़। आपके चैम्पियन के लिये।
MEGACORP 262/90 HIN

आओ बात करें

बनवास में सीता, राम और लक्ष्मण चित्रकूट से आगे चले । घने जंगल में बढ़ते गए । चलते-चलते एक आश्रम के निकट पहुंचे । वहां मुनियों ने इनका स्वागत किया । कहने लगे—"राजभवन में रहो या वन में, हम तो आप को ही राजा मानेंगे ।" तीनों ने रात वहीं बिताई । अगले दिन बड़े सवेरे ही आगे बढ़ चले ।

आगे-आगे और भी भयंकर जंगल था । हिंसक जानवरों तथा पशु-पक्षियों से भरा हुआ था । तभी अचानक कुछ आवाज-सी सुनाई दी । तीनों सावधान हो गए । पहाड़ जैसे शरीर वाला एक भयंकर राक्षस सामने आकर खड़ा था । उसके हाथ खून से सने थे । वह गरजकर बोला—"अरे छोकरो, तुम कौन हो ? ऋषियों जैसा वेश बनाकर पाखंड रचाए हो । हाथ में शस्त्र भी लिए हो और साथ में एक युवती भी है । जानते हो, मैं कौन हूं ? मैं महाबली राक्षस विराध हूं । यज्ञ करते ऋषि-मुनि मेरे डर से भाग खड़े होते हैं । फिर भी मैं उनको छोड़ता नहीं , मारकर अपनी भूख मिटाया करता हूं ।"

राक्षस विराध ने सीता को पकड़ लिया । सीता घबरा गईं और कांपने लगीं । राम बोले—"लक्ष्मण, अब क्या होगा ? क्या बनवास में हमें इसी तरह के कष्टों का सामना करना होगा ।" वीर लक्ष्मण क्रोध में भरकर बोले—"भैया आप अभी मेरे बाणों का खेल देखेंगे । मैं इस राक्षस को धूल चटा दूंगा ।"

तभी विराध ने ललकार कर फिर पूछा—"अरे लड़को, तुम चुप क्यों हो ? बतलाओ तुम कौन हो ।"

अब तक राम संभल चुके थे । जोर से बोले—"हम सूर्यवंशी राजकुमार हैं । यह मेरी पत्नी है । बनवास का व्रत लेकर हम यहां आए हैं । तुम अपना परिचय दो ।"

विराध ने अट्टहास किया । बोला—"अच्छा, तुम मेरा परिचय जानना चाहते हो ? मेरे सामने कौन टिक सका है ! मुझे ब्रह्मा से वर मिला हुआ है । खैर चाहते हो, तो यहां से भाग जाओ । इस युवती को मैं अपनी पत्नी बना लूंगा ।"

राम का चेहरा तमतमा उठा । उन्होंने एक तीक्ष्ण बाण छोड़ते हुए कहा—"ले, तुझे यमलोक भेजता हूं !"

पर बाण राक्षस के विशाल शरीर के आरपार हो गया । वह जैसे का तैसा खड़ा रहा । घायल होने के कारण उसका रोष और भी बढ़ गया । उसने सीता को छोड़ दिया और मुंह फाड़कर दोनों भाइयों पर झपट पड़ा । तभी राम और लक्ष्मण ने उस पर बाणों की वर्षा शुरू कर दी ।

राक्षस फिर गरजा और उसने अंगड़ाई ली । उसके शरीर में बिंधे हुए सारे तीर गिर गए । जोर-जोर से हंसते हुए वह राम-लक्ष्मण की ओर बढ़ा । उन्हें पकड़कर कंधों पर बैठा लिया । घने जंगल की ओर भागने लगा । यह देखकर सीता डर गईं और उनकी आंखों से आंसू गिरने लगे ।

राम और लक्ष्मण ने उस राक्षस के दोनों हाथ धड़ से अलग कर डाले । राक्षस असहाय होकर गिर पड़ा । दोनों भाइयों ने लातों और मुक्कों से उस पर खूब प्रहार किए । पीड़ा के कारण विराध कराहने लगा, पर मरा नहीं । तब विराध बोला—"भगवन, अब मैं समझ गया आप कौन हैं । मैं राक्षस कुल में पैदा नहीं हुआ । मैं तो गंधर्व हूं । शाप के कारण मुझे कोई मारकर मुक्ति नहीं दे सकता । मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दीजिए और धरती में गाड़ दीजिए । बस, मैं अपने लोक पहुंच जाऊंगा ।"

राम-लक्ष्मण ने ऐसा ही किया । इस तरह विराध गंधर्वलोक चला गया । विराध को मुक्ति देने के बाद दोनों भाई सीता के पास पहुंचे । उन्हें सारा हाल सुनाया । फिर वे आगे बढ़ चले ।

श्रीराम ने न जाने कितने पापियों को मुक्ति दी । नए वर्ष की शुरुआत हम उन्हीं को स्मरण करके कर रहे हैं । इस अंक में श्रीराम का कैलेंडर भी भेंट कर रहे हैं ।

नव वर्ष मंगलमय हो ।

—तुम्हारे भइया

[illegible]

नंदन

जनवरी '९१

वर्ष : २७ अंक : ३

सम्पादक

जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

इस अंक में विशेष

कविताएं

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : महेन्द्र मोदी; एलबम : एम.एस. अग्रवाल

सहायक सम्पादक : **चन्द्रदत्त 'इन्दु'**

मुख्य उप-सम्पादक : **देवेन्द्रकुमार**

वरिष्ठ उप-सम्पादक : **रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा**

उप-सम्पादक : **डा. चंद्रप्रकाश, नरेन्द्र कुमार**

चित्रकार : **प्रशांत सेन**



किले का जादू

—डा. शिवकुमार 'निडर'

अश्विनीपुरी का राजा जीतसिंह एक शूरवीर, कुशल और न्यायप्रिय शासक था। प्रजा की भलाई के लिए हमेशा तैयार रहता। उसका यह प्रजा प्रेम मंत्री सुवेश को हमेशा खटकता रहता था। वह राजा को मारकर खुद अश्विनीपुरी का राजा बनना चाहता था। उसने कई बार प्रजा, सेनापति व सभासदों को राजा के विरुद्ध भड़काना चाहा, मगर असफल रहा।

धीरे-धीरे राजा के पास उसने चाटुकारों को इकट्ठा करना शुरू किया। राजा उनकी लुभावनी बातों में आकर प्रजा के प्रति लापरवाह होता चला गया। कुछ ही दिनों में राज्य में प्रजा पर अत्याचार बढ़ गए। मगर राजा को उन चाटुकारों ने इसकी हवा तक न लगने दी। प्रजा राजा से सख्त नफरत करने लगी। मंत्री सुवेश ने अपनी कूटनीति और लालच से सेनापति के साथ-साथ प्रमुख सभासदों को भी तोड़ लिया।

उस वर्ष राज्य में भीषण सूखा पड़ा। पशु, पक्षी, आदमी-सभी भूख से तड़प-तड़प कर मरने लगे। किसी तरह यह समाचार जब राजा के कानों तक पहुंचा, तो वह प्रजा के कष्टों की बात सुनकर तड़प उठा। उसने तुरंत मंत्री और प्रमुख सभासदों की एक बैठक बुलाई। उनसे इस भीषण आपदा से छुटकारा पाने का उपाय पूछा। मंत्री बोला—"महाराज, मैं आपको एक उपाय बता सकता हूं, मगर वह है बहुत कठिन... उसमें आपकी जान भी जा सकती है।"

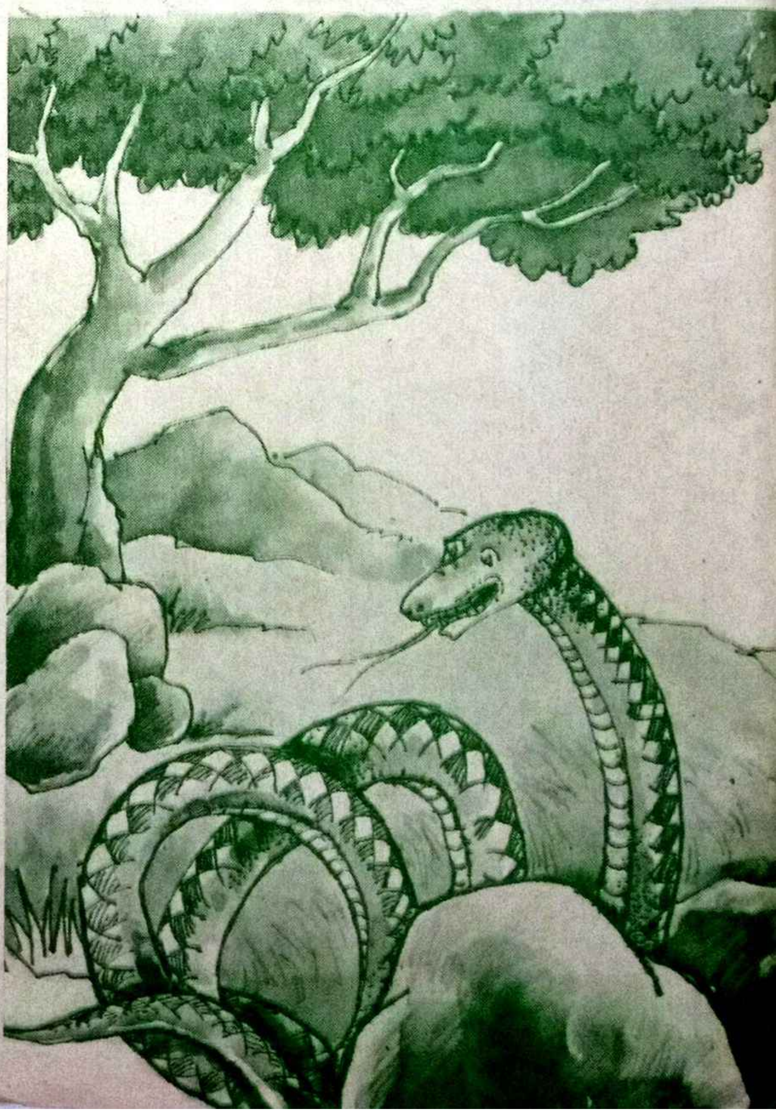
राजा के आग्रह करने पर उसने बताया —"महाराज, यहां से दक्षिण दिशा में धौलगिरि के सघन वन में अमोल ऋषि तपस्या कर रहे हैं। अगर आप वहां जाकर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर लें, तो समस्त आपदाएं नष्ट हो जाएंगी।"

राजा तुरंत तैयार हो गया। रात के अंतिम प्रहर में उसने घोड़े पर जीन कसी और बिना रानी को बताए, दक्षिण दिशा की तरफ प्रस्थान कर दिया।

चलते-चलते राजा एक दिन धौलगिरि के सघन वन में पहुंच गया। भटकते-भटकते उसे तीन दिन हो गए, मगर अमोल ऋषि के उसे कहीं दर्शन नहीं हुए। इसी बीच उसे अनेकानेक जंगली जानवरों का सामना करना पड़ा। राजा एक पेड़ के नीचे खड़ा होकर अमोल ऋषि के बारे में सोचने लगा। तभी उसे जोर की चीख सुनाई पड़ी।

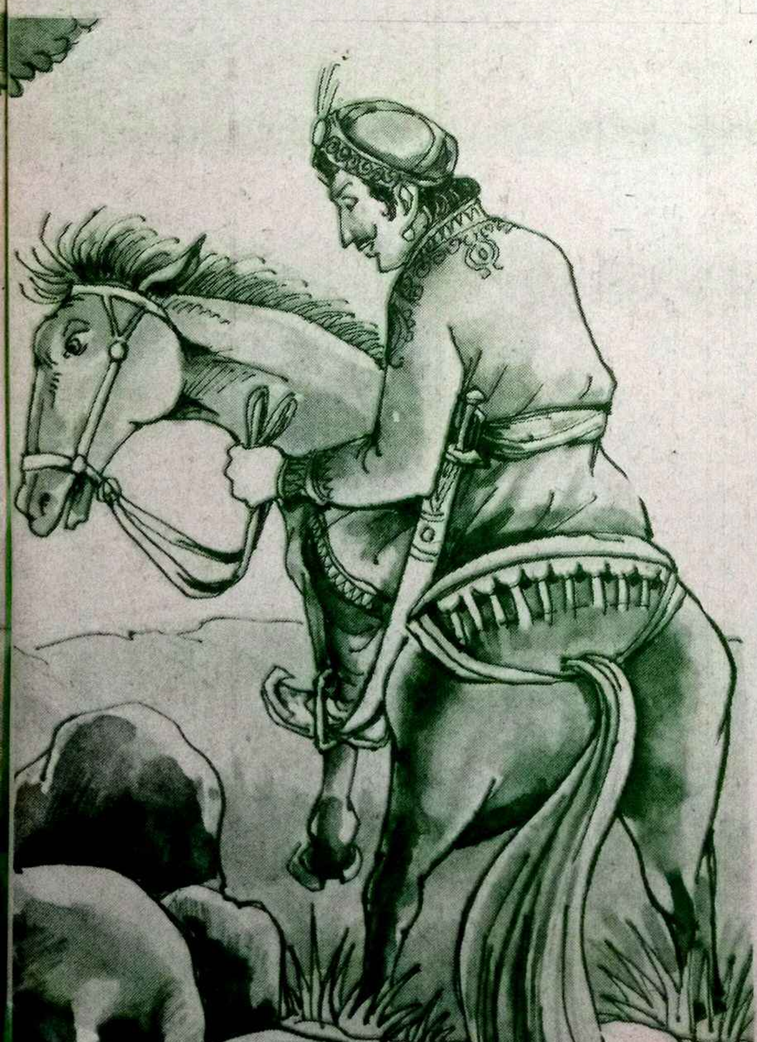
राजा उसी दिशा की ओर बढ़ गया। कुछ आगे जाकर उसने देखा —एक भयंकर नाग की पूंछ एक भारी-भरकम पत्थर से दबी हुई है। नाग अपने को मुक्त करने के लिए बार-बार उछल-उछलकर प्रयास कर रहा है। यह मनुष्य जैसी चीख उसी नाग के मुंह से निकल रही थी। राजा आश्चर्य में पड़ गया।

उसने भारी पत्थर को बहुत प्रयत्न करने के बाद नाग की पूंछ से हटा दिया। पत्थर हटते ही नाग की चीख बंद हो गई। वह मनुष्य की आवाज में बोला—"हे राजन, आपने मेरी जान बचाकर मुझ पर भारी उपकार किया है। मैं आपका यह उपकार जीवन



भर नहीं भूलूंगा। मगर आप इस भयानक वन में इस तरह क्यों घूम रहे हैं ?''

राजा ने सारी बात कह सुनाई। इस पर नाग ने कहा—''हे राजन, यह माया वन है। यहां आने के बाद कोई मनुष्य जिंदा वापस नहीं गया। कुछ वर्ष पहले तक यहां नागों का राज्य था। नागराज इसके राजा थे और मैं उनका पुत्र नागेश हूं। फिर यहां धूमकाक्ष नाम का राक्षस आया। उसने अपने जादू के जोर से एक मायावी किले का निर्माण किया। नागराज सहित बड़े-बड़े नागों को उसने उस किले में बंद कर दिया। उसके जादू के सामने नागराज का जादू भी कुछ न कर पाया। मैं उसके जादू के डर से जगह-जगह मारा-मारा फिर रहा हूं। उसने अपने किले के चारों तरफ मीलों लम्बे जंगल में जादुई दलदल, जीव-भक्षी झाड़ी तथा खतरनाक जंगली जानवरों का निर्माण किया है, जिससे वहां तक कोई पहुंच न सके। इसलिए हे राजन, आप राक्षस की नजर में आने से पहले ही यह जंगल छोड़ दो। अन्यथा प्राण नहीं बचेंगे। अमोल ऋषि के बारे में नागराज ही बता सकते हैं, मैं कुछ नहीं जानता।''



सुनकर राजा ने कहा—''हे नागेश, तब तो मुझे नागराज से अवश्य मिलना होगा। मैं ऋषिवर से मिलने को दृढ़ प्रतिज्ञ हूं। मुझे मायावी किले का रास्ता बताओ।''

नागेश बोला— ''हे राजा, नागराज से मिलने के लिए तुम्हें उस राक्षस का वध करना होगा। अगर तुम्हें जान की परवाह नहीं है, तो मैं एक मणि देता हूं। इसमें गुण है कि यह प्रकाश देती हुई मायावी किले तक ले जाएगी। दूसरे, किले का जादू आप पर असर नहीं कर पाएगा। तीसरे, इसके पास होने पर भीषण अग्नि की ज्वाला भी शीतल हो जाती है।

—''मैं आपको उस मायावी राक्षस को मारने की तरकीब बतलाता हूं। अगर कामयाब हुए, तो नागराज के साथ समस्त नाग समूह आपका आभारी रहेगा। अगर किसी तरह आप किले के अंदर पहुंच गए, तो वहां एक काली आदमकद मूर्ति मिलेगी। उस मूर्ति के हाथ में एक जादुई तलवार है। अगर आप किसी तरह वह तलवार ले लें, तो समझ लेना, आप जीत गए। तलवार हाथ में आते ही राक्षस की समस्त शक्तियां नष्ट हो जाएंगी। किले का सारा जादू समाप्त हो जाएगा। सभी नाग कैद से मुक्त हो जाएंगे। हे राजन, तब उस राक्षस को मारना आपके लिए एक साधारण-सा काम होगा। यह काम नाग नहीं, कोई मनुष्य ही कर सकता है। इसलिए मुझे आपकी मदद चाहिए।''

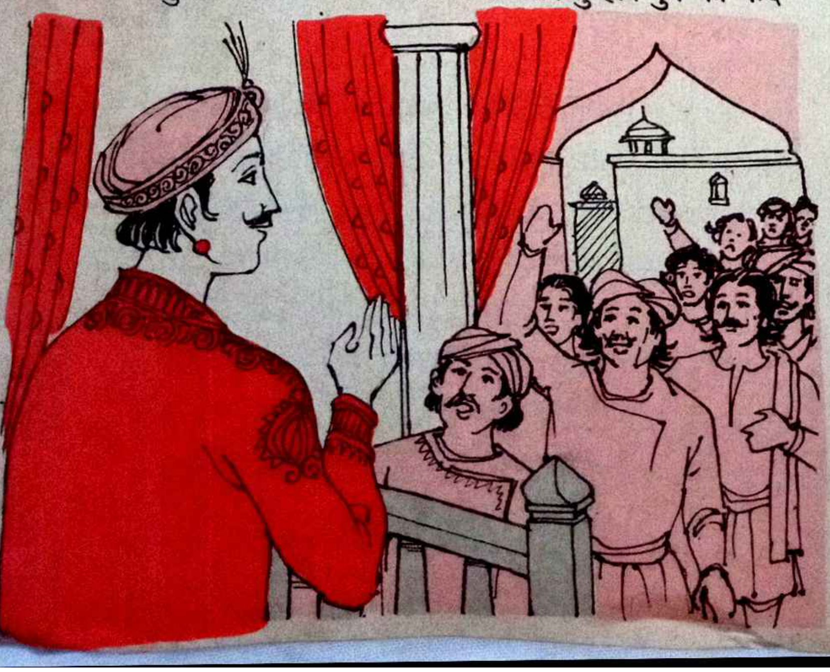
राजा ने वह मणि बाजू में बांधकर अपना घोड़ा दौड़ा दिया। दलदल, जीव-भक्षी झाड़ी तथा जंगली जानवर-सबको रौंदता हुआ, वह किले के मुख्य द्वार पर पहुंच गया।

अभी वह घोड़े से उतरा ही था कि अपने सामने राक्षस को खड़ा देख, राजा के होश गुम हो गए। राजा अभी तलवार निकालना ही चाहता था कि राक्षस ने एक हाथ बढ़ाकर उसके घोड़े की गर्दन मरोड़ दी।

दूसरे हाथ से उठाकर उसे किले में ले गया। वहां एक बहुत बड़ा अग्निकुंड था। उसने राजा को जलते हुए अग्निकुंड में डाल दिया और जंगल में घूमने चला गया।

होश आते ही राजा ने देखा कि वह अग्नि की भीषण लपटों में घिरा हुआ है, मगर अग्नि का उसके शरीर पर कोई प्रभाव न था। वह धीरे-धीरे बाहर निकला। उसने अपनी नजर चारों तरफ घुमाई। एक तरफ काली मूर्ति खड़ी थी। उसने लपककर उस मूर्ति के हाथ से तलवार खींच ली। उसी समय जंगल में भीषण तूफान उठने लगा। सारा किला हिलने लगा। राक्षस की दहाड़ से सारा जंगल कांप उठा। उसे लगा, राक्षस दौड़कर किले में आ रहा है। वह सावधान होकर राक्षस का सामना करने को खड़ा हो गया।

राक्षस ने राजा को पकड़ना चाहा। राजा ने उस पर तलवार चलाई। तलवार में से एक भयंकर ज्योति निकली और राक्षस एक साधारण मानव होकर रह गया। एक ही वार में राजा ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। तभी राजा ने देखा कि उसे चारों तरफ से विशाल नागों ने घेर रखा है, उसमें नागेश भी था। नागेश ने नागराज से राजा का परिचय कराया। नागराज ने कहा—"हे राजन, यहां अमोल नाम के कोई ऋषि नहीं रहते। तुम्हारे मंत्री ने तुम्हें मरवाने का षड्यंत्र किया था। उसने तुम्हें चाटुकारों से घेरकर प्रजा पर बहुत जुल्म ढाए हैं। प्रजा उन्हें तुम्हारे द्वारा किए अत्याचार समझकर तुमसे सख्त नफरत करती है। तुमको मरा मानकर उसने रानी और तुम्हारे पुत्र को कैद



में डाल दिया है। सेनापति भी उससे मिला हुआ है। प्रजा ने उसे राजा के रूप में स्वीकार कर लिया है। इस समय उसका राज तिलक होने जा रहा है।"

सुनकर राजा अवाक रह गया। नागराज ने आगे बढ़कर फुफकार मारी -- अब राजा एक साधारण किसान बन गया। नागराज बोले—"हे राजन, मैं आपके उपकार का बदला चुकाना चाहता हूं। आप अपनी आंखें बंद कीजिए।"

आंखें बंद करने के बाद जैसे ही राजा ने आंखें खोलीं, तो उसने देखा—वह अपनी राजसभा में है। मंत्री सुवेश का राज तिलक होने वाला है। मंत्री, सेनापति, सभासदों और प्रजा की भारी भीड़ है। तभी एक चमत्कार हुआ। मंत्री की गर्दन में एक बहुत भयंकर काला नाग लिपटा हुआ था। उसका फन उसके सिर पर था। सुवेश नाग को देखकर थर-थर कांपने लगा। मंत्री की गर्दन में नाग देखकर सेनापति तथा सैनिक उसे बचाने दौड़े। तब तक हर एक की गर्दन में सांपों की माला पड़ चुकी थी। सब खड़े-खड़े कांपने लगे, कुछ बेहोश हो गए। तभी नागराज की आवाज गूंजी—"हे प्रजाजनो, तुम्हारा न्यायकारी राजा प्रजा से अत्यधिक प्रेम करने वाला है। मंत्री ने राज्य पर आई आपदा मिटाने के बहाने उसे ऐसे जंगल में भेज दिया, जहां से कभी कोई वापस नहीं आया। तुम पर जो अत्याचार हुए थे, उनकी कभी राजा तक खबर नहीं पहुंचने दी। राजा निर्दोष है।"

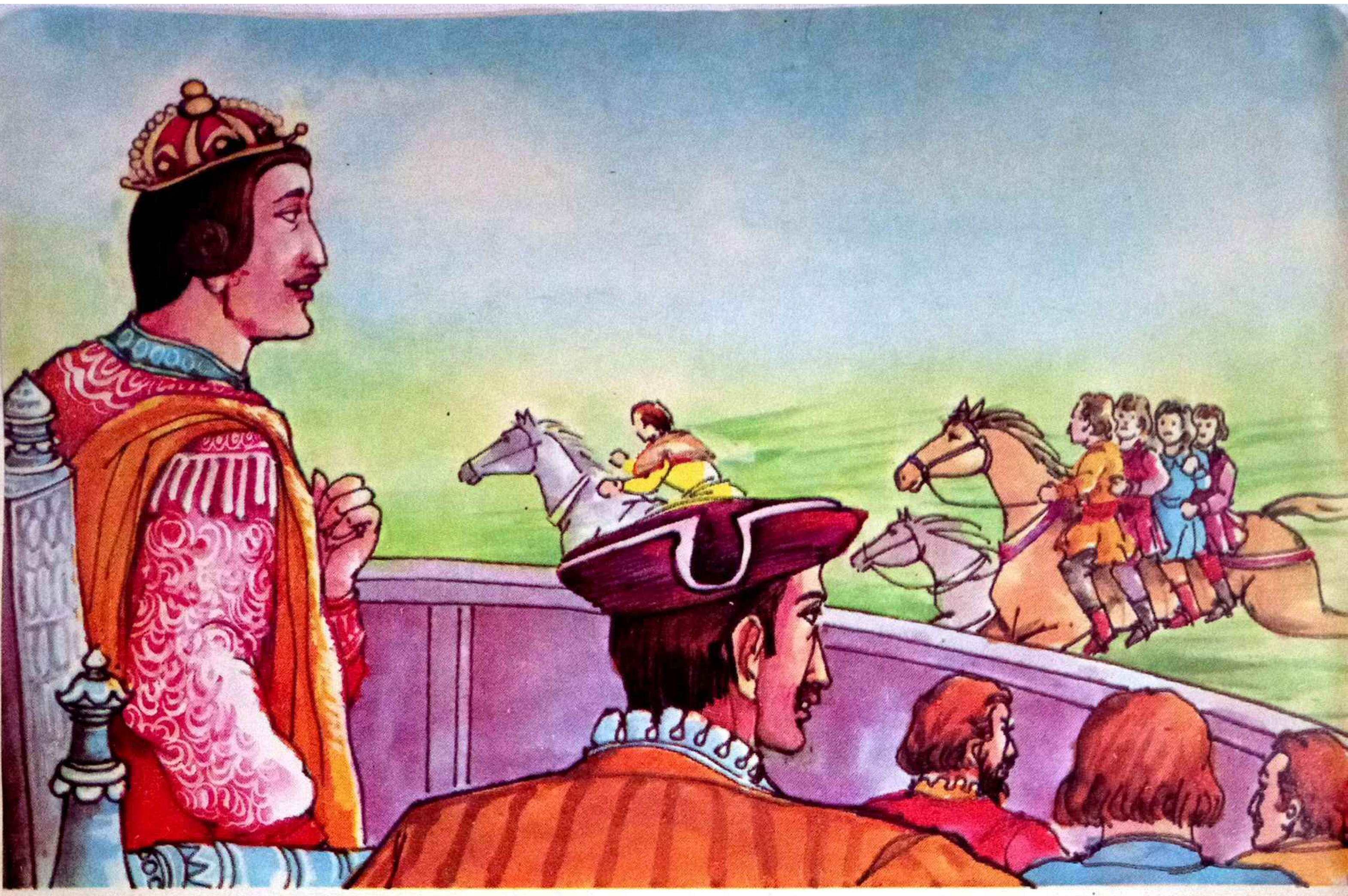
नागराज ने मंत्री तथा सेनापति को सम्बोधित करते हुए कहा—"प्रजा के सामने अपना अपराध स्वीकार करो, अन्यथा एक भी जीवित न बचेगा।"

नाग के मुंह से आदमी की आवाज सुनकर सारी प्रजा अचम्भे में पड़ गई। मंत्री और सेनापति ने अपना अपराध तुरंत स्वीकार कर लिया। राजा अब अपने वास्तविक रूप में आ गया था। उसने तुरंत उन्हें जेल में डलवा दिया।

राजा फिर अपनी गद्दी पर बैठा। प्रजा उसका जय-जयकार करने लगी। नागराज ने भी प्रसन्नतापूर्वक विदा ली। ●



नंदन एलबम : ८४
भगवान
बालाजी
तिरुपति



चार बेटों की गली

—जयप्रकाश भारती

एल्बी कस्बे में बहादुर आइमोन रहता था। उसने सम्राट चार्ल्स के साथ अनेक लड़ाइयों में बड़ी वीरता दिखाई थी। पर सम्राट ने उसकी बहुत कद्र नहीं की। इसीलिए अब आइमोन किसी तरह अपने दिन काट रहा था।

आइमोन के चार बेटे थे। सबसे बड़ा रिनार्ड अपने पिता की तरह ही वीर था। आइमोन को विश्वास था कि एक न एक दिन उसे 'नाइट' का खिताब अवश्य मिलेगा। गुइखार्ड दूसरा बेटा था। चित्रकार ऐसा कि उसके बनाए चित्रों को लोग देखते ही रह जाएं। तीसरा बेटा गा-बजाकर लोगों का दिल जीत लेता था। नाम था उसका अलार्ड। आइमोन का सबसे छोटा बेटा था रिचार्ड। वह चारों भाइयों में सबसे अधिक चतुर था।

आइमोन ने कई बार सोचा कि उसके बेटे पेरिस जाएं। वहां वे दरबार में जाकर सम्राट से मिलें। निश्चय ही उन्हें अच्छी नौकरियां मिल जाएंगी।

लेकिन पेरिस जाएं तो कैसे जाएं। उनके पास एक घोड़ा तक तो था नहीं। बूढ़े आइमोन के पास इतना धन भी नहीं था कि कोई मरियल-सा घोड़ा ही खरीद ले। और किसी के आगे हाथ फैलाना आइमोन को गवारा नहीं था।

दिन बीतते रहे। आइमोन को बेटों की चिंता सताती रही। पर कोई भी ऐसा न था कि उसे सही रास्ता सुझाए।

एक दिन आइमोन का साला मालगिस एल्बी आया। मालगिस भी अपनी तरह का एक ही था। बड़ी-बड़ी उलझनों को वह चुटकी बजाते सुलझा दिया करता। कई बार लोग समझते कि मालगिस तो जादूगर है जादूगर।

चारों भांजों ने मालगिस को घेर लिया। लगे अपनी-अपनी कहने। पेरिस जाना चाहते हैं पर घोड़ा है नहीं। मामा मालगिस बोले—"भई, दुनिया में ऐसी कौन-सी उलझन है, जो सुलझ नहीं सकती। पर मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं। बढ़िया-सा कुछ खाने-पीने को दो, तो शायद कोई तरकीब दिमाग में आ जाए।"

चारों भाई मामा मालगिस की खातिर में जुट गए। खा-पीकर मालगिस ने कहा—"खाना खाते समय मैं तुम्हारी समस्या सुलझाने के बारे में ही सोच रहा था। मैंने सोच लिया है कि क्या करना है।"

"क्या करना है मामा?" —चारों ने एक स्वर में कहा।

"सबसे पहले गुइखार्ड को एक घोड़े का चित्र बनाना है।" —मालगिस ने कहा।

—"फिर क्या होगा?"

"जो होगा, उसे हम सब देखेंगे। चुपचाप वह करो, जो मैं बता रहा हूं।" —मालगिस ने गम्भीर स्वर में कहा।

गुइखार्ड चुपचाप आंगन की ऊंची दीवार पर एक घोड़े का चित्र बनाने लगा। रात हो गई, वह काम करता रहा। तीनों भाई और मालगिस पास खड़े देखते रहे। बीच-बीच में मालगिस कहता— "ऊंचा और तगड़ा घोड़ा बनाओ। ऐसा कि देखने वाले देखते रह जाएं।"

आखिर घोड़े का चित्र पूरा हो गया। तब तक दिन ही निकल आया। एक किरण घोड़े के चित्र से टकराई और जैसे चमत्कार हो गया। दीवार पर बना घोड़ा हिलने-डुलने लगा। फिर देखते-देखते वह दीवार से उतर, नीचे आ गया और जोर से हिनहिना उठा।

चारों भाई मालगिस से लिपट गए। —"मामा, यह घोड़ा कहां से आया?"

"यह परी ओरला की ओर से भेंट है तुम लोगों के लिए। ओरला मेरी मित्र है। मैंने उससे प्रार्थना की। उसने घोड़े के चित्र में प्राण डाल दिए। वह अच्छी परी है। दुखी लोगों की मदद करती है।" —मालगिस ने हंसते हुए बताया और विदा लेकर चलने लगा।

आइमोन तथा उसके चारों बेटों ने मालगिस को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। मालगिस अपने घोड़े पर बैठकर चलने लगा, तो उसने कहा— "इस घोड़े का ध्यान रखना। ऐसा घोड़ा पूरे देश में कहीं किसी के पास नहीं है। इसे दूसरे को कभी मत देना। और हां, अगर कभी किसी गहरे संकट में फंस जाओ, तो परी ओरला को याद करना। वह अवश्य मदद करेगी। लेकिन तुम्हें उसकी मदद बस एक ही बार मिलेगी।"

घोड़े का उपहार पाकर चारों भाई प्रसन्न थे। उन्होंने घोड़े को घर में रखा सुंदर साज पहना दिया। फिर चारों ही उसकी पीठ पर बैठ गए। घोड़ा हवा से बातें करने लगा। एल्बी में जिसने देखा, वही हैरान! ऐसा घोड़ा किसी ने नहीं देखा था, जो चार सवारों को लेकर इस तरह दौड़ता हो। फिर तो वह विचित्र घोड़ा अक्सर कस्बे की सड़कों पर, तो कभी वनों में दौड़ता दिखाई देने लगा।

रात होती, तो घोड़े के साथ चारों भाई अस्तबल में ही सोते। वे उसे एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ते थे।

ऐसी खबरें जल्दी फैलती हैं। अद्भुत घोड़े का समाचार राजा चार्ल्स ने सुना। वह भी घोड़े को देखने के लिए उत्सुक हो उठा। गनेलान उसका मुंहलगा दरबारी था। गनेलान ने कहा—"हुजूर, ऐसे घोड़े को तो शाही अस्तबल में होना चाहिए।"

चार्ल्स को गनेलान की बात ठीक लगी। उसने तुरंत संदेश भेज दिया। राजा का संदेश पाकर बूढ़ा आइमोन प्रसन्न हो उठा। सबसे कहता फिरा कि राजा का निमंत्रण आया है। पर रिचर्ड खुश नहीं था। उसने कहा—"चार्ल्स तक घोड़े की खबर पहुंच गई है। वह घोड़ा हमसे लेना चाहता है, इसीलिए बुलाया है। हमें नहीं जाना चाहिए।"



आइमोन ने कहा—"बेटा, तुम्हारी बात ठीक भी हो सकती है, पर राजा का आदेश तो मानना ही होगा। तुम चारों जाओ। सावधान रहना। ज़ैसी स्थिति देखो, वैसा करना। मैं तुम्हें और क्या बताऊं?"

एक सुबह चारों भाई घोड़े पर बैठकर चल दिए। रास्ते में लोग कहते—"अरे, एक घोड़े पर चार सवार!"यह दृश्य सबको हैरानी से भर देता। घोड़ा चारों भाइयों को लिए हुए पेरिस जा पहुंचा। लम्बा सफर और भारी बोझ के बाद भी वह जरा नहीं थका था।

लेकिन राजमहल पहुंचने से पहले रिचर्ड की सलाह पर सबने मिलकर घोड़े के शरीर पर मिट्टी पोत दी। कालिख लगा दी, ताकि उसका रूप छिप जाए। वह एक साधारण-सा घोड़ा दिखाई दे।

चार्ल्स ने घोड़े को देखा, तो उसका मुंह निराशा से लटक गया। उसने गनेलान से कहा—"तुम इसी टट्टू की प्रशंसा कर रहे थे?"

गनेलान समझ गया कि घोड़े को जानबूझकर बुरा दिखाने के लिए ऐसा किया गया है। उसने कहा—"महाराज, मेरा अनुमान गलत नहीं है। समय आने पर सच बात सामने आ जाएगी।"

उन्हीं दिनों पेरिस में घुड़दौड़ होने वाली थी। उसमें भाग लेने के लिए दूर-दूर से सैकड़ों घोड़े आए थे। चारों भाई राजा के आदेश पर अपने घोड़े को भी मैदान में ले गए। रिचर्ड ने उनसे कहा—"ध्यान रहे, हमारा घोड़ा जीतने न पाए। इसे हारना ही चाहिए, ताकि राजा चार्ल्स इसे छीन न पाए।"

घुड़दौड़ शुरू हुई। चारों भाइयों को लिए हुए घोड़ा धीरे-धीरे चल दिया। उसे देखकर दर्शक हंसी उड़ाने लगे, उन पर ताने कसने लगे। बाकी घोड़े बहुत आगे निकल गए थे। आखिर सबसे बड़े भाई रिनाड से नहीं रहा गया। उसने घोड़े को एड़ लगाते हुए कहा—"तेजी से दौड़ो।"

बस, फिर क्या था। घोड़ा तूफान की तरह भाग चला। देखते-देखते उसने बाकी घोड़ों को हराकर, दौड़ जीत ली। राजा चार्ल्स यह देखकर खुश हो गया। पर रिचर्ड दुखी स्वर में अपने भाइयों से बोला—"यह ठीक नहीं हुआ। चार्ल्स घोड़े को छीने, इससे पहले ही हमें यहां से छूमंतर हो जाना चाहिए।"

राजा चार्ल्स ने उनसे कहा—"यह घोड़ा हमारे अस्तबल में रहेगा।"

उसके इतना कहते ही चारों भाइयों ने घोड़े को दौड़ा दिया। यह देख, राजा आग-बबूला हो गया। उसने अपने घुड़सवारों से उन्हें रोकने को कहा। घुड़सवार पीछा करने लगे, लेकिन भला उस जादुई घोड़े को वे कैसे पकड़ सकते थे? चारों भाइयों को लिए-लिए जादुई घोड़ा सरपट दौड़ा जा रहा था।

लेकिन एक गड़बड़ थी। आइमोन के बेटों को पेरिस की सड़कों के बारे में ठीक-ठीक पता नहीं था। इसलिए वे एक से दूसरी सड़क पर भटक रहे थे। कुछ देर बाद वे एक ऐसी गली में चले गए, जो आगे बंद थी। गली बंद देखकर भाइयों ने घोड़े को मोड़ा, तो सामने से हथियारबंद सैनिक आते दिखाई दिए।

रिचर्ड ने कहा—"हम घिर गए। अब नहीं बच सकते।" वे दीवार के पास जा खड़े हुए। सैनिक चिल्लाते हुए बढ़े जा रहे थे। तभी रिचर्ड के मुंह से निकला—"ओरला, हमारी मदद करो।"

चमत्कार हुआ। सैनिकों ने देखा, घोड़े समेत चारों भाई गायब हो गए और दीवार पर उनका एक हूबहू चित्र उभर आया। यह करामात देखकर सैनिक डर गए। चीखते हुए भाग खड़े हुए। वे "भूत! भूत!" चिल्ला रहे थे।

उधर जादुई घोड़ा चारों भाइयों को लिए हुए शहर से बाहर की तरफ दौड़ा जा रहा था। अब उसे कोई नहीं रोक सकता था।

उसके बाद एल्बी वालों ने आइमोन और उसके चारों बेटों को कभी नहीं देखा। कहते हैं, जादुई घोड़ा उन्हें पहाड़ों के पार अद्‌भुत देश में ले गया। वे वहां सुख से रहने लगे।

पैरिस में एक गली को आज भी चार बेटों की गली कहा जाता है। यह नाम उन्हीं चार भाइयों और उनके जादुई घोड़े के कारण पड़ा है। •

जगमग माला

—सरला टंडन

किसी नगर में किशनचंद नामक एक सेठ रहते थे। उन पर लक्ष्मीजी की अपार कृपा थी। व्यापार दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक्की कर रहा था। किशनचंद अत्यंत दयालु थे। पूरे नगर में उनका सम्मान था।

किशनचंद के दो छोटे भाई थे—पूरनचंद और लक्ष्मीचंद। तीनों भाइयों के स्वभाव में अंतर था। पूरनचंद बहुत धार्मिक प्रवृति का व्यक्ति था। हर समय साधु-महात्माओं के साथ लगा रहता था। सबसे छोटा भाई लक्ष्मीचंद राग-रंग में तल्लीन रहता था।

व्यापार का सारा भार किशनचंद ही संभाल रहे थे। दोनों छोटे भाई व्यापार में कोई रुचि नहीं लेते थे। उन्हें तो बस अपने खर्चे से मतलब था। किशनचंद स्नेह के वशीभूत उनसे कुछ कह नहीं पाते थे। इसी प्रकार पूरा परिवार सुख-चैन से रह रहा था।

किशनचंद सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। पत्नी पार्वती अक्सर उनसे कहती—"आप अपने भाइयों से कुछ कहते क्यों नहीं हैं? अब उन्हें व्यापार में हाथ बंटाना चाहिए। यों ही घूमते रहते हैं दोनों। आप अकेले कब तक इतना बोझ उठाएंगे?"

किशनचंद हंसकर उत्तर देते—"मेरी छत्र छाया में मौज कर लेने दो। वक्त आएगा, तो सब ठीक हो जाएगा।"

पार्वती उदास स्वर में कहती—"हमारे कोई बेटा भी तो नहीं है, जो हमारे बुढ़ापे में सहायता कर सके। बेटी अलका अभी छोटी है। फिर वह पराए घर की अमानत है। उस पर हमारा क्या अधिकार है। आपका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है।"

—"अरे चिंता क्यों करती हो भागवान! हमारे बेटा नहीं है, तो क्या हुआ? मुनीम जी का बेटा हरीश तो है। वह बहुत होशियार है। शहर से बहुत पढ़-लिखकर आया है। वह हमारा व्यापार अच्छी तरह संभाल रहा है। मुनीम जी हमारे पुरखों के जमाने से हमारे साथ हैं। अब उनका बेटा सेवा करेगा। वह मुझे बहुत अच्छी सलाह दे रहा है। कहता है, कपड़े की मिल खोल लो। मेरा इरादा है, उसकी बात मान लूं।"

पार्वती ने चेतावनी देते हुए कहा—"मिल के चक्कर में मत पड़ो। आढ़त का काम ही काफी है तुम्हारे लिए। मेरी सलाह मानो, तो हरीश की बातों में मत आओ। मुझे तो वह बहुत चालाक लगता है।"

लेकिन किशनचंद पर तो मानो हरीश ने जादू कर रखा था। उन्होंने मिल का काम शुरू करा दिया। वह हरीश के ऊपर अटूट विश्वास करते गए और हरीश मिल में रुपए लगाता रहा। यहां तक कि लोगों से उधार भी करना पड़ा। किशनचंद की समाज में साख थी, इसलिए उधार लेने में कोई कठिनाई नहीं हुई। किशनचंद की कई हवेलियां थीं, बाग-बगीचे थे। इसी बल पर रुपया मिलता गया और वह कपड़े की मिल में खपता गया।

इधर पूरनचंद साधु-संतों में इतना तल्लीन हो गया कि वैरागी बनकर पहाड़ों पर चला गया। छोटा भाई लक्ष्मीचंद अपने हिस्से का बंटवारा करके दूसरे शहर में जा बसा। किशनचंद कपड़े की मिल खोलने के उत्साह में सब कुछ भूल गए थे। लोगों ने किशनचंद को आगाह भी किया—"हरीश अपनी जायदाद खरीद रहा है। वह मालामाल हो रहा है। ठाठ-बाट



से रहता है।" परंतु सेठ जी की आंखों पर मानो पर्दा पड़ गया था। सोचने-समझने की शक्ति लुप्त हो गई थी। हरीश की धोखाधड़ी उन्हें दिखाई नहीं दे रही थी।

धीरे-धीरे सब कुछ बदलता गया। हरीश ने किशनचंद के विश्वास का फायदा उठाया। मुनीम जी की मृत्यु हो गई थी, इसलिए अब हरीश को अपने पिता का भी डर नहीं था। रुपयों के लालच में वह पुरानी वफादारी को ताक पर रख चुका था। कपड़े की मिल का संचालन उसने ठीक से नहीं किया। घाटा होता चला गया। किशनचंद का बाल-बाल उधार में बिंध गया था।

पार्वती बहुत ही समझदार थी। उसका जी कुढ़ता था कि मना करने के बावजूद सेठ जी हरीश पर विश्वास करते रहे। एक समय ऐसा आया कि सेठ जी दीवालिया घोषित हो गए। रुपया उधार देने वाले वसूली के लिए आने लगे। पार्वती स्वयं भी रईस खानदान से सम्बंध रखती थी। उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी, लेकिन भाई नवीनकुमार पार्वती का मान-सम्मान करता था। पार्वती ने किशनचंद से कहा—"अब तो नौबत हवेली के बिकने की आ चुकी है। तुम मेरे भाई से इसके बारे में बात कर लो। वह जरूर मदद करेगा।"

किशनचंद ने पीड़ित स्वर में कहा—"मैं अपने ससुराल वालों से दया की भीख नहीं चाहता। मेरे कर्मों के फल जैसे भी हैं, मैं ही भोगूंगा।"

पार्वती ने दिलासा दिया—"भीख की बात नहीं है। मेरा सुझाव है कि नवीन से रसीदी कागज पर लिखवा लो कि इस हवेली का रुपया उसने दिया था, अतः यह जायदाद उसकी है। इस तरह यह हवेली कर्जदारों के पास जाने से बच जाएगी। जब परिस्थितियां ठीक हो जाएंगी, तो हवेली हम वापस ले लेंगे।"

"ठीक है, जैसा तुम चाहो। यह भी करके देख लेते हैं।" —किशनसिंह ने बेबसी से कहा। पार्वती ने अपने भाई को बुलाकर उससे रसीदी कागज पर लिखवा लिया। लेकिन उसने एक अक्लमंदी की। वह बोली—"भैया, एक कागज लिखकर मुझे दे दो कि यह हवेली कर्ज चुकाने तक आपकी है। असली हकदार हम ही हैं। क्या पता आपके बेटे के दिल में बाद में कभी खोट आ जाए और हमारा यह आश्रय भी खत्म हो जाए।"

नवीन ने कहा—"बहन, ऐसा क्यों सोचती हो? मेरे जीते जी यह सम्भव नहीं है। लेकिन फिर भी मैं तसल्ली के लिए लिख देता हूं। इस कागज को संभाल कर रखना।" पार्वती ने वह कागज संभाल कर रख लिया।

पार्वती को चित्रकला का बेहद शौक था। वह इन दिनों रात-रात भर बैठी कृष्ण भगवान का चित्र मखमल के कपड़े पर बनाती रहती थी। किशनचंद कहते भी—"भई कमाल है तुम्हारे संयम का। ऐसी हालत में भी संतुलन बनाए हुए चित्रकारी में मग्न रहती हो।" पार्वती मुसकरा देती। घर का सारा सामान-बाग-बगीचे, हवेलियां, आदि कर्जदारों ने वसूली में ले लिया था। जिस हवेली में रह रहे थे, वह भाई नवीन के पास चली गई थी। एक छोटे-से किराए के मकान में सेठ किशनचंद अपनी पत्नी व बेटी अलका के साथ रहने लगे थे। पार्वती अपने बनाए चित्र साथ ले आई थी।

अलका पढ़ने में बहुत होशियार थी। कक्षा में हमेशा प्रथम आती थी। अब वह बड़ी हो गई थी। देखने में भी अत्यंत सुंदर थी। उसके स्कूल के हैडमास्टर सत्यप्रकाश उसे बहुत प्यार करते थे। उनके एक बेटा था अरुण। वह भी बहुत होनहार था। सत्यप्रकाश एक दिन अलका के घर गए। उसकी मां से बोले—"बहन जी, आपकी बेटी हमें बहुत पसंद है। क्या आप इसे हमारे घर की लक्ष्मी बनाएंगी? मेरा बेटा डाक्टर है। मेरा अनुरोध है, आप इस शुभ कार्य के लिए मना न करें।" इन दिनों सेठ किशनचंद रोग शय्या पर थे। शारीरिक और मानसिक आघात से जर्जर हो गए थे।

पार्वती ने कहा—"यह हमारा सौभाग्य है। परंतु

मास्टर साहब, आपसे हमारी स्थिति छिपी नहीं है । बस, यही बेटी है, हमारे पास देने के लिए ।''

सत्यप्रकाश ने कहा—''यह अलका तो हीरा है, जो आप हमें दे रही हैं । हमें और कुछ नहीं चाहिए ।''

विवाह सम्पन्न हो गया । चलते समय पार्वती ने अपनी बनाई कृष्ण की तस्वीर देते हुए कहा—'बेटी, मेरे पास यही दौलत है । शायद इसी से तुम मालामाल हो जाओ । यह रामायण भी रख लेना । रोज पाठ करना ।''

अलका ससुराल आ गई । कृष्णजी का चित्र कमरे में लगा दिया । वह घंटों उसे निहारा करती । एक दिन चांदनी रात थी । बादलों से पूर्णिमा का चांद झांक रहा था । एक दीपक भगवान की तस्वीर के पास टिमटिमा रहा था । तभी अलका को लगा मानो तस्वीर के कृष्ण की माला जगमगा रही है । एक अपूर्व ज्योति छिटक रही है मुकुट और माला में से ।

उसने तुरंत अपने पति से कहा—''देखो तो, यह माला और मुकुट कैसे जगमग कर रहे हैं, मानो सचमुच के हीरे हों ।'' पति ने भी गौर से देखा और बोला—''हां, सचमुच यह चित्र तो चमक रहा है । बात क्या है ?''

दोनों ने चित्र को रगड़कर देखा । मोती और उसमें लगे नगों के ऊपर से कुछ रंग छूटा । अब तो वे और भी चमचमाने लगे । अरुण ने एक दो नग निकाले और अगले दिन जौहरी को दिखाया । जौहरी ने कहा—''ये तो बड़े कीमती हैं ।''

वह खुशी से उछलता हुआ घर आया । अलका से बोला—''कमाल की बात है । इतने सारे हीरे-मोती इस चित्र में जड़े हुए हैं । यह कैसे संभव हुआ ? क्या तुम्हारी मां को नहीं पता था ?''

अलका बोली—''मेरी मां ने हीं तो यह चित्र बनाया था । मैं जब छोटी थी, तो देखती थी वह रात-रात भर इसे बनाती रहती थीं । मैं पास जाती, तो मुझे मना कर देतीं । कहती थीं —'तुम जाओ ।' मुझे जिज्ञासा होती थी, पर उन्होंने कभी पास नहीं आने दिया । चलो, अब चलकर मां से पूछते हैं, इसका रहस्य क्या था ?''

अलका और उसका पति मां के पास गए । तब मां ने हंसकर बताया—''बेटी, ये हीरे-मोती तुम्हारे लिए ही मैंने इस चित्र में छिपाकर रखे थे । बात यह थी कि घर का सारा सामान बिक रहा था । कृष्ण भगवान का चित्र पूजा के सामान के साथ मैंने बचाकर रख लिया । किसी को शक न हो, इसलिए हीरे-मोतियों पर मैंने कूची से रंग कर दिया था । मैं तुम्हारे विवाह पर भी यह भेद नहीं खोलना चाहती थी । मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी कि तुममें कितनी खोज करने की शक्ति है । याद है, मैंने तुमसे कहा था—'भगवान तुम्हें मालामाल कर देंगे ।' अभी तो एक आश्चर्य और छिपा है, जो तुम्हारे काम का होगा ।''

''वह क्या है मां ?''—हैरानी से अलका ने पूछा । ''जरा अपनी रामायण के ऊपर के गत्ते को खोलकर देखना । उसमें तुम्हारे मामा जी का लिखा मकान का कागज है । तुम्हारे ममेरे भाई ने हमारी हवेली पर कब्जा कर लिया था । तुम्हारे मामा जी की मृत्यु के बाद उसकी नीयत बदल गई थी । तब न तो मौका था दावा करने का और न हमारे पास इतने रुपए थे, जो अदालत का द्वार खटखटाते । तुम्हारे पिता जी रोगशय्या पर थे, इसलिए कुछ करने की इच्छा भी नहीं थी । हमने तो अपनी जिंदगी गुजार ही दी । अब तुम लोग ही हवेली के लिए मुकदमा लड़ सकते हो । ये हीरे-मोती तुम्हारे काम आएंगे ।''

सेठ किशनचंद ये सब बातें बड़े गौर से सुन रहे थे । वह प्रसन्नता से बोले—''शाबास है पार्वती तुम को । इतने बड़े भेद इतने दिन तक छिपा रखे थे, जो मुझे भी नहीं बताए । धन्य है तुम्हारी शक्ति और सूझ-बूझ !''

अरुण ने मामा जी के बेटे पर मुकदमा कर दिया । अंत में विजय हासिल हुई । सत्यप्रकाश ने बहुत ही विनयपूर्वक कहा—''सेठ जी, इस हवेली में रहने का आपका हक बनता है । आप चलकर इसे गुलजार कीजिए ।'' सेठ किशनचंद और पार्वती फिर से उस हवेली में सुख से रहने लगे । ●

मेरी छत

—अंशुकुमार गुप्ता

काफी समय पहले की बात है। चीन के शान प्रांत में हून सा नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति रहता था। हून सा के साथ उसकी पत्नी, दो बेटे और दो बेटियां भी रहा करते थे।

हून सा और उसके बेटे रोज जंगल से लकड़ी काटकर लाते, उसे अच्छे दामों पर बेचते थे। रोज का खर्च चलने के बाद भी अच्छी बचत हो जाती थी। हून सा बचत के पैसों से अपना मकान बनाने का सपना देखा करता था, लेकिन मकान लायक रकम जमा ही नहीं हुई थी। एक दिन हून सा ने निर्णय कर लिया कि अब वह अपना मकान बनाकर ही रहेगा, चाहे इसके लिए उसे कर्ज ही क्यों न लेना पड़े।

देखते ही देखते मकान का काम शुरू हो गया। पहली मंजिल बन गई, पर दूसरी आधी ही बनी थी कि सारी जमा पूंजी समाप्त हो गई। हून सा नगर सेठ के पास पहुंचा। उससे दो हजार सिक्कों की मांग की। सेठ हून सा को अच्छी तरह जानता था। सेठ ने उसे इस शर्त पर ऋण दे दिया कि दो वर्ष बाद इक्कीस सौ सिक्के लौटाएगा। हून सा ने ऋण की रकम से अपना मकान पूरा किया और शान से रहने लगा। मकान बहुत ही अच्छा बना था, पर हून सा को चैन नहीं था। वह अब और अधिक मेहनत करने लगा था, ताकि सेठ की रकम जल्दी से जल्दी लौटा सके।

एक दिन अचानक सुबह-सुबह उसके दरवाजे पर खट-खट हुई। वह बाहर निकला, तो सकते में आ गया। नगर सेठ अपने सेवकों के साथ बाहर खड़ा था। उसने झुककर उसे सलाम किया। सेठ ने हून सा की पीठ ठोंकी और बोला—''मान गए भई। तुम होशियार आदमी हो। बहुत ही शानदार मकान बनाया है तुमने।''

हून सा बीच में ही बोला—''सब आपकी कृपा है मालिक। आपने पैसा न दिया होता, तो यह मकान अधूरा ही रह जाता।''

सेठ बोला—''पैसा। कौन-सा पैसा...? अच्छा, वे दो हजार सिक्के! वाह भई, क्या खूब याद दिलाई है! मैं तो आजकल बहुत ही तंगी में हूं। चलो, अब ये सिक्के मेरे काम आएंगे।''

हून सा चौंककर बोला—''पर मालिक अभी तो मकान बना ही नहीं है। रकम दो साल बाद चुकानी है। मेरे पास तो इस समय दो सिक्के भी नहीं हैं। भला दो हजार सिक्के कहां से चुकाऊंगा?''

सेठ हंसा—''भई, यह तुम्हारी अपनी समस्या है, मुझे तो सिक्के चाहिएं, नहीं दे सकते तो साफ बताओ। उनके बदले में मकान की दूसरी मंजिल से भी काम चला लूंगा।''

हून सा गिड़गिड़ाकर बोला—''मालिक, ऐसा मत कीजिए, मेरे मकान का हिस्सा मुझसे मत छीनिए। मैं दो वर्ष बाद आपकी रकम जरूर लौटा दूंगा।''

पर सेठ नहीं माना, वह अपनी बात पर अड़ा रहा। हारकर हून सा बोला—''तो ठीक है मालिक, आप आ जाइए दूसरी मंजिल में। मैं आज ही अपना सामान वहां से हटा लूंगा।''

सेठ खुश होकर वहां से चला गया। हून सा ने उसी दिन अपना सामान वहां से हटा लिया। सेठ ने अगले ही दिन मकान पर कब्जा कर लिया। बेचारा हून सा मन मारकर रह गया। धीरे-धीरे एक महीना गुजर गया। ऊपर सेठ के बच्चे खूब धमा-चौकड़ी मचाते। हून सा ने कई बार टोका, पर उन्होंने एक न सुनी। हून सा उनसे छुटकारा पाने की तरकीबें सोचने लगा।

एक दिन अचानक उसने गैंती उठाई। एक सीढ़ी लगाई और छत तोड़ने लगा।

सेठ ने अपने मकान की जमीन हिलती देखी, तो बुरी तरह कांप गया। उसने देखा कि एक कमरे की जमीन पर सूराख होता जा रहा है। उसमें से बार-बार गैंती का फाल ऊपर आ रहा है।

सेठ जोर से चीखा—''अरे, हून सा, यह क्या कर रहा है? मेरा मकान क्यों तोड़ रहा है?''

हून सा ने धीरे से जवाब दिया—"आपका मकान कहां तोड़ रहा हूं सेठ ?"

सेठ चीखा—"अरे तू बेअक्ल है क्या ? छेद मेरे मकान में हो रहा है , तू कहता है कि तू अपना मकान तोड़ रहा है ।"

हून सा बोला—"सच है सेठ । छेद मेरे मकान में हो रहा है, इसलिए मकान मेरा टूट रहा है ।"

सेठ झल्ला गया । खीजता हुआ बोला—"तेरा मतलब क्या है ?"

हून सा ने हंसते हुए जवाब दिया—"मतलब क्या होगा, मुझे अपनी छत की बनावट पसंद नहीं आ रही थी । मैंने सोचा,क्यों न इसे बदल दिया जाए । इसलिए छत तोड़नी शुरू कर दी है । अब यदि इससे आपको नुकसान पहुंच रहा है, तो मैं क्या कर सकता हूं ? यह तो कुदरत का खेल है । मैं तो इसीलिए आप से कह रहा था कि ऊपर के मकान में मत आइए । आप नहीं माने । अब छत तो मुझे बदलनी ही है । आप चाहें, तो अब भी मकान छोड़ सकते हैं ।"

सेठ बोला—"क्या बक-बक कर रहे हो ? यदि मैंने मकान छोड़ दिया,तो उन इक्कीस सौ सिक्कों का क्या होगा, जो तुम मुझे दो वर्ष बाद दोगे ।"

हून सा नरमी से बोला—"मालिक, उनके लिए मैंने कब इंकार किया है ? मैं तो कल भी देने के लिए तैयार था और आज भी हूं । आप से वादा करता हूं कि दो साल बाद आपकी रकम आपको मिल जाएगी । मगर अब आपको इक्कीस सौ सिक्के नहीं मिलेंगे ।"

सेठ चौंका—"क्या मतलब ? इक्कीस सौ क्यों नहीं मिलेंगे ?"

हून सा ने जवाब दिया—"अब सिर्फ दो हजार मिलेंगे । सौ सिक्के एक महीने के किराए के कम हो गए । अब भी यदि आप रहना चाहें, तो शौक से रहिए । सौ सिक्के हर माह मैं किराए के रूप में लूंगा ।"

सेठ ने काफी सोच-विचार किया । फिर किराए पर रहने में,बेइज्जती के डर से मकान छोड़ने में ही अपनी भलाई समझी । ●

हार गया राजा

—रश्मि बिंदल

"राजन, आपने देखा हमारा नया इंद्रधनुषी भवन ? जरा गौर से देखिए, इसके अंदर सारी सजावट सोने-चांदी व हीरे-मोती की है ।" राजा विक्रम ने गर्व से राजा भानुप्रताप को बताते हुए कहा—"इसके बाद मैं आपको अपना मनोरंजन गृह दिखाऊंगा । ऐसा अद्‌भुत कि स्वप्न में भी कल्पना नहीं की जा सके ।"

राजा भानुप्रताप चुपचाप सब कुछ देख-सुन रहे थे । वह अपने मित्र राजा विक्रम के राज्य में कुछ दिन भ्रमण के लिए आए थे । राजा विक्रम ने दिल खोलकर अतिथि का स्वागत किया था । अपने मित्र की छोटी से छोटी इच्छा का भी ध्यान रखा था ।

यह सब होने पर भी राजा भानुप्रताप के मन में एक कांटा खटक रहा था । उन्हें बार-बार लग रहा था, जैसे राजा विक्रम बातों ही बातों में उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे हों । उनके व्यवहार में अहंकार की गंध आ रही थी ।

"आओ, मित्र ! अब भोजन का समय हो रहा है ।"—कहते हुए विक्रम उन्हें भोजन कक्ष में ले गए । दोनों राजा भोजन करने बैठे । तरह-तरह के पकवान परोसे गए । हर पकवान की राजा विक्रम ने बढ़-चढ़कर प्रशंसा की । यहां तक कि पीने के पानी के भी उन्होंने तारीफ के पुल बांध दिए—"गंगाजल में चालीस दिन तक सच्चे मोती भिगोकर रखे, तब कहीं जाकर ऐसा पानी तैयार हुआ । पीकर देखिए, कितना स्वादिष्ट है ।"

चुपचाप सुनने के अतिरिक्त राजा भानुप्रताप के पास और कोई चारा न था । लेकिन तब तो हद हो गई, जब चावल पेश किए गए । शेखी बघारते हुए राजा विक्रम एक बार फिर कह रहे थे—"विशेष विधि द्वारा उगाए गए हैं ये चावल । जरा इनकी सुगंध तो देखिए—पकते हैं, तो दूर-दूर तक फैल जाती है। और इस नजाकत से पकाए गए हैं कि एक-एक दाना अलग ।"



अपने मित्र के मुंह से यह सब सुनते-सुनते राजा भानुप्रताप के कान जैसे पक चले थे। चावल उनकी थाली में परोसे गए, तो बोल पड़े—"चावल के दाने बिल्कुल अलग-अलग तो हैं नहीं। कुछ-कुछ एक-दूसरे से चिपके हुए हैं।"

यह बात राजा विक्रम को अच्छी नहीं लगी। कुछ तेज स्वर में बोले—"इससे ज्यादा खिले हुए चावल बन ही नहीं सकते।"

अपने मित्र को यूं भड़कते देख, राजा भानुप्रताप को कुछ शांति मिली। बोले—"बन क्यों नहीं सकते ? हमारे राज्य में तो लोग ऐसे चावल बना सकते हैं कि एक भी दाना दूसरे से न छुए।"

—"यह तो हो ही नहीं सकता !"

"हमारे राज्य में तो होता है।"—राजा भानुप्रताप ने तपाक से उत्तर दिया।

"आप भी कैसी अनहोनी बातें कर रहे हैं। यदि आप ऐसे चावल दिखा दें, उबलने के बाद जिनका एक भी दाना किसी दूसरे दाने से न छुए, तो मैं आपको अपना आधा राज्य दे दूंगा।"—राजा विक्रम ने चुनौती दी।

"ठीक है।"—राजा भानुप्रताप भी उसी स्वर में बोले—"यदि यह न हुआ, तो मैं आपको अपना आधा राज्य दे दूंगा।"

—"तो रही शर्त !"

—"हां, रही शर्त। आज से ठीक तीस दिन बाद आप मेरे राज्य में पधारें। भोजन के समय ही इस बात का फैसला हो जाएगा।"

राजा भानुप्रताप अपने राज्य में लौट आए। शांति से सोचने पर उन्हें लगा कि उन्हें इस तरह उत्तेजित नहीं होना चाहिए था। ऐसे चावल तो बन ही नहीं सकते कि एक भी दाना दूसरे दाने को छुए तक नहीं। उन्हें यही चिंता खाए जा रही थी—'तीस दिन बाद मुझे अपने राज्य का आधा हिस्सा विक्रम को देना पड़ जाएगा। इस हार से अपमान होगा, सो अलग।'

कुछ दिन तो राजा भानुप्रताप इसी उधेड़-बुन में लगे रहे। जब कोई उपाय न सूझा, तो अपने विश्वासपात्र महामंत्री मानसिंह को बुलाया। सारी बात बताई। सुनकर मानसिंह भी सोच में पड़ गए। फिर बोले—"इस समस्या का कोई हल तो निकालना ही पड़ेगा। राजन, आप सब चिंता मुझ पर छोड़ दें।"

मानसिंह ने अगले दिन महल के सभी रसोइयों को बुलाया। पूछा—"क्या ऐसे चावल बन सकते हैं कि एक भी दाना किसी दूसरे दाने को न छुए ?"

"सरकार, यह कैसे सम्भव है ? चावल एक ही पतीले में रखे होंगे, तो अवश्य छुएंगे, चाहे कितने भी खिले हुए क्यों न हों।"—रसोइयों ने कहा।

मानसिंह ने तरह-तरह के लोगों से सलाह की, मगर इस समस्या को कोई न सुलझा सका। इस प्रकार दिन बीतते-बीतते अवधि में दो ही दिन रह गए। राजमहल में राजा विक्रम के स्वागत की सब तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। लेकिन समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई थी।

उस शाम महामंत्री मानसिंह अपने घर खाना खाने बैठे। उनकी पत्नी खाना परोस रही थी। साथ-साथ कहती जा रही थी—"जाने हमारे राजा ने बैठे-बैठाए यह कैसी मुसीबत मोल ले ली ? रातों की नींद, दिन का चैन-सब चला गया।"

लेकिन मानसिंह तो जैसे कुछ सुन ही नहीं रहे थे। वह ध्यान से अपनी पत्नी द्वारा परोसे गए चावलों को देख रहे थे। अचानक वह उठ खड़े हुए। उनकी आंखों में चमक थी। बोले—"तुम्हारे चावलों में एक दाना ऐसा है, जिसने आशा की किरण दिखाई है।" वह तुरंत दुशाला लेकर महल की ओर निकल गए।

उनकी पत्नी पीछे से आवाज देती ही रह गई ।

उधर पिछले कुछ दिन से राजा विक्रम आधा राज्य मिलने की कल्पना मात्र से फूले नहीं समा रहे थे । सोच रहे थे—'भानुप्रताप की मूर्खता के कारण बैठे-बैठाए उसका आधा राज्य मिल जाएगा ।'

ठीक तीस दिन बाद उनका रथ राजा भानुप्रताप के महल पर पहुंचा । उनका विधिवत् स्वागत हुआ । फूलों की वर्षा के बीच मंगल गीत गाए गए ।

आखिर वह समय भी आ पहुंचा, जब राजा विक्रम खाने पर बैठे । नाना प्रकार के पकवान व मिष्ठान्न बनवाए गए थे । यह सब देख, राजा विक्रम एक अर्थपूर्ण मुसकान के साथ बोले—"राजा भानुप्रताप, वह व्यंजन कहां है, जिसके लिए हम इतनी दूर से आए हैं ?"

राजा भानुप्रताप ने इशारा किया । एक सेवक सोने का एक बर्तन लेकर उपस्थित हुआ । उसने बर्तन में से चावल राजा विक्रम की थाली में परोसे । देखते ही राजा विक्रम की आंखें फटी की फटी रह गईं । उनकी थाली में धान थे । चावल उबाले तो गए थे, लेकिन छिलके के साथ ही । छिलके के अंदर होने के कारण कोई भी दाना किसी दूसरे दाने को नहीं छू रहा था ।

राजा विक्रम के चेहरे का रंग उड़ गया । बस इतना ही बोल पाए—"ये चावल खाए कैसे जाएंगे ?"

"मित्र, तुम्हें याद नहीं, शर्त सिर्फ इतनी थी कि कोई भी दाना दूसरे दाने को न छुए और यह शर्त तो पूरी हो रही है ।"—राजा भानुप्रताप ने मुसकराकर कहा ।

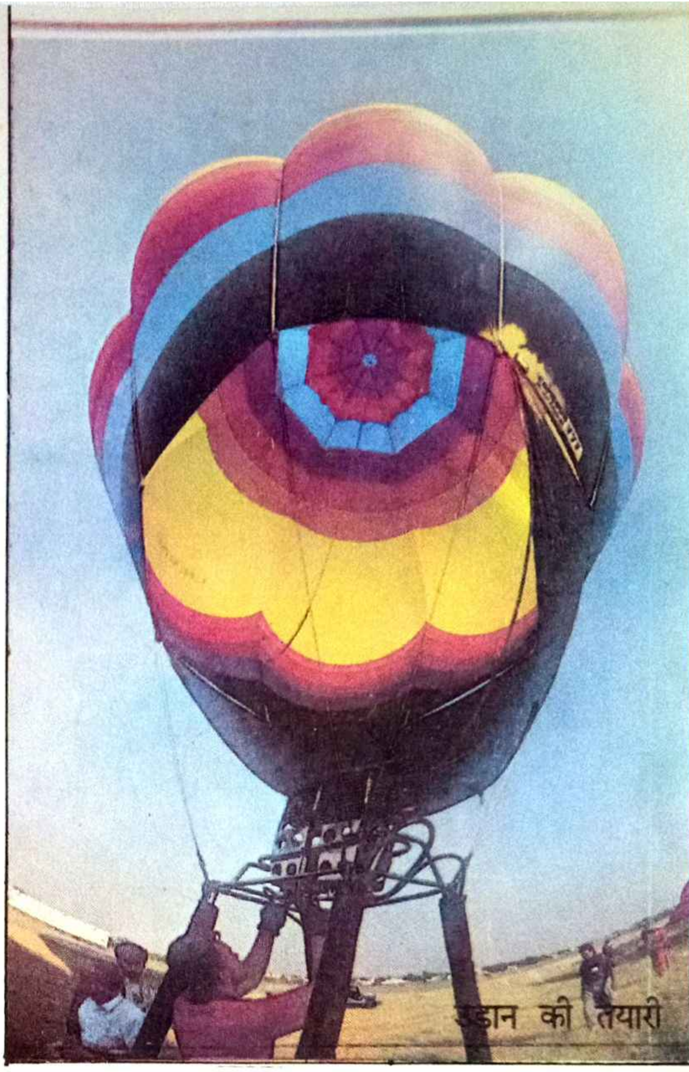
राजा विक्रम जान गए थे कि वह हार चुके हैं । बोले—" राजन, यह मानना पड़ेगा कि आपके राज्य में एक चीज ऐसी है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है और वह है बुद्धिमानी । शर्त के अनुसार मैं हार गया हूं । आज से मेरा आधा राज्य. . . "

"नहीं !"– राजा भानुप्रताप ने बीच में ही टोका—" मुझे आपका राज्य नहीं, सिर्फ सच्ची दोस्ती चाहिए । आप जानते हैं, सच्ची दोस्ती में दिखावे की कोई जगह नहीं होती ।"

राजा विक्रम कुछ देर तो चुपचाप अपने मित्र को देखते रहे । फिर उठकर गले से लगा लिया । ●





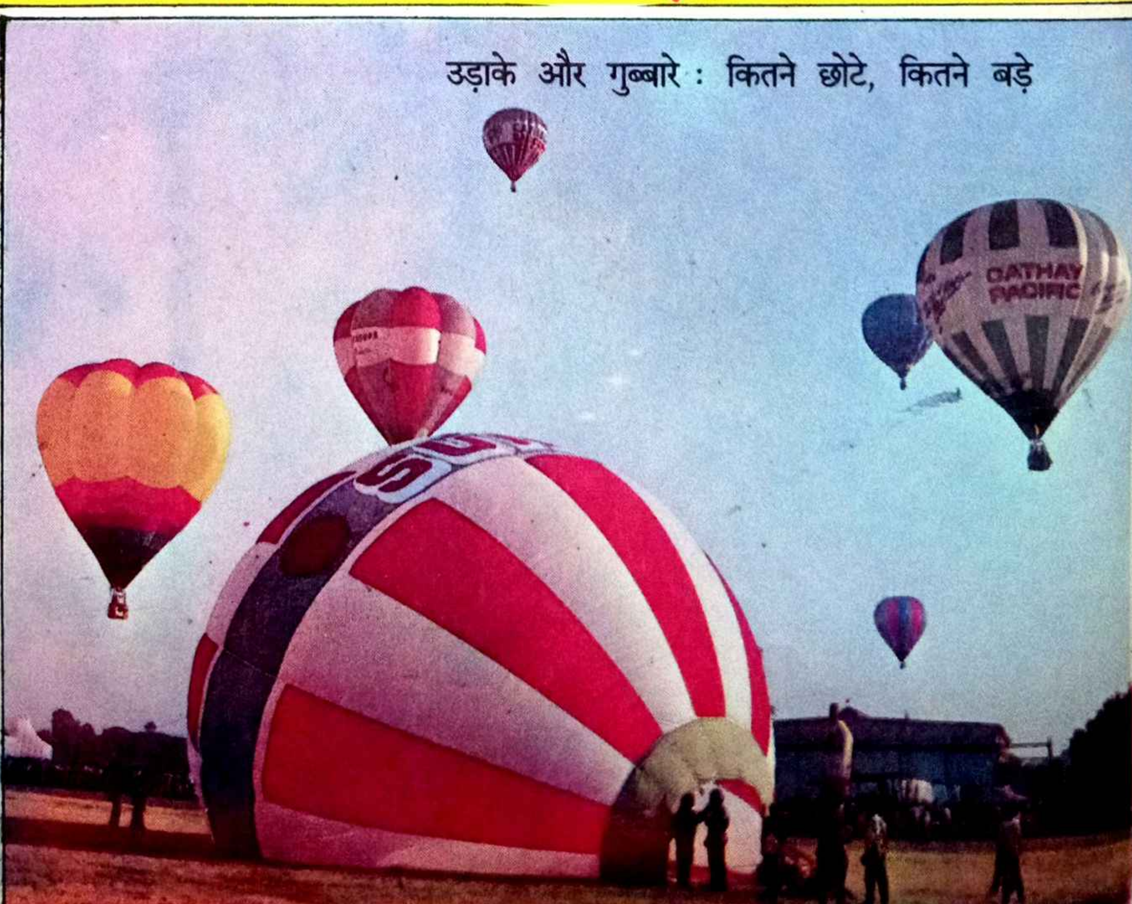


उड़ान की तयारी

गुब्बारे- आएं कहां से जाएं कहां रे !

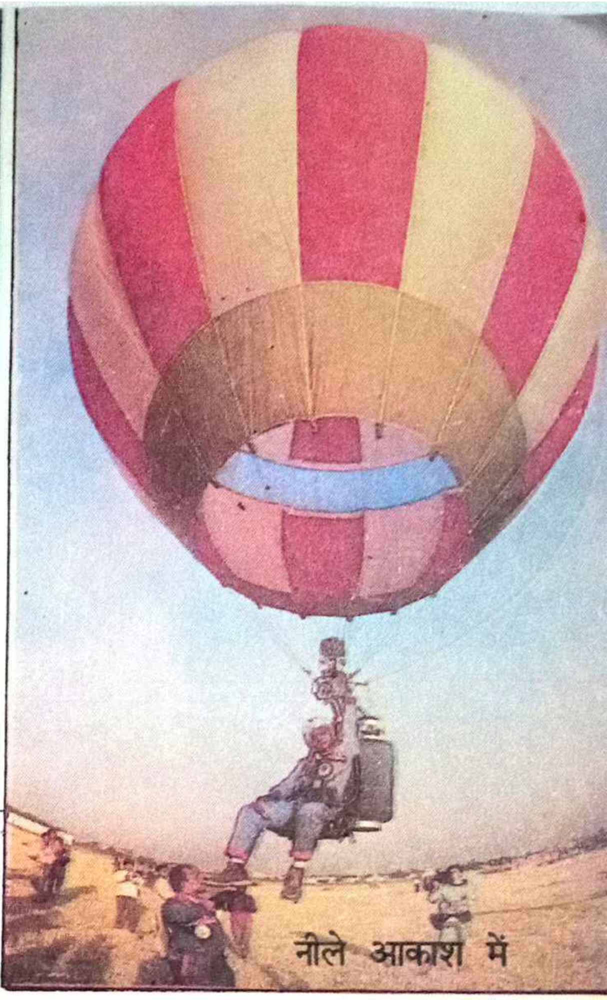
प्यारे-प्यारे गुब्बारे। कितने पुराने? बहुत पुराने। शुरू-शुरू में आदमी गुब्बारों के सहारे उड़ा। फिर हवाई जहाज बना। गुब्बारों में उड़ना जोखिम का काम है। पहाड़ जैसे ये गुब्बारे नायलोन से बनते हैं। गर्म हवा भरी। खटोला बांधा और हवा जिधर ले जाए, उड़ चले। हर वर्ष ऐसे गुब्बारों के मेले लगते हैं। उड़ान प्रतियोगिताएं होती हैं। देश-विदेश के उड़ाके भाग लेते हैं।

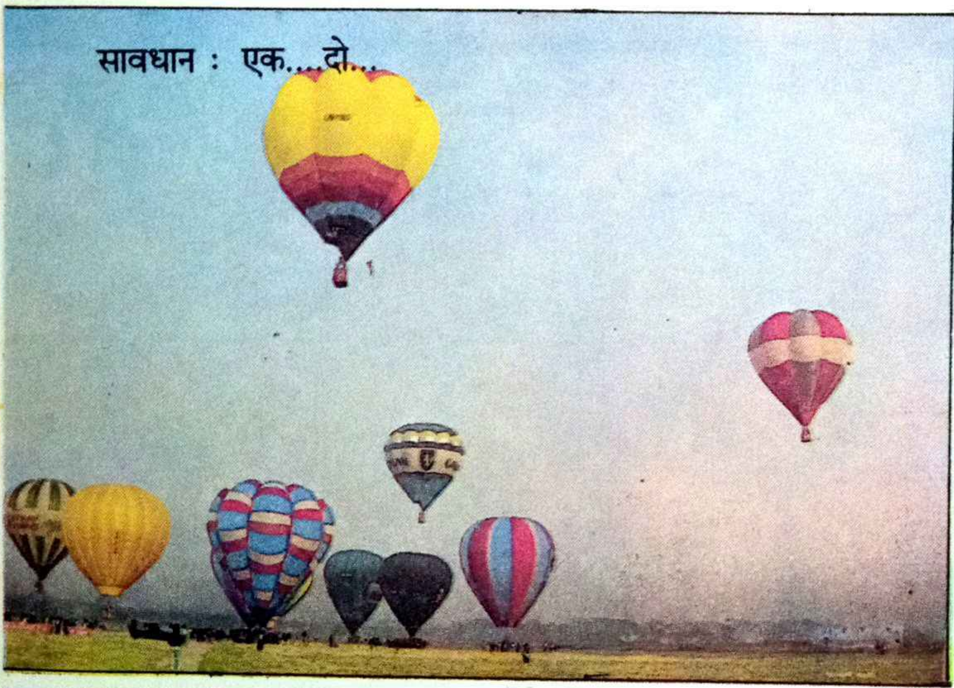
उड़ाके और गुब्बारे: कितने छोटे, कितने बड़े



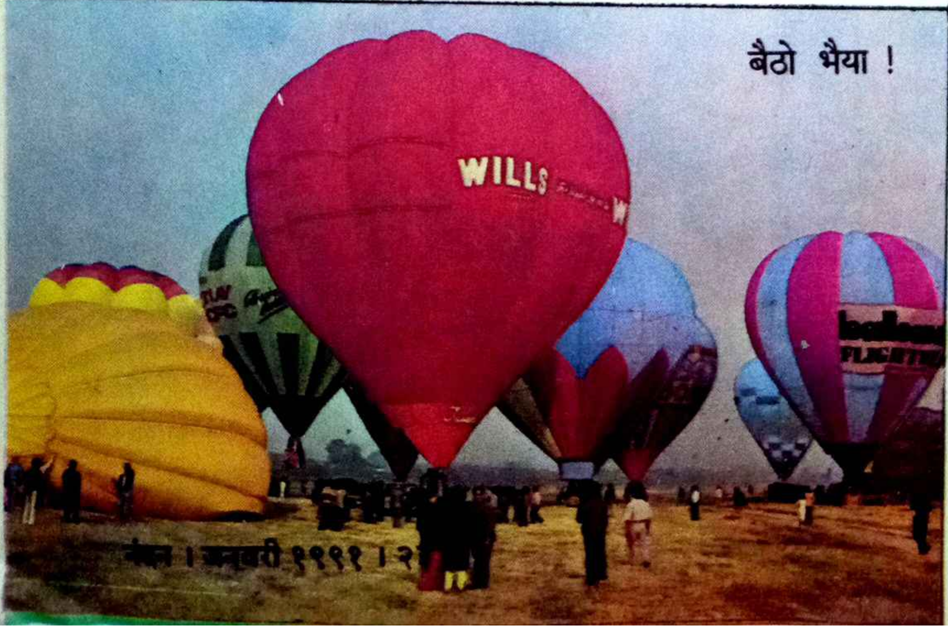


गर्म हवा भरा


नीले आकाश में


सावधान : एक...दो...

चित्र : एड-वेंचर, राजेन्द्रकुमार वधवा



बैठो भैया !



जिधर हवा ले जाए चले हम

उड़ गई मैना

—धरणी दास

पक्षियों का एक सौदागर था। उसका काम था तरह-तरह के पक्षी खरीदना और उन्हें ऊंचे दामों पर बेच देना। उसे घूमने का भी शौक था। पक्षियों की बोली वह आसानी से समझ लेता था।

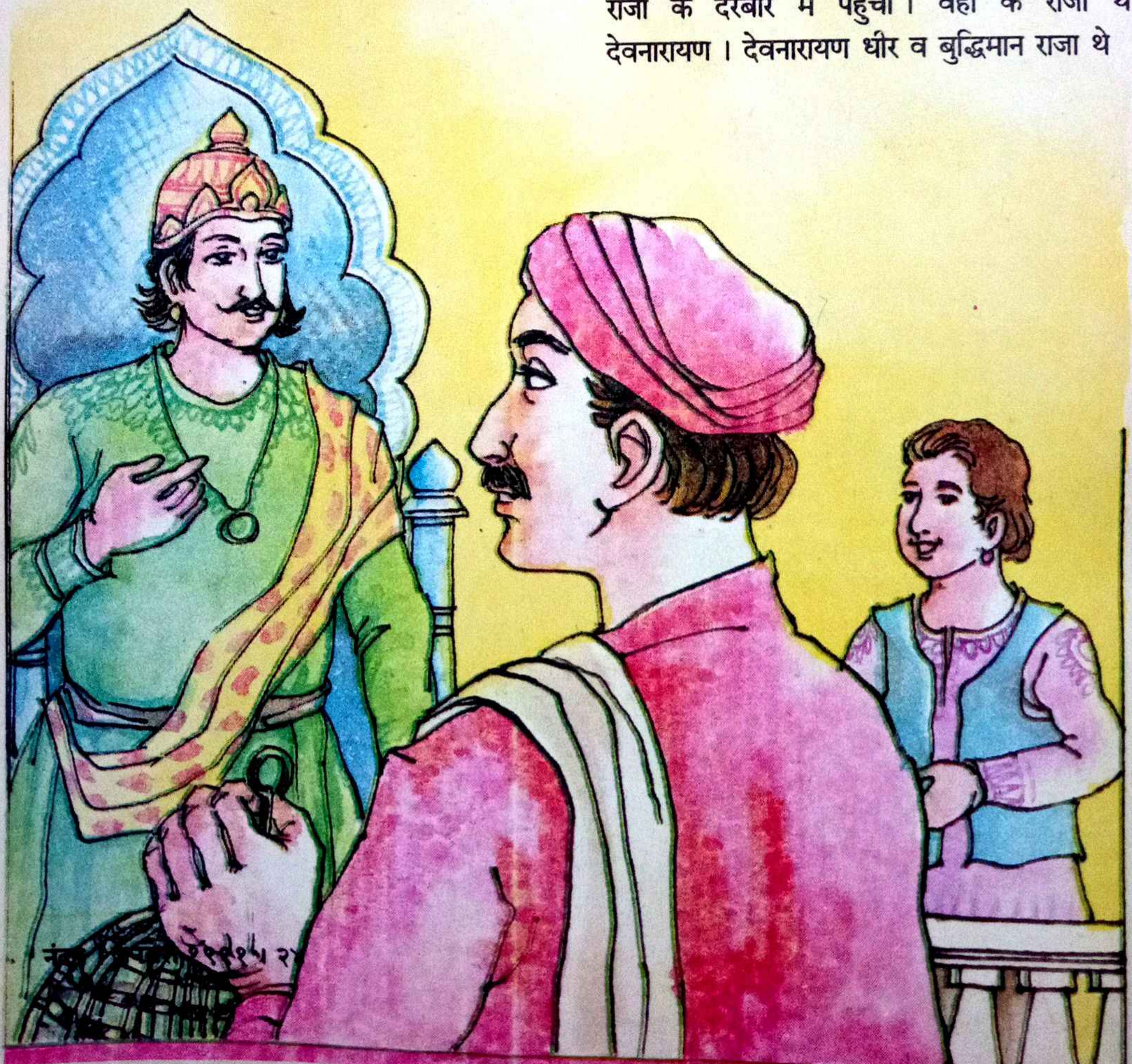
एक दिन सौदागर के पास एक बहेलिया आया। उसके हाथ में एक पिंजरा था। पिंजरे में एक मैना थी। बहेलिया बोला—"देखो, तुम्हारे लिए कितनी सुंदर मैना लाया हूं।"

सौदागर ने पिंजरा खोला। झट से मैना बाहर निकल आई। बहेलिए ने टोका—"कहीं मैना उड़ गई, तो... ?"

सौदागर ने कहा—"तुम चिंता न करो। यह उड़कर नहीं जाएगी।" इसके बाद सौदागर ने उसे रुपए दे दिए। बहेलिया रुपए लेकर चला गया। उसके जाने के बाद सौदागर ने मैना को चुग्गा दिया। खा-पीकर वह आंगन में इधर-उधर फुदकने लगी।

मैना मनुष्य की बातें समझती और उसी भाषा में बोलती भी थी। वह सौदागर से खूब हिलमिल गई थी। एक दिन सौदागर ने सोचा—'यह मैना बहुत अच्छे दामों में बिक सकती है। क्यों न इसे राजा के पास ले जाऊं ?'

दूसरे ही दिन मैना को लेकर सौदागर पंचवटी के राजा के दरबार में पहुंचा। वहां के राजा थे देवनारायण। देवनारायण धीर व बुद्धिमान राजा थे



उनका एक ही बेटा था-मनमोहन। राजकुमार था भी मन को मोहने वाला। सुंदर रंग, अच्छी कद-काठी पाई थी उसने।

सौदागर ने राजा से कहा—"महाराज, मैं आपके लिए एक चतुर मैना लाया हूं। इसे आप रख लें।"

"हमारे महल में तो पहले से ही बहुत सारे पक्षी हैं।"—राजा ने कहा।

—"महाराज, ऐसी मैना नहीं देखी होगी आपने! मनुष्यों की तरह बात करती है।"

तभी सौदागर ने मैना से कुछ कहा। मैना ने सारी बातों का उत्तर दे दिया। राजकुमार भी वहीं था। उसे मैना बहुत पसंद आई। राजा ने मुंहमांगा पैसा देकर मैना रख ली।

राजकुमार मैना की खूब देखभाल करता था। एक दिन राजकुमार मैना के साथ बाग में खेल रहा था। मैना कुछ उदास थी। राजकुमार ने कहा—"मैना, तुम आज कुछ परेशान-सी नजर आ रही हो। कहो, क्या बात है?"

मैना बुझे स्वर में बोली—"मैं बाहर घूमना चाहती हूं। क्या तुम मुझे जाने दोगे?"

"खूब घूमो। जहां मन करे, वहां जाओ। मना कौन करेगा तुम्हें?"—राजकुमार ने कहा।

मैना बोली—"मुझे किसी काम से वर्ष भर के लिए बहुत दूर जाना है। काम निपटा कर जल्दी ही लौट आऊंगी।"

"ऐसा क्या काम है?"—राजकुमार बोला।

—"तुम्हारा एक काम करना है मुझे, साल भर लग जाएगा।"

"मेरा कौन-सा काम करोगी तुम?"—राजकुमार ने उत्सुकता से पूछा।

मैना चहचहाई। बोली—"मैं तुम्हारे लिए सुंदर-सी दुलहन ढूंढ़ने जा रही हूं। ऐसी दुलहन लाऊंगी कि दुनिया देखती रह जाएगी।"

राजकुमार हंस पड़ा। इसके बाद मैना फुर्र से उड़कर चली गई।

मैना को जाना था पारस नगर। उसने सुना था, पारस नगर के राजा ध्यानदेव की एक बेटी है। उसका नाम है प्राणमती। प्राणमती बहुत ही सुंदर और सुशील है। राजा उसके लिए योग्य वर की तलाश कर रहे हैं।

मैना ने सोचा कि प्राणमती का विवाह राजकुमार मनमोहन से होना चाहिए।

उड़ते-उड़ते मैना काफी दूर निकल गई। आगे सागर लहरा रहा था। थकी और भूखी मैना सागर के ऊपर उड़ती रही, उड़ती रही, मगर कब तक उड़ती? भूख और थकान के मारे उसका बुरा हाल था। वह सागर की लहरों पर बेदम होकर गिर पड़ी। संयोग की बात, वहां से एक जहाज गुजर रहा था। जहाज किसी व्यापारी का था। उसने मैना को तड़पता देखा। झट-से उसे बचा लिया। कुछ देर बाद मैना को होश आ गया। दाना-पानी मिलने पर वह पुनः ठीक हो गई। व्यापारी उसे अपने घर ले गया। कुछ दिन वह व्यापारी के घर रही। बाद में व्यापारी ने उसे छोड़ दिया। मैना फिर अपनी मंजिल पर आगे उड़ चली।

कई दिनों बाद वह पारस नगर के बाग में पहुंची। एक पेड़ पर बैठ, सुस्ताने लगी। जल्दी ही उसे नींद आ गई। इतने में एक बहेलिया आ गया। उसने चुपके से मैना को दबोच लिया।

मैना की नींद टूटी, तो अपने को बहेलिए की



धरणी दास-अवधी के कुशल रचनाकार । समय १६५६ ई. । बिहार के मांझी नामक गांव (छपरा) में जन्मे थे । 'प्रेम प्रगास' इनकी प्रमुख रचना है । यहां इसी की कथा संक्षेप में दे रहे हैं । **—सं.**

गिरफ़ में देख, वह चौंकी । वह बहेलिए से बोली—"मुझे राजकुमारी प्राणमती के पास पहुंचा दो । इसके लिए तुम्हें खूब इनाम मिलेगा ।"

बहेलिए को पैसा चाहिए था । वह महल में पहुंचा । राजकुमारी ने मैना को गौर से देखा । फिर मैना को रख लिया । बहेलिया इनाम पाकर लौट गया । मैना राजकुमारी को देखकर जोर से चहकी । बोली—"राजकुमारी, मैं तुम्हारे लिए खुशखबरी लाई हूं ।"

राजकुमारी ने मैना की खूब आवभगत की । दाना खाकर मैना बोली—"सुना है,तुम्हारा ब्याह होने वाला है ।"

—"तुमने ठीक सुना है ।"

—"मैंने तुम्हारे लिए योग्य वर ढूंढ़ लिया है । तुम्हारी और उसकी जोड़ी खूब जमेगी ।"

राजकुमारी यह सुनकर चौंकी । बोली—"कौन है वह ? कहां का राजकुमार है ?"

"वह पंचवटी के राजा देवनारायण का बेटा मनमोहन है । उसे पाकर तुम धन्य हो जाओगी ।"—मैना ने कहा ।

कुछ दिन मैना वहां रुकी । चलते समय वह बोली—"राजकुमारी, राजकुमार मनमोहन का इंतजार करना । साल भर में ही वह तुम्हें ब्याहने आएगा ।" कहकर वह आकाश में उड़ चली ।

इधर मैना के बिना, राजकुमार को एक-एक दिन काटना मुश्किल हो रहा था । साल का अंतिम दिन था । वह सोच रहा था, आज मैना आएगी । राजकुमार जल्दी से बाग में पहुंचा । पेड़ के नीचे बैठ, मैना की प्रतीक्षा करने लगा । दोपहर बीती, शाम भी ढल गई । मैना नहीं पहुंची । अब राजकुमार से रहा न गया । वह उठकर इधर-उधर चहल कदमी करने लगा । अचानक एक पेड़ के पास जाकर रुक गया । देखा—उस पर मैना बैठी है । उसने मैना को आवाज दी । मैना ने राजकुमार को देखा । वह उसके पास चली आई ।

मैना ने राजकुमार से कहा—"तुम्हारा काम निपटाकर लौटी हूं ।" फिर मैना ने शुरू से लेकर अंत तक सारी घटना दोहरा दी । राजकुमार बड़े ध्यान से सुन रहा था । बोला—"तुमने बड़ी हिम्मत से काम लिया है । इतना लम्बा सफर तय करके तुम यहां पहुंची ! अब राजकुमारी का नाम तो बताओ ?"

"प्राणमती उसका नाम है । उसके पिता पारस नगर के राजा हैं । उनका नाम है ध्यानदेव । एक साल तक वह तुम्हारा इंतजार करेगी । मन से तो तुम्हें वह अपना पति मान चुकी है । बस, अब जल्दी तैयारी करो उधर चलने की ।"

राजकुमार मनमोहन ने अपने पिता देवनारायण को सब कुछ बता दिया । राजा ने कुछ सैनिकों के साथ राजकुमार को भेज दिया । राजकुमार पारस नगर की ओर बढ़ चला । रास्ता अनजान था । पर मैना के कारण ज्यादा परेशानी नहीं हुई । वह रास्ता बताती जा रही थी ।

रास्ते में राजा कामसेन का राज्य पड़ा । उसने राजकुमार को रोकना चाहा, क्योंकि वह भी प्राणमती से विवाह करना चाहता था । मनमोहन व कामसेन के बीच युद्ध की नौबत आ गई । युद्ध होने को था, तभी पर्वतराज बुद्धसेन आ गए । उन्होंने दोनों को समझाया । किसी तरह दोनों में सुलह करा दी ।

राजकुमार आगे बढ़ा । थोड़ी दूर चला था कि उसे मैना की याद आई । मैना को ढूंढ़ा, पर मैना वहां थी ही नहीं । आसपास देखा, वह नजर नहीं आई । राजकुमार ने सैनिकों को आदेश दिया कि तुरंत मैना को खोजकर लाएं । कुछ समय बाद सैनिक खाली हाथ लौट आए ।

किसी तरह राजकुमार ने आगे की राह पकड़ी । पर वह बहुत उदास था । जिस मैना ने उसके लिए इतना कष्ट उठाया, उसी मैना की वह रक्षा न कर सका, इसका उसे बेहद अफसोस था ।

जंगल में राजकुमार को एक सिद्ध बाबा मिले। राजकुमार ने उन्हें प्रणाम किया। बाबा ने आशीर्वाद दिया। बोले—"बड़े उदास हो? क्या परेशानी है?"

—"महात्मन, मेरी मैना न जाने कहां चली गई? बहुत खोजा, लेकिन वह मिली नहीं।"

महात्मा मुसकराए। तभी ढेर सारी मैना वहां आ गईं। बोले—"एक नहीं, कितनी सारी मैना आ गई हैं यहां। जितनी चाहे, ले लो।" राजकुमार उनमें अपनी मैना को ढूंढने लगा। कुछ देर बाद वह बोला—"मेरी मैना इन में नहीं है।"

महात्मा ने कहा—"तुम आंखें मूंदकर बैठ जाओ। मैना का ध्यान करो।"

राजकुमार पालथी मार, बैठ गया। आंखें बंद थीं। थोड़ी देर में उसने आंखें खोलीं, तो वह चौंका। मैना उसकी गोद में थी। उसे देखते ही राजकुमार की उदासी दूर हो गई। महात्मा से विदा लेकर वह पारस नगर चल पड़ा।

एक दिन राजकुमार उदयपुर नामक नगर में पहुंचा। नगर देखने में सुंदर था, पर लोग उदास थे। चारों ओर खामोशी थी। राजकुमार को कुछ आश्चर्य हुआ। उसने एक आदमी से इसके बारे में पूछा। वह बोला—"नगर के बाहर दुरमत नाम का एक दैत्य रहता है। वह बहुत ही निर्दयी एवं खूंखार है। जब-तब नगर में आ जाता है, दो-चार लोगों को मार कर खा जाता है। उसने लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है।"

राजकुमार बोला—"मुझे उसका ठिकाना बता दो। मैं उसे मारकर ही चैन लूंगा।"

आदमी से दैत्य का पता-ठिकाना लेकर राजकुमार नगर के बाहर निकल गया। जहां दैत्य रहता था, वहां पहुंचा। दैत्य को चुनौती दी। युद्ध के लिए ललकारा।

दैत्य आग-बबूला होकर बाहर निकला। वह राजकुमार पर झपटा। राजकुमार सावधान था। उसने धनुष-बाण संभाला। तीर छोड़ने को ही था कि रुक गया। वह दैत्य से बोला—"दैत्य, मैं निहत्थे पर वार नहीं करता। तुम जिस ढंग से लड़ना चाहो, लड़ सकते हो। अब तक तुमने बहुत-से निर्दोष लोगों को मारा है।"

इतना सुनते ही दैत्य गरजा। वह खाली हाथ राजकुमार की ओर झपटा। राजकुमार सावधान था। वह तेजी से एक तरफ हट गया। दैत्य का सिर पेड़ से टकराया। वह गिर पड़ा। सिर से खून बह चला। दैत्य का क्रोध और भी बढ़ गया। उसने राजकुमार पर छलांग लगाई। राजकुमार छिटक गया। दैत्य औंधे मुंह पत्थर पर जा गिरा। उसका चेहरा लहूलुहान हो गया। तभी राजकुमार के तीर ने उसे यमपुर पहुंचा दिया।

दैत्य के मरने की खबर चारों तरफ फैल गई। यह खुशखबरी पारस नगर भी पहुंची। वहां राजकुमार के आगमन का समाचार पाकर स्वागत की तैयारियां शुरू हो गईं। नगर में पहुंचने पर राजकुमार का खूब स्वागत हुआ।

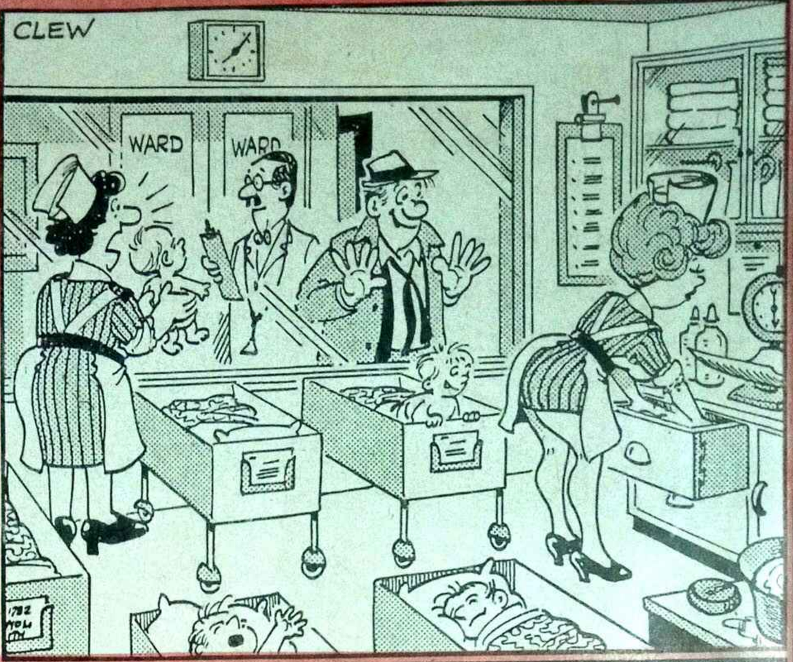
निश्चित दिन राजकुमारी प्राणमती का स्वयंवर रचाया गया। दूर-दूर के राजकुमार बन-संवर कर बैठे थे। राजकुमार मनमोहन भी उनमें एक था। बगल में मैना बैठी थी। फिर क्या था, राजकुमारी ने वरमाला राजकुमार के गले में डाल दी।

राजा ने देवनारायण को विवाह का निमंत्रण भेजा। जब देवनारायण आ गए, तो मनमोहन एवं प्राणमती का विवाह हो गया। राजकुमार अपनी दुलहन को ले, राज्य में लौट आया। दोनों सुख से रहने लगे।

एक दिन मैना राजकुमार से बोली—"राजकुमार, मैंने अपना काम पूरा कर दिया। अब मुझे मोहलत दे दो, ताकि और कुछ काम कर सकूं।"

राजकुमार क्या कहता। राजकुमार ने मैना को हमेशा के लिए विदा कर दिया। मैना देखते-ही-देखते आंखों से ओझल हो गई। ●

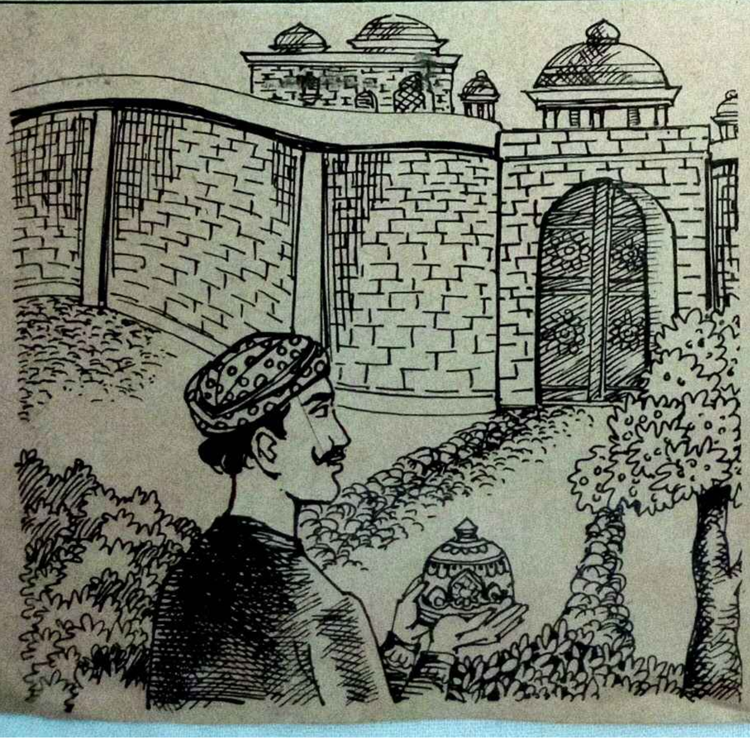
आप कितने बुद्धिमान हैं ?





यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस**; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए।**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।



कहानी लिखो : ८६

सामने चित्र को देखकर एक रोचक कहानी लिखिए उसे १० जनवरी, १९९१ तक सम्पादक 'नंदन' हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१ के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा, उसे प्रकाशित भी किया जाएगा

परिणाम-मार्च, १९९१

चित्र पहेली-८६

'खेल दिखाए बाजीगर' विषय पर रंगीन चित्र बनाकर १० जनवरी, १९९१ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए, **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखें। चित्र पैंसिल से नहीं, चटख रंगों में बनाकर भेजें।** चुना हुआ चित्र पुरस्कृत कर प्रकाशित किया जाएगा।

परिणाम - अप्रैल, १९९१

पेड़ का मित्र

—ओशो रजनीश

एक बहुत पुराना वृक्ष था। आकाश में सम्राट की तरह उसके हाथ फैले हुए थे। उस पर फल आते, तो दूर-दूर से पक्षी सुगंध लेने आते थे। उस पर फूल लगते थे, तो तितलियां उड़ती थीं। उसकी छाया, उसकी फैली शाखाएं, हवाओं में उसका वह खड़ा रूप आकाश में बड़ा सुंदर था। एक छोटा बच्चा उसकी छाया में रोज खेलने आता था। उस बड़े वृक्ष को उस छोटे बच्चे से प्रेम हो गया। लेकिन वृक्ष की शाखाएं ऊपर थी। बच्चा छोटा था तो वृक्ष अपनी शाखाएं उसके लिए नीचे झुकाता, ताकि वह फल-फूल तोड़ सके।

समय के साथ लड़का बड़ा होता चला गया। दिन बढ़ते चले गए। जब लड़का बड़ा हो गया, तो उसे और दूसरे काम भी दुनिया में आ गए। महत्वाकांक्षाएं आ गईं। उसे परीक्षाएं पास करनी थीं, उसे मित्रों को जीतना था। वह फिर कभी-कभी आता, कभी नहीं भी आता, लेकिन वृक्ष उसकी प्रतीक्षा करता कि वह आए, वह आए।

एक दिन वहां से निकला था, तो वृक्ष ने उसे कहा—"सुनो।" हवाओं में उसकी आवाज गूंजी... 'सुनो, तुम आते नहीं, मैं प्रतीक्षा करता हूं। मैं तुम्हारे लिए प्रतीक्षा करता हूं, राह देखता हूं, बाट जोहता हूं।"

उस लड़के ने कहा—"क्या है तुम्हारे पास जो मैं आऊं? मुझे रुपए चाहिएं।"

वृक्ष तो चौंक गया। उसने कहा—"तुम तभी आओगे, जब मैं कुछ तुम्हें दे सकूं? मैं तुम्हें सब दे सकता हूं। लेकिन रुपए मेरे पास नहीं हैं। ये रुपए तो सिर्फ आदमी की ईजाद हैं। वृक्षों ने यह बीमारी नहीं पाली है।"

लड़के ने कहा—"फिर मैं क्यों आऊं तुम्हारे पास! जहां रुपए हैं, मुझे वहां जाना पड़ेगा। मुझे रुपयों की जरूरत है।"

उस वृक्ष ने बहुत सोचा, फिर उसे खयाल आया—"तो तुम एक काम करो। मेरे सारे फलों को तोड़कर ले जाओ और बेच दो, तो शायद रुपए मिल जाएं।"

उस लड़के को भी ख्याल आया। वह चढ़ा और उसने सारे फल तोड़ डाले। कच्चे भी गिरा डाले। शाखाएं भी टूटीं, पत्ते भी टूटे, लेकिन वृक्ष बहुत खुश हुआ, बहुत आनंदित हुआ। लड़का उसके फलों को ले गया और बाजार में बेचा। लेकिन फिर वह बहुत दिनों तक नहीं आया। उसके पास रुपए थे और रुपयों से रुपए पैदा करने की वह कोशिश में लग गया था। वह भूल गया। वर्ष बीत गए।

वृक्ष उदास। वह रोज उस लड़के की बाट जोहता। सोचता—'पता नहीं कहां है वह!' ऐसे उस वृक्ष के प्राण पीड़ित होने लगे कि वह आए-आए। उसकी सारी आवाज में यही गूंज गूंजने लगी कि आओ।

बहुत दिनों के बाद वह आया। वह लड़का प्रौढ़ हो गया था। वृक्ष ने उससे कहा—"आओ मेरे पास। मेरे आलिंगन में आओ।" उसने कहा—"छोड़ो यह बकवास। बचपन की बातें हैं। मुझे एक मकान बनाना है। मकान दे सकते हो तुम?"

वृक्ष ने कहा—"मकान! हम तो बिना मकान के ही रहते हैं। मकान में तो सिर्फ आदमी रहता है। दुनिया में और कोई मकान में नहीं रहता है, सिर्फ आदमी रहता है। तुम देखते हो आदमी की हालत—मकान में रहने वाले आदमी की हालत? उसके मकान जितने बड़े होते जाते हैं, आदमी उतना छोटा होता चला जाता है। हम तो बिना मकान के रहते हैं। लेकिन एक बात हो सकती है कि तुम मेरी शाखाओं को काटकर ले जाओ, तो शायद तुम मकान बना लो।"

वह प्रौढ़ कुल्हाड़ी लेकर आ गया। उसने उस वृक्ष की शाखाएं काट डालीं। वृक्ष एक ठूंठ रह गया, नंगा। लेकिन वृक्ष अब भी बहुत आनंदित था। लेकिन उस लड़के ने तो पीछे लौटकर भी नहीं देखा। उसने मकान बना लिया।

और वक्त गुजरता गया। वह ठूंठ राह देखता, वह चिल्लाना चाहता, लेकिन अब उसके पास पत्ते भी नहीं थे, शाखाएं भी नहीं थीं। हवाएं आतीं और वह बोल भी नहीं पाता, बुला भी नहीं पाता। लेकिन उसके प्राणों में तो एक ही गूंज थी...'आओ, आओ।'

और बहुत दिन बीत गए। तब बूढ़ा आदमी हो गया था, वह बच्चा। वह निकल रहा था पास से। वृक्ष के पास आकर खड़ा हो गया, तो वृक्ष ने पूछा—"क्या कर सकता हूं और मैं तुम्हारे लिए ? तुम बहुत दिन बाद आए !"

उसने कहा—"तुम क्या कर सकोगे ? मुझे दूर देश जाना है धन कमाने के लिए। मुझे नाव की जरूरत है।"

वृक्ष बोला—"तुम मुझे और काट लो, तो मेरे तने से नाव बन जाएगी और मैं बहुत धन्य होऊंगा कि मैं तुम्हारी नाव बन सकूं और तुम्हें दूर देश ले जा सकूं। लेकिन तुम जल्दी लौट आना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।"

और उस बूढ़े ने उस वृक्ष को काट डाला। तब वह छोटा-सा ठूंठ रह गया। और वह दूर यात्रा पर निकल गया। वह ठूंठ भी प्रतीक्षा करता रहा कि वह आए, आए। लेकिन अब उसके पास कुछ भी नहीं था देने को। सोचता—'शायद वह नहीं आएगा।'

मैं उस ठूंठ के पास एक रात मेहमान हुआ, तो वह ठूंठ मुझसे बोला—"वह मेरा मित्र अब तक नहीं आया ! मुझे बड़ी पीड़ा होती है कि कहीं नाव डूब न गई हो, कहीं वह भटक न गया हो, कहीं किसी दूर किनारे पर, विदेश में भूल न गया हो, कहीं वह डूब न गया हो, कहीं वह समाप्त न हो गया हो ! एक खबर भर मुझे कोई ला दे, अब मैं मरने के करीब हूं। एक खबर भर आ जाए कि वह सकुशल है, फिर कोई बात नहीं ! फिर सब ठीक है। अब तो मेरे पास उसे देने को कुछ भी नहीं है, इसलिए बुलाऊं भी तो शायद वह नहीं आएगा, क्योंकि वह लेने की ही भाषा समझता है !"

●

कंजूस बाप

—डा. सुरेश धींगड़ा

कौशाम्बी में एक श्रेष्ठि था, धन-धान्य से परिपूर्ण। समृद्धि की कोई सीमा न थी। विशाल और ऊंची अट्टालिका। दूर-दूर तक फैला व्यापार था उसका। नाम था धनगुप्त। जैसा नाम, वैसे ही गुण। अपना धन कहां छिपाकर रखता, किसी को पता नहीं चलता था। उसका इकलौता बेटा भी नहीं जानता था कि पिता ने धन कहां गाड़कर रखा है !

धनगुप्त बेहद कंजूस था। घर आए किसी अतिथि का स्वागत करना तो जानता ही नहीं था। केवल उन्हीं अतिथियों को थोड़ा खिलाता-पिलाता, जिनसे उसे कुछ लाभ होने की आशा होती थी। भिक्षुओं और याचकों को तो दूर से ही दुत्कार देता था।

धनगुप्त का पुत्र धनचेट्टि उससे भी अधिक कंजूस था। भिक्षुओं से कहता—"बिना काम-धाम किए, खा-पीकर मुटिया रहे हो। समाज को कोई लाभ भी है तुमसे ?" द्वार पर आए भिक्षुओं को वह दूर से ही दुत्कार देता। परंतु भिक्षु तो भिक्षु ही होते हैं। वे लोग धनचेट्टि की दुत्कार को भी भिक्षा समझ, कटोरे में डाल लेते। धनचेट्टि को आश्चर्य होता कि ये लोग कैसे शांत भाव से उसकी दुत्कार को स्वीकार कर लेते हैं !

कुछ समय बाद धनगुप्त की मृत्यु हो गई। पिता की गद्दी का स्वामी धनचेट्टि बना। पिता के व्यापार और अकूत धन-सम्पत्ति का स्वामी होने पर भी उसके स्वभाव में कोई अंतर न आया। अतिथियों का उसके द्वार पर कभी स्वागत न होता।

धनगुप्त की मृत्यु के कुछ समय बाद धनचेट्टि के द्वार पर जाने कहां से एक पिल्ला आ गया। धनचेट्टि के सेवकों ने उसे आदत के अनुसार खदेड़ना चाहा। तभी भीतर से धनचेट्टि निकला। पिल्ले को देखकर जाने क्यों उसके मन में दया उपजी। उसने सेवकों से पिल्ले के लिए दूध लाने को कहा। सेवक आश्चर्य से भर गए।

उस दिन से धनचेट्टि पिल्ले को पालने लगा। अपनी आदत के विरुद्ध उसने पिल्ले के लिए गद्देदार बिस्तर और चांदी की तश्तरी का प्रबंध किया। उसे दूध और अन्य उत्तम भोजन देने की व्यवस्था की। धीरे-धीरे पिल्ला बड़ा होकर पूर्ण श्वान बन गया। लेकिन उसकी एक आदत थी। वह एक निश्चित स्थान पर सूंघता रहता। वह बैठता-सोता भी वहीं था। धनचेट्टि ने यह समझा कि श्वान को वही स्थान पसंद है। उसने वहीं उसके सोने की व्यवस्था कर दी।

उन दिनों गौतम बुद्ध के शिष्य उपगुप्त कौशाम्बी में ही विहार कर रहे थे। उनका नियम था कि वह प्रतिदिन नगर में जाते और किसी एक द्वार से भिक्षा लेकर लौट आते।

एक दिन उपगुप्त धनचेट्टि के द्वार पर पहुंचे। सेवक ने स्वामी के भय से उन्हें दुत्कारना चाहा। लेकिन तभी श्वान दौड़कर आया और उपगुप्त की ओर मुंह उठाकर भौंकने लगा। उपगुप्त ने झुककर उसके कान में कुछ कहा और लौट आए।

उसी समय श्वान के लिए सेवक दूध ले आया। पर उसने दूध की ओर देखा तक नहीं। बस, पैरों से



जमीन कुरेदता रहा। कुछ समय बाद धनचेट्टि घर लौटा। उसने देखा कि श्वान ने न दूध पिया है और न कुछ खाया ही है। उसे परेशान देखकर सेवक से कारण जानना चाहा। सेवक ने भिक्षु के आने की सारी कथा धनचेट्टि को सुना दी। धनचेट्टि ने समझा कि हो-न-हो, भिक्षु ने ही श्वान को कुछ कर दिया है। वह क्रोध से भर उठा। उसने निश्चय किया कि वह उस बौद्ध भिक्षु की खबर लेगा।

धनचेट्टि तुरंत विहार की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचकर वह गरजा—"कौन-सा भिक्षु धनचेट्टि के द्वार पर गया था?" क्रोध से उसकी आंखें लाल हो रही थीं, मुट्ठियां तनी हुई थीं।

तभी भीतर से उपगुप्त निकलकर आए। उनका मुख मंडल एकदम शांत था। माथे पर अपूर्व कांति। धीरे-धीरे चलते हुए वह धनचेट्टि के पास पहुंचे और बोले—"क्या बात है, वत्स?"

—"तुम ही गए थे, मेरे द्वार पर भिक्षा मांगने?"

"यह तो मेरा धर्म है, वत्स।"—उपगुप्त ने उत्तर दिया।

"तुम समाज पर भार हो, मुफ़्त का खाते हो। तुम्हें मालूम नहीं कि धनचेट्टि के द्वार पर याचकों के लिए कोई स्थान नहीं है?"—धनचेट्टि उपगुप्त को अपमानित करना चाहता था।

"धर्म के मार्ग पर चलो, वत्स। तुम्हारा कल्याण हो।"—कहकर उपगुप्त वापस जाने के लिए मुड़े।

"मुझे धर्म मत सिखाओ, भिक्षु! और अपने कल्याण की चिंता करो। मुंह से कहते कुछ हो और करते कुछ और ही हो।"—धनचेट्टि अपनी ओर से तो उपगुप्त को अपमानित कर रहा था, परंतु उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी—"तुमने मेरे श्वान से क्या कहा है? वह कुछ खा नहीं रहा। यदि वह मर गया, तो..."

"चिंतित न हो वत्स, तथागत कल्याण करेंगे।"—उपगुप्त ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की।

"लेकिन तुमने उसे कहा क्या ? मुझे धर्म के पचड़ों में उलझाने का प्रयत्न न करो । मुझे मालूम है, मुझे क्या करना है ।"—धनचेट्टि का क्रोध शांत नहीं हो रहा था ।

"मैंने नहीं, श्वान ने ही मुझसे कुछ कहा था । मैं तो उसे केवल सांत्वना दे रहा था ।"—उपगुप्त ने फिर धनचेट्टि को समझाने की कोशिश की ।

"वाह, मनुष्यों को छोड़कर श्वान से वार्तालाप हो रहा था। मैं भी सुनूं, क्या बात हुई तुमसे ?"—धनचेट्टि बोला ।

"मत पूछो धनचेट्टि। वत्स, तुम्हें दुःख होगा ।"—उपगुप्त बोले ।

"नहीं, तुम्हें बताना होगा ।"—धनचेट्टि अपनी बात पर अड़ा था ।

"तो ठीक है, सुनो । वह श्वान पूर्व जन्म का तुम्हारा पिता धनगुप्त है ।"—उपगुप्त बोले ।

"बकवास है यह । भिक्षु, तुम मुझे मूर्ख समझते हो ? श्वान और मेरा पिता !"—धनचेट्टि के मुख से अब क्रोध और अपमान के कारण फेन निकलने लगा था ।

"यही सत्य है, वत्स । तुम्हें स्मरण होगा कि वह श्वान एक ही स्थान पर घूमता है । वह वहीं बैठता और सोता है ।"—उपगुप्त ने उसे समझाया ।

—"तो क्या हुआ ? मैंने उसे सोने के लिए नरम गद्देदार बिस्तर दिया है ।"

"वह इसलिए कि तुम्हारे मन में उसके लिए प्रेम और आदर है । उसका कारण यही है कि तुम्हारा उससे पूर्व जन्म का सम्बंध है ।"—उपगुप्त ने कहा—"वस्तुतः तुम्हारे पिता ने उस स्थान पर धन छिपाया था, जिसका ज्ञान तुम्हें भी नहीं है । इस जन्म में श्वान बनकर वह उसकी रक्षा कर रहे हैं । उन्होंने अनेक बार अपनी मूक वाणी में तुम्हें बताने का प्रयत्न किया, परंतु तुम कभी समझ नहीं पाए । जब मैं वहां पहुंचा, तो श्वान ने मुझसे अपना दुःख प्रकट किया कि उस धन का सदुपयोग नहीं हो पा रहा । मैंने तो उनके कान में केवल धर्म का उपदेश देकर सांत्वना ही दी थी ।"

धनचेट्टि का सिर चकरा गया । उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उपगुप्त का कथन सच है । उसने कहा—"यदि यह असत्य निकला तो ?"

"तुम स्वयं जाकर देख क्यों नहीं लेते, वत्स धनचेट्टि ?"—उपगुप्त ने उसे सुझाव दिया ।

धनचेट्टि घर लौटा । उसने देखा कि श्वान उसे देखकर अपने कोने में पहुंचा और अपने पंजों से जमीन कुरेदने लगा । धनचेट्टि ने तुरंत कुदाल और फावड़ा लाकर उस स्थान को खोदने का आदेश दिया । कुछ गहरा खोदने पर ही जमीन से कलश निकला, जिसमें स्वर्ण मुद्राएं भरी हुई थीं ।

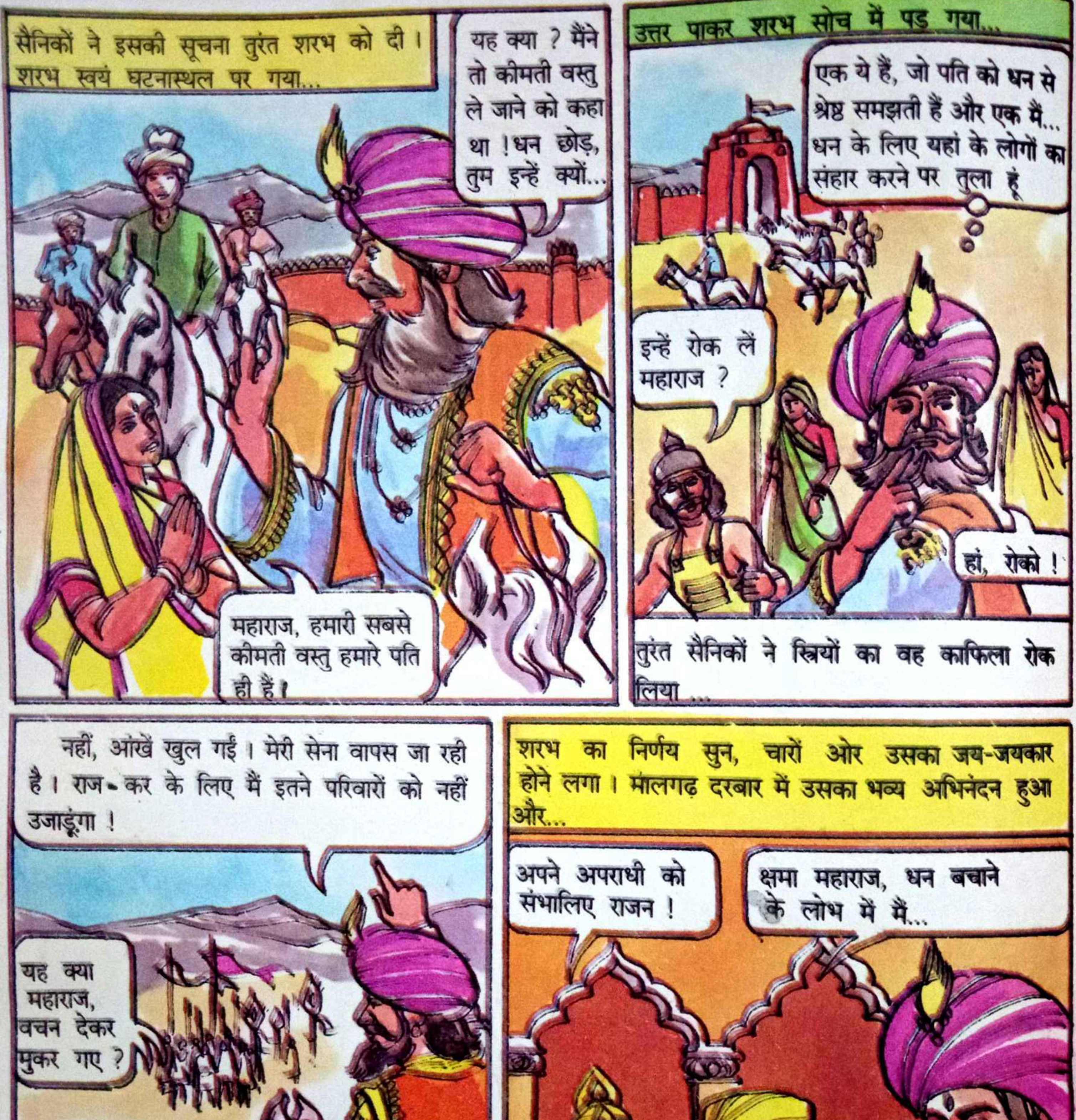
धनचेट्टि ताज्जुब में पड़ गया । उसने निश्चय कर लिया कि उस धन का उपयोग समाज की भलाई के काम में ही करेगा । धन का एक भाग उसने बौद्ध विहार में दे दिया । शेष भाग से उसने यात्रियों के लिए विश्रामगृह बनवाया । अब धनचेट्टि बदल गया था । उसके द्वार से कोई भिक्षु या याचक भूखा नहीं लौटता था । ●




राज हठ
शालगढ़ का राजा शरभ जितना न्यायप्रिय था, उतना ही कठोर था। अपराधी उसके सामने आते घबराते थे। एक दिन...
महाराज, देव महाजन ने दो वर्ष से राज्य-कर नहीं चुकाया। मांगने पर धमकी दी...
उसे सरेआम सौ कोड़े लगाए जाएं
महाजन पकड़ा जाता, इससे पहले ही वह पड़ोसी राज्य मालगढ़ में भाग गया। शरभ को पता चला, तो...
मालगढ़ के राजा विधुसेन को लिखो— महाजन को हमारे हवाले करे
जो आज्ञा
शरभ का पत्र ले, दूत मालगढ़ के दरबार में पहुंचा...
हम शरण में आए व्यक्ति को दंड पाने के लिए नहीं लौटा सकते...
विधुसेन का उत्तर पा, शरभ अपमान से जल भुन गया...
इतना घमंड !
अपराधी को शरण दी
हम मालगढ़ की ईंट से ईंट बजा देंगे


आनन-फानन में शालगढ़ की सेनाओं ने मालगढ़ को चारों ओर से घेर लिया...
युद्ध में निर्दोष लोग न मारे जाएं— यह सोच, मंत्री ने शरभ को सलाह दी...
सेना ने मालगढ को रसद पहुंचाने वाले सारे रास्ते बंद कर दिए हैं। लोग भूखों मरेंगे तो...
बिना मार-काट किए, मालगढ़ हार जाएगा
हुआ भी ऐसा ही...
महीने भर से अन्न का एक दाना भी मालगढ़ नहीं आ सका
मैं बच्चों को भूखों मरते नहीं देख सकती
मां, भूख लगी है
ओ ऽ ओ ऽ ओ ऽ


मालगढ़ का राजा विधुसेन भी कम परेशान न था
मैं क्या करूं ? प्रजा भूखी मर रही है, मगर शरणागत... इधर कुआं, उधर खाई...
एक उपाय है। शायद काम कर जाए.
रानी का उपाय विधु ने मान लिया। रानी अपनी विश्वासपात्र दासियों को साथ ले, वेश बदलकर शरभ के शिविर में पहुंची...
हमें न युद्ध से मतलब है, न देव महाजन से। मगर दो राजाओं के हठ में हम पिस रही हैं। क्यों ?
युद्ध में स्त्रियों पर हाथ नहीं उठाया जाता। तुम सब एक-एक खच्चर पर कीमती सामान साथ लेकर किले से बाहर जा सकती हो !
अगले दिन
?!


सैनिकों ने इसकी सूचना तुरंत शरभ को दी। शरभ स्वयं घटनास्थल पर गया...
यह क्या ? मैंने तो कीमती वस्तु ले जाने को कहा था ! धन छोड़, तुम इन्हें क्यों...
महाराज, हमारी सबसे कीमती वस्तु हमारे पति ही हैं।
उत्तर पाकर शरभ सोच में पड़ गया...
एक ये हैं, जो पति को धन से श्रेष्ठ समझती हैं और एक मैं... धन के लिए यहां के लोगों का संहार करने पर तुला हूं
इन्हें रोक लें महाराज ?
हां, रोको !
तुरंत सैनिकों ने स्त्रियों का वह काफिला रोक लिया...
नहीं, आंखें खुल गईं। मेरी सेना वापस जा रही है। राज-कर के लिए मैं इतने परिवारों को नहीं उजाड़ूंगा !
यह क्या महाराज, वचन देकर मुकर गए ?
शरभ का निर्णय सुन, चारों ओर उसका जय-जयकार होने लगा। मालगढ़ दरबार में उसका भव्य अभिनंदन हुआ और...
अपने अपराधी को संभालिए राजन !
क्षमा महाराज, धन बचाने के लोभ में मैं...
बस, बस ! धन की नहीं, न्याय की बात सोचो

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष २७, अंक ३, नई दिल्ली; जनवरी '९१, अगहन – पौष, शक सं. १९१२

सबसे अच्छी शिक्षा बच्चों को मिले

—राजमंगल पांडेय

दिल्ली। पुस्तक मेले का उद्घाटन मानव विकास एवं संसाधन मंत्री श्री राजमंगल पांडेय ने किया। मेले में देश भर के ५९ प्रकाशकों ने भाग लिया। कथा-कहानी, इतिहास, विज्ञान आदि सभी तरह की सैकड़ों पुस्तकें यहां उपलब्ध थीं।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री राजमंगल पांडेय ने कहा —"बच्चे भविष्य का खजाना हैं। उन्हें महसूस होना चाहिए कि वे समाज के सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं। चाहे बच्चा गांव का हो या शहर का, उसे अच्छी से अच्छी शिक्षा और अच्छी किताबें मिलनी चाहिएं। हमसे बाद में स्वतंत्र हुए देशों में बच्चों की स्थिति बहुत अच्छी है। हमें सोचना चाहिए कि हम अपने बच्चों को उतना सब कुछ क्यों नहीं दे पा रहे हैं।"

'नेशनल बुक ट्रस्ट' के अध्यक्ष श्री आनंदस्वरूप ने कहा—"हम पूरी कोशिश कर रहे हैं कि किताबें बहुत कम दाम पर बच्चों को मिल सकें। यह मेला ऐसी ही एक छोटी-सी कोशिश है।"

ट्रस्ट के निदेशक श्री अरविंदकुमार ने बाल पुस्तकों के बढ़ते मूल्य पर चिंता प्रकट की।

इस मेले में बच्चों के लिए चित्रकला, कविता पाठ, कहानी पाठ आदि प्रतियोगिताएं भी की गईं। मेला दस दिन चला।

धर्म पर विश्वकोश

टोरंटो। हिंदू धर्म पर एक विश्वकोश तैयार किया जा रहा है। इसका पहला शब्द अयोध्या होगा। इसे पिट्स बर्ग स्थित 'हिंदू हेरिटेज रिसर्च फाउंडेशन' तैयार कर रहा है। फाउंडेशन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती ने यह जानकारी दी। यह विश्वकोश १९९३ में बाजार में आ जाएगा।

खिलौनों का व्यापार

नई दिल्ली। खिलौना व्यवसाय अब बड़ा उद्योग बन चुका है। पिछले दिनों इस उद्योग ने एक अरब रुपए का व्यापार किया।

मछली कैसी है

वाशिंगटन। तीन बीमार ह्वेल मछलियों को ठीक कर समुद्र में छोड़ दिया गया। इनमें सबसे बड़ी मछली की पीठ पर बैटरी से चलने वाला एक ट्रांसमीटर बांध दिया गया। यह ट्रांसमीटर मौसम संबंधी एक उपग्रह को ह्वेल के बारे में पूरी जानकारी देता था। उपग्रह के जरिए यह जानकारी वैज्ञानिकों को मिलती थी।

भारत से मुझे प्यार है

नई दिल्ली। मानवता के लिए 'घनश्याम दास बिरला अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार' इस वर्ष हरमन बोंडी को दिया गया है। पुरस्कार में पांच लाख रुपए नकद और प्रमाण-पत्र दिया जाता है। श्री बोंडी 'ब्रिटिश ह्यूमनिस्ट एसोसिएशन' के अध्यक्ष हैं। उनका कहना है कि भारत एक अनोखा देश है। मुझे भारत से बहुत प्यार है।

हिन्दुस्तान टाइम्स को पुरस्कार

नई दिल्ली। हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह को युनिसेफ के कार्यकारी निदेशक श्री जेम्स पी. ग्रांट ने पुरस्कार दिया। श्री ग्रांट का कहना था कि इन प्रकाशनों ने बच्चों के कार्यक्रमों को लाखों लोगों तक पहुंचाने में सहायता की है। हिन्दुस्तान टाइम्स लि. की ओर से मुद्रक-प्रकाशक श्री राजेन्द्र प्रसाद ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

बंदरों की दावत

बैंकाक। यहां से कुछ दूर एक अनोखी दावत हुई। छह सौ मेहमानों ने मेज पर बैठकर पेट भर खाया और छीन-झपट की। यही नहीं मेहमानों को जब दावत के निमंत्रण पत्र दिए गए, तो पलभर में ही वे टुकड़े-टुकड़े हो गए। ये मेहमान थे—होटल के आसपास पाए जाने वाले बंदर। इस दावत पर छह लाख रु. खर्च हुए। होटल के मालिक का मानना है कि इन बंदरों के भाग्य के कारण ही उसका होटल खूब चलता है।

नन्ही नीरज शर्मा पुरस्कृत

नई दिल्ली। यहां 'हिमाचल दिवस' मनाया गया। हिमाचल के मुख्य मंत्री श्री शांताकुमार ने इसका उद्घाटन किया। राज्य के उद्योग मंत्री किशोरीलाल ने अध्यक्षता की। प्रदेश की सांस्कृतिक मंडलियों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। नन्ही छात्रा कु. नीरज शर्मा का एकल नृत्य बहुत सराहा गए। मुख्य मंत्री ने उत्कृष्ट एकल नृत्य के लिए कुमारी नीरज शर्मा को ३०० रुपए का विशेष पुरस्कार प्रदान किया।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बुराई-भलाई का विवेक ही मानव और पशु का अंतर करता है ।

—गोस्वामी तुलसीदास

जाड़े में कंपकपी उठे

जाड़ा आया, ठंड लाया । रंग-बिरंगे ऊनी कपड़े पहनने लगे । पर उन बच्चों की कौन कहे जिन पर गरम कपड़े न हों । अनाथ और बेसहारा बच्चे । दंगा हुआ, बीमारी फैली, बम फटा, गोली चली या लड़ाई हुई—बड़े मारे गए, बच्चे अनाथ हो गए । बच्चों की कोई गलती नहीं, पर उनके सपने ही लुट गए । क्या करें ? बहुत हुआ तो बालघर या अनाथ आश्रम में ऐसे कुछ बालक रखे गए । वहां भी न ठीक से खाना, न ठीक से कपड़े । ऐसे में जाड़ा बहुत ठंडा हो उठता है । रातों में दांत बजते रहते हैं ।

सरकार और अफसर ऊंट के मुंह में जीरा डाल देते हैं । कभी-कभी कोई दानदाता भी ऐसे बच्चों के लिए कुछ कपड़े दे देता है । पर ऐसे बालक बहुत हैं । जिन बच्चों के पास सब कुछ है, वे इन बच्चों के लिए कुछ करें ।

सूरज कैसा

मिआमी । अंतरिक्ष यान यूलिसिस अपनी अनोखी यात्रा पर निकला है । यह सूरज के बारे में दुनिया को नई जानकारी देगा । यूलिसिस का नाम एक ग्रीक पौराणिक योद्धा के नाम पर रखा गया है, जिसने अनजानी दुनिया की यात्राएं की थीं ।

सीमेंट की जिल्द

तोक्यो । हिदेकी तमानो अपनी पुस्तकों की जिल्द गत्ते की नहीं बनाते । वह जिल्द सीमेंट से बनवाते हैं । कभी-कभी तो वह स्टील की चादरों का उपयोग भी करते हैं । अभी उन्होंने लेखकों का एक कोश तैयार किया है । इस कोश का भार आठ किलो है । इसकी छापी गई तीन सौ प्रतियां हाथों हाथ बिक गईं ।

गाजर खाइए

न्यूयार्क । जी भरकर गाजर खाइए । जो लोग खूब गाजर खाते हैं, उन्हें हृदय रोग और लकवा नहीं होता । अमरीका में एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई ।

अंग्रेजी में हनुमान चालीसा

नई दिल्ली । चार्टर्ड एकाउंटेंट श्री आर.के. शर्मा ने हनुमान चालीसा का अंग्रेजी में अनुवाद किया है । श्री शर्मा को यह प्रेरणा गीता के अंग्रेजी अनुवाद से मिली । जल्दी ही इसे प्रकाशित किया जाएगा ।

देखो सींग लड़े

चित्तौड़गढ़ । यहां कुश्ती के एक अनोखे दंगल का आयोजन किया गया । इन कुश्तियों को लड़ने के लिए मध्य प्रदेश और राजस्थान के दूर-दराज इलाकों से भैंसे खूब सज-धजकर आए थे । इसमें सईद खान के भैंसे को स्वर्ण पदक दिया गया । इन कुश्तियों को देखने के लिए भारी भीड़ थी ।

नौसेना में महिलाएं

नई दिल्ली । भारतीय नौसेना में अब महिलाओं को भी भर्ती किया जाएगा । अभी इन्हें मोर्चे पर नहीं भेजा जाएगा । वे नौसेना दफ़्तरों में ही काम करेंगी ।

तब और अब

बम्बई । १९०३ में ताज होटल बनाया गया था । तब इसके एक कमरे का एक दिन का किराया छह रुपए था । आज एक कमरे का एक दिन का किराया दो हजार रुपए है । इसमें खाने-पीने का खर्चा शामिल नहीं है ।

दांतों से लारी

मास्को । सोवियत संघ में एक क्लब खोला गया है । इसके सदस्य वे लोग हो सकते हैं, जो अनोखे करतब कर सकते हैं । इसी क्लब का सदस्य सुलूशविकी है । उसकी उम्र सत्रह वर्ष है । वह लोहे के तार में फंसाकर एक लारी को दांतों से पैंतीस मीटर तक खींच सकता है ।

व्यायाम और दूरदर्शन

वाशिंगटन । जो बच्चे दो घंटे से ज्यादा दूरदर्शन देखते हैं, उन्हें व्यायाम जरूर करना चाहिए । दूरदर्शन देखने वाले बच्चे ज्यादा खाते हैं और मोटे हो जाते हैं । वजन बढ़ने से तरह-तरह की बीमारियां हो सकती हैं ।

सपना पूरा हुआ

अहमदाबाद । विट्ठल दास पंचोटिया छियासी वर्ष के हैं । पंचोटिया गांधी जी के शिष्य हैं । उनके मन में इच्छा थी कि वह गांधी बनें । अब वह गांधी जी पर एक फिल्म बना रहे हैं । फिल्म में गांधी भी वही बने हैं ।

स्वर्ग की सीढ़ी

लंदन । ब्रिटेन के मशहूर वैज्ञानिक हैं पाल बिर्च । पाल बिर्च दूसरे वैज्ञानिकों के साथ ऐसी लिफ्ट बनाने में लगे हैं, जो धरती से अंतरिक्ष तक जाएगी । तब अंतरिक्ष शटल आदि की जरूरत नहीं रहेगी । यह लिफ्टनुमा गलियारा बाईस हजार तीन सौ किलो मीटर ऊंचा होगा ।

हाथियों के लिए नए वन

नई दिल्ली। वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने 'प्रोजेक्ट एलिफेंट' योजना तैयार की है। इस योजना के तहत हाथियों के लिए ऐसा वातावरण बनाया जाएगा, जिससे वे आराम से रह सकें। उन्हें खाने की कमी न हो। खाने की तलाश में हाथी काफी फसल नष्ट कर देते हैं। इस समय देश में बीस हजार हाथी हैं।

भीख मत मांगो

न्यूयार्क। न्यूयार्क और उसके आसपास के नगरों में भीख मांगने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। अमरीका के पचीस राज्यों में भीख मांगने पर पहले से ही पाबंदी है।

जापान के नए राजा

तोक्यो। जापान के नए सम्राट अकिहितो का राज्याभिषेक किया गया। इस समारोह में १६० देशों के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तथा प्रमुख नेताओं ने भाग लिया। समारोह बारह दिन चला।

चाकलेट ही चाकलेट

लंदन। ब्रिटेन की एक कम्पनी ने बहुत बड़ा चाकलेट बनाया। इसकी लम्बाई डेढ़ मीटर और चौड़ाई पौन मीटर थी। इसे रैपर में लपेटा भी गया था। बहुतों ने इसे चाकलेट कम्पनी का विज्ञापन समझा। इसका वजन १३५ किलो था। बाद में इसे बच्चों के एक अस्पताल को भेंट कर दिया गया।

पिल्ले नहाएं शेम्पू से

बम्बई। शीबा साढ़े तीन वर्ष की है। उसने एक साथ बारह पिल्लों को जन्म दिया है। शीबा को देखने वालों की भीड़ लगी है। यह डाबर मैन प्रजाति की कुतिया है। इसके बच्चों की विशेष देखभाल करनी पड़ती है। उन्हें बोतल से दूध पिलाया जाता है। शैम्पू और डिटाल से नहलाया जाता है।

अद्भुत कला दीर्घा

बान। बर्लिन की दीवार के बचे हुए हिस्सों में से, डेढ़ किलोमीटर की दीवार को खुली कला दीर्घा बनाया गया है। इस दीर्घा को कुछ कलाकारों ने मिलकर बनाया है। इस दीवार पर मशहूर कलाकारों ने ढेरों चित्र बनाए हैं। कहा जाता है कि यह विश्व की सबसे लम्बी कला दीर्घा है।

साइकिल चोरों से

कोपेनहेगन। पिछले दिनों डेनमार्क में साइकिलों की चोरी बहुत बढ़ गई। लोगों ने चोरों से निपटने का नया तरीका निकाला। पांच हजार साइकिल मालिकों ने एक जुलूस निकाला। साइकिलों पर बड़े-बड़े अक्षरों पर चोरों से निवेदन किया गया था—'यदि आपको साइकिल की जरूरत है, तो ले जाएं। जब तक चाहें, मुफ़्त सैर करें। शर्त यही है कि साइकिल वहीं वापस रख जाएं।'

नन्हा बजाए वायलिन

प्राग। चैकोस्लोवाकिया में पांच वर्ष का जकुर ट्रास्कर बहुत प्रसिद्ध वायलिन वादक है। उसके पिता भी बहुत अच्छा वायलिन बजाते हैं। तीन वर्ष का था तभी से जकुर ने वायलिन बजाना सीख लिया था।

अच्छाई की विजय

संयुक्तराष्ट्र। सोवियत संघ ने यहां के बाग में एक प्रतिमा लगाई है। प्रतिमा का नाम है—अच्छाई की बुराई पर विजय। यह प्रतिमा ४० टन कांसे से बनी, ३९ फीट ऊंची है।

फैक्ट्री में बाघ

त्रिचरापल्ली। दस वर्षों से सीमेंट की एक फैक्ट्री बंद पड़ी थी। न जाने कैसे उसमें बाघों का बसेरा हो गया। वहां बाघ के दो नन्हें शिशु मिले।

नन्हे समाचार

□ यूनान की राजधानी एथेंस के पास छोटा-सा गांव है— लायकोव्रिसी। इसे सूरज का गांव कहा जाता है। वहां सारे काम सौर ऊर्जा से किए जाते हैं।

□ तेज गेंदबाज कपिलदेव टैस्ट क्रिकेट के इतिहास में दूसरे सबसे अधिक विकेट लेने वाले खिलाड़ी बन गए हैं।

□ फ्रांस की एक संस्था, गरीब बच्चों को मौज-मजे की छुट्टियां बिताने के लिए वहां के धनी परिवारों के पास भेजती है। इसे बच्चों ने बहुत पसंद किया है।

□ बर्बी अमरीका की प्रसिद्ध गुड़िया है। पिछले दिनों न्यूयार्क शहर में बर्बी सम्मेलन हुआ। उसमें भारत सहित पूरी दुनिया के अनेक बच्चों ने भाग लिया।

□ इंग्लैंड में पांच साल की एक लड़की है—लुसिंडा कैश गिब्सन। वह बहुत प्रतिभाशाली है। वह चाहती है कि उसे जल्दी-जल्दी ऊंची कक्षाओं में चढ़ा दिया जाए। पर स्कूल वाले कह देते हैं—"तुम तो अभी छोटी बच्ची हो।"

□ दो जर्मन युवक साइकिलों पर विश्व यात्रा के लिए निकले हैं। वे ५०,००० किलोमीटर की दूरी तय करेंगे।

□ एक जापानी दूसरे महायुद्ध में गायब हो गया था। वह ४४ वर्ष बाद अपने घर लौटा। वैसे १९६४ में उसे मृत समझकर, शोक सभा भी कर दी गई थी।

□ शिमला के हिमाचल संग्रहालय में लकड़ी की दुर्लभ कलाकृतियां रखी गई हैं।

□ उड़ीसा सरकार ने पुरी जिले में एक स्थान पर विशेष पेड़ लगाने का निश्चय किया है ताकि हर वर्ष भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा के रथ बनाने के लिए लकड़ी मिलती रहे।

□ जेम्स जोजेफ नामक एक व्यक्ति ने उलटे दौड़ते हुए १.६ किलोमीटर की दूरी तय की।

सचित्र समाचार

उ.प्र. संगीत-नाटक अकादमी ने नृत्य प्रतियोगिता की। नन्ही दीप्ति सिंह को प्रथम पुरस्कार मिला। →



दिल्ली में लोक-उत्सव हुआ। सैकड़ों कलाकारों ने इसमें भाग लिया। एक चित्र। →







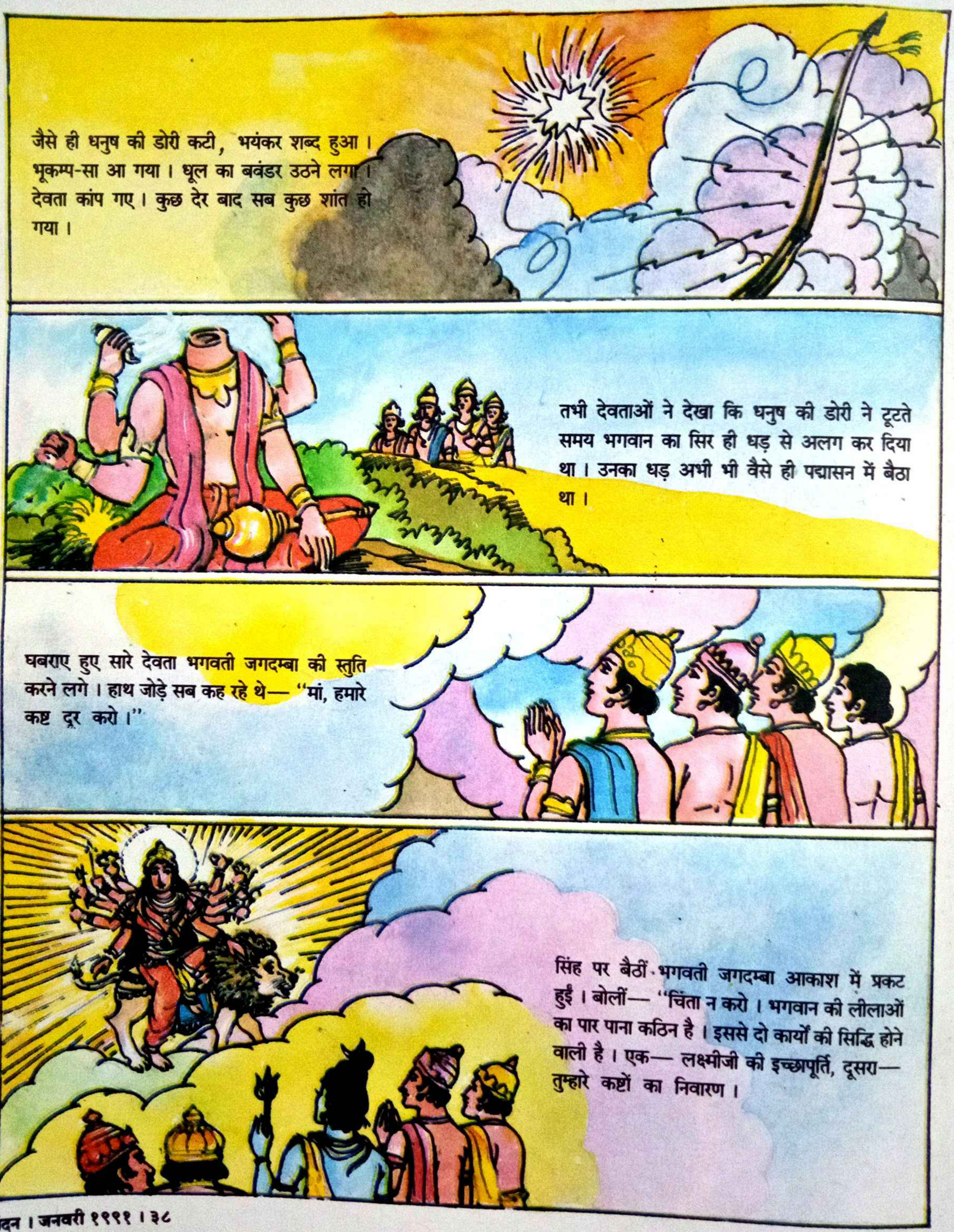
←

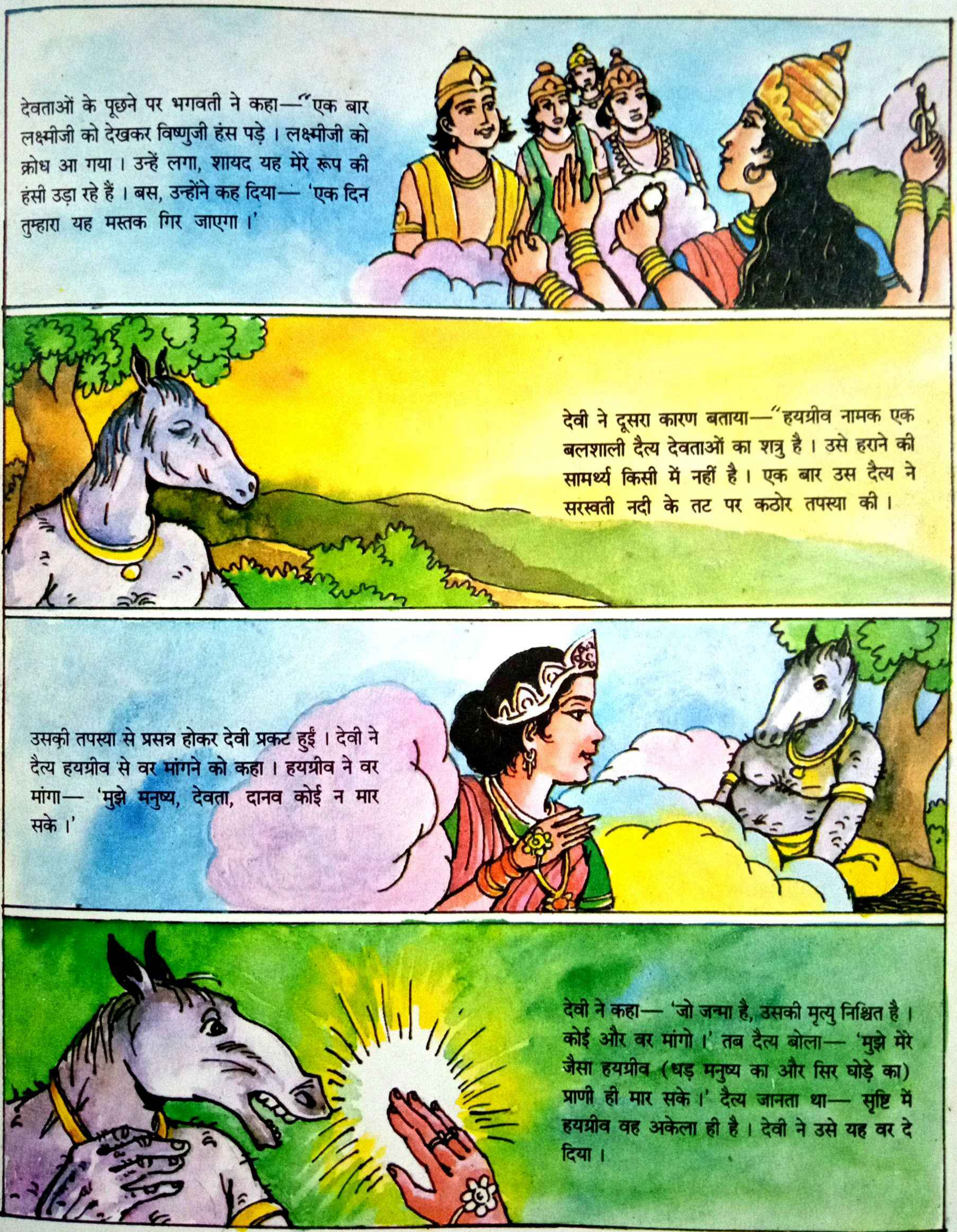
बाल कल्याण परिषद ने तेइस बच्चों को साहस और वीरता के लिए पुरस्कृत किया।

१. ए. श्रीकांत, २. मानसू शेषय्या (आंध्र), ३. गोविंद चंद्राकर, ४. तेजस साह (म. प्र.), ५. नरेंद्र सी. साए, ६. कौशलकिशोर (उ. प्र.), ७. मधुमाया क्षेत्रीय (सिक्किम), ८. धूड़ीबेन खोड़ा बाई (गुज.), ९. पद्नागंधा मिश्र (उड़ीसा), १०. शीला एपन, ११. बीनू टी. अब्राहम, १२. के. के. इस्माइल, १३. नीथू एम. जी (केरल), १४. पूनमकुमारी (दिल्ली), १५. सुरजीत खनिकार (असम), १६. अनिलसागर गोवंडे, १७. रमेश यशवंत मुरे, १८. गौतम सावंत देसाई, १९. पवन रूपचंद अग्रवाल, २०. सुभाष चलवासु, २१. भीका विभा शिंदे (चित्र नहीं) (महाराष्ट्र), २२. शिवराम कृष्ण सरन कन्हिलाल (हिमाचल), २३. ध्रुव कौल (पंजाब)।

हय ग्रीव


भगवान विष्णु बहुत समय तक दानवों से युद्ध करते रहे। थक गए, तो विश्राम करने बैकुण्ठधाम आए। धनुष को धरातल पर टेककर उसी के सहारे पदमासन में बैठ गए। फिर घोर नींद में डूब गए।
देवताओं ने एक यज्ञ करने की ठानी। दानवों से यज्ञ की रक्षा की जा सके, इसी अभिप्राय से इंद्र, ब्रह्माजी आदि देवता विष्णुजी से मिलने बैकुण्ठधाम गए। वहां धनुष के सहारे उन्हें निद्रामग्न देखा। जगाने की काफी कोशिश की, किंतु विष्णुजी की नींद न टूटी। इंद्र ने ब्रह्माजी से कहा— "न जाने प्रभु, कौन-सी लीला रचने वाले हैं!"
भगवान शंकर देवताओं से बोले— "इन्हें जगाना जरूरी है। बिना इनके यज्ञ पूरा कैसे होगा?" देवताओं ने ब्रह्माजी की ओर देखा। ब्रह्माजी ने कहा— "मैं एक कीड़ा उत्पन्न करता हूं। वह धनुष की डोरी काट देगा। सम्भव है, तब इनकी नींद टूट जाए।"
ब्रह्माजी ने कीड़ा उत्पन्न किया। वह धनुष की डोरी को काटने लगा। देवता दम साधे खड़े हुए यह दृश्य देख रहे थे।


जैसे ही धनुष की डोरी कटी, भयंकर शब्द हुआ। भूकम्प-सा आ गया। धूल का बवंडर उठने लगा। देवता कांप गए। कुछ देर बाद सब कुछ शांत हो गया।
तभी देवताओं ने देखा कि धनुष की डोरी ने टूटते समय भगवान का सिर ही धड़ से अलग कर दिया था। उनका धड़ अभी भी वैसे ही पद्मासन में बैठा था।
घबराए हुए सारे देवता भगवती जगदम्बा की स्तुति करने लगे। हाथ जोड़े सब कह रहे थे— "मां, हमारे कष्ट दूर करो।"
सिंह पर बैठीं भगवती जगदम्बा आकाश में प्रकट हुईं। बोलीं— "चिंता न करो। भगवान की लीलाओं का पार पाना कठिन है। इससे दो कार्यों की सिद्धि होने वाली है। एक— लक्ष्मीजी की इच्छापूर्ति, दूसरा— तुम्हारे कष्टों का निवारण।


देवताओं के पूछने पर भगवती ने कहा—"एक बार लक्ष्मीजी को देखकर विष्णुजी हंस पड़े । लक्ष्मीजी को क्रोध आ गया । उन्हें लगा, शायद यह मेरे रूप की हंसी उड़ा रहे हैं । बस, उन्होंने कह दिया— 'एक दिन तुम्हारा यह मस्तक गिर जाएगा ।'
देवी ने दूसरा कारण बताया—"हयग्रीव नामक एक बलशाली दैत्य देवताओं का शत्रु है । उसे हराने की सामर्थ्य किसी में नहीं है । एक बार उस दैत्य ने सरस्वती नदी के तट पर कठोर तपस्या की ।
उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर देवी प्रकट हुईं । देवी ने दैत्य हयग्रीव से वर मांगने को कहा । हयग्रीव ने वर मांगा— 'मुझे मनुष्य, देवता, दानव कोई न मार सके ।'
देवी ने कहा— 'जो जन्मा है, उसकी मृत्यु निश्चित है । कोई और वर मांगो ।' तब दैत्य बोला— 'मुझे मेरे जैसा हयग्रीव (धड़ मनुष्य का और सिर घोड़े का) प्राणी ही मार सके ।' दैत्य जानता था— सृष्टि में हयग्रीव वह अकेला ही है । देवी ने उसे यह वर दे दिया ।


देवी के कहने पर ब्रह्माजी ने घोड़े का सिर भगवान विष्णु के धड़ से जोड़ दिया। सिर जुड़ते ही भगवान की नींद टूट गई। वह उठकर खड़े हो गए।
शंख-चक्रधारी भगवान हयग्रीव की देवता स्तुति करने लगे। हयग्रीव रूपधारी भगवान बोले— "देवताओ, पहले मैं उस दैत्य का वध कर दूं, तभी निर्विघ्न होकर यज्ञ करेंगे।"
हयग्रीव भगवान का हयग्रीव दैत्य से काफी समय तक युद्ध चलता रहा। अंत में हयग्रीव भगवान ने अपने सुदर्शन चक्र से दैत्य का सिर अलग कर दिया।
भगवान विष्णु दैत्य का वध कर लौट आए। क्षीरसागर में अभी तक उनका पहला सिर सुरक्षित था। अपने असली रूप में आकर वह देवताओं के साथ यज्ञ करने लगे।

परी ने कहा

—यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र'

बहुत दिन पहले की बात है। मोहनपुर में एक लखपति सेठ गोरधन रहता था। उसके एक ही बेटा था। बाप-बेटे को धन का इतना घमंड था कि वे किसी को कुछ समझते ही नहीं थे। बेटे का नाम मृदंग था। वह बहुत ही दुष्ट स्वभाव का था।

उनके यहां एक नौकर था। उसका नाम सुमन था। वह बहुत गरीब था। उसकी मां गंगा सेठ के यहां काम करती थी। वह गुलामों जैसी जिंदगी जी रही थी। सेठानी उस पर खूब अत्याचार करती। सुमन की बड़ी इच्छा थी कि वह कहीं से पंद्रह स्वर्ण मुद्राएं लाए और अपनी मां को सेठ-सेठानी के अत्याचार से मुक्ति दिलाए। पर उस गरीब लड़के के लिए यह बड़ा कठिन था।

सुमन बहुत सुशील और बुद्धिमान लड़का था। जब सब सो जाते, तो वह रात को दीया जलाकर पढ़ता था। फिर चुपचाप जाकर अपनी मां के पास सो जाता। सुमन की मां गंगा भी बहुत सीधी-सादी और ईमानदार थी। जब सुमन के पिता का देहांत हुआ था, तब उसने पंद्रह स्वर्ण मुद्राओं का कर्ज सेठ गोरधन से लिया था। कर्ज देते समय सेठ ने साफ-साफ कह दिया था कि जब तक वह धन नहीं लौटा देगी, तब तक उसे उसके यहां ही काम करना पड़ेगा।

सुमन ने एक दिन अपनी मां से पूछा—"मां, मेरे पिता जी क्या करते थे?"

गंगा ने उदास होकर बताया—"बेटा, वह व्यापार करते थे। हमारे घर में खूब सुख-समृद्धि थी। तुम जब पैदा हुए थे, तब चंदन का पलना और रेशम की डोरी आई थी। नौकर-चाकर थे, पर तुम्हारे पिता एकाएक बीमार पड़ गए। बैठे-बैठे वह अचेत हो जाते थे। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ता गया। वैद्यों ने खूब इलाज किया। पर रोग ठीक होने में नहीं आ रहा था। मुनीम ने सारा व्यापार चौपट कर दिया। यहां तक कि हमारी हवेली भी बिक गई। इसी समय तुम्हारे पिता का देहांत हो गया। ऊंचा खानदान था हमारा। मुझे तुम्हारे पिता का तेरहवां करना था। मैंने पंद्रह स्वर्ण मुद्राएं सेठ गोरधनदास से उधार लीं। फिर तो हमारे कष्ट और बढ़ गए।" कहते-कहते गंगा फूट-फूटकर रो पड़ी।

सुमन अपनी मां पर होते हुए अत्याचारों को देखकर बहुत दुखी होता था। वह खूब पढ़ता था। जब वह लकड़ी तोड़ने जाता था, तब एक मुनि के आश्रम में पीपल के तले बैठ जाता था। वहां कई छात्र पढ़ते थे। मुनि ने एक दिन कहा—"ज्ञान से बढ़कर धन कोई और नहीं है।" तब से सुमन और अधिक मन लगाकर पढ़ने लगा।

लेकिन मृदंग को एक दिन पता चला, तो उसने पिता से कहकर सुमन की पढ़ाई रुकवा दी। सुमन और निराश हो गया।

सुमन को एक ही चिंता थी कि वह अपनी मां को कैसे मुक्ति दिलाए। वह आठों पहर यही विचारता रहता था, पर उसे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

एक बार की बात है, सुमन की मां बीमार थी। फिर भी सेठ गोरधन की पत्नी उससे जबरदस्ती काम करा रही थी। डांट भी रही थी। सफाई करते-करते अचानक गंगा के हाथ से कांच का जग गिरकर टूट





गया । सेठानी को क्रोध आ गया । आग बबूला होकर बोली—"तुझे मैं ग्यारह कोड़े लगाऊंगी । तूने मेरा अमूल्य जग तोड़ दिया ।"

सेठानी कोड़े मारना ही चाहती थी, तभी सुमन बीच में आ गया। उसने दोनों हाथ फैला दिए। कहा—"आप मेरी मां को मत मारिए । उसके कसूर की सजा मुझे दें। मेरी मां बीमार है ।"

सेठानी चिढ़कर बोली—"अरे वाह, तेरी मां की सजा तुझे क्यों ?"

तब तक मृदंग ने कोड़ा हाथ में ले लिया। बोला—"गुलाम तो होते ही पिटने के लिए हैं । ज्यादा बोला, तो तेरी भी पिटाई होगी ।"

सुमन अब ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सका । उसने मृदंग के हाथ से कोड़ा छीना और भाग खड़ा हुआ ।

सुमन भागता रहा-भागता रहा । उसने पीछे घूमकर देखा तक नहीं । वह एक घनघोर जंगल में पहुंच गया । वहां एक टूटा किला था । उस टूटे किले के पास पुराना तालाब था । उस तालाब के चारों ओर वृक्ष थे । वे वृक्ष वर्षा की कमी के कारण सूख रहे थे ।

तालाब के आसपास फलों के पेड़ लगे हुए थे । उन पेड़ों में जामुन, आम और केलों के पेड़ अधिक थे । बहुत ही रमणीक स्थान था वह । तालाब में पानी देखकर सुमन ने सोचा—'मैं यहां पेड़ों को पानी दूंगा और इनकी सेवा करूंगा ।'

बस,उसने छोटी-छोटी नालियां खोदीं । फिर केले के पत्तों को जोड़कर एक बड़ा दोना बनाया । उस दोने से वह नालियों में पानी डालने लगा । देखते-देखते सारे पेड़ हरे हो गए, पर सुमन परेशान था । वह अपनी प्यारी मां के लिए बहुत बेचैन रहता था और कभी-कभी रो पड़ता था ।

एक रात सुमन पेड़ के नीचे सोया हुआ था । एकाएक तूफान-सा आया । उसकी आंखें खुल गईं । उसने देखा कि तूफान नहीं, बवंडर था । तभी उसे लगा कि तीन वृक्षों के झुरमुट में से एक सुंदर युवती आ रही है । उसके दो बड़े-बड़े पंख थे । वृक्षों की छाल जैसे अनोखे वस्त्र पहन रखे थे । सुमन ने ऐसी युवती कभी नहीं देखी थी ।

वह युवती धीरे-धीरे चलकर सुमन के पास आई । सुमन डर गया । घबराकर बोला—"तुम....तुम कौन हो ?"

—मैं वृक्षपरी हूं ।"

"वृक्षपरी ?"—उसने आश्चर्य से कहा— "तुम इतने दिन कहां थीं ?"

—"यहीं थी । इन्हीं वृक्षों में रहती थी, पर मैं बीमार थी ।"

सुमन ने आश्चर्य से कहा—"बीमार थीं, क्या तुम्हें बुखार आ गया था ? मैंने अपनी मां से परियों की कहानियां सुनी हैं । उनमें तो कोई परी बीमार नहीं होती ।"

वृक्षपरी ने मुसकराकर कहा—"दरअसल मैं इन वृक्षों में रहती हूं । जब ये वृक्ष सूखने लगते हैं, तब मैं भी बीमार हो जाती हूं । तुमने मुझे नया जीवन दिया, इसके लिए मैं तुम्हारी आभारी हूं ।"

"वृक्षपरी, तुम मुझसे सचमुच प्रसन्न हो ?"—उसने परी से पूछा ।

"हां, बहुत खुश हूं ।" —परी ने कहा— "मांगो, तुम क्या चाहते हो ?"

सुमन ने कहा—"वृक्षपरी, मैं केवल पंद्रह स्वर्ण मुद्राएं चाहता हूं, जिनसे मैं अपनी मां को निष्ठुर साहूकार के चंगुल से छुड़ा सकूं ।"

वृक्षपरी ने उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरा। कहा—"तुम सचमुच बहुत अच्छे लड़के हो। तुम्हें पंद्रह स्वर्ण मुद्राएं नहीं, लाखों स्वर्ण मुद्राएं मिलेंगी। ऐसा करो, इस टूटे किले में जाओ। इसमें एक खजाना है। उसमें बहुत सारा धन है। जितना चाहो, ले लो।"

—"वृक्षपरी, यह टूटा किला किसका है?"

वृक्षपरी ने लम्बा सांस लिया। कहा—"यह टूटा किला ठाकुर जसवंतसिंह का है। वह बहुत लालची था। इस किले के दक्षिण की ओर जो मैदान है, वह कभी चंदन की लकड़ी का वन था। ठाकुर जसवंत ने चंदन वन का सफाया करना शुरू कर दिया। लकड़ियों के एक व्यापारी के साथ मिलकर खूब मनमानी की। उस पैसे से ठाकुर ने यह किला बना लिया। फिर भी उसका लालच कम नहीं हुआ। उसने चंदन के साथ-साथ दूसरे हरे वृक्ष भी काट-काटकर बेचने शुरू कर दिए। लेकिन एक दिन चंदन वन में घूमते हुए जसवंत के इकलौते बेटे को सांप ने काट लिया। जसवंत क्रोध में अंधा हो गया। उसने सारे चंदन वन में आग लगा दी। सारा जंगल स्वाहा हो गया.... ।

"उसी समय जोर का तूफान उठा। बादल गरजने लगे, बिजली कड़कने लगी। थोड़ी देर में मूसलधार वर्षा होने लगी। इतनी भयानक वर्षा हुई कि लगा प्रलय हो जाएगी। किले के भीतर बैठा ठाकुर जसवंत बिजली गिरने से जलकर भस्म हो गया। किला टूट गया। यह हरा-भरा वन उजड़ गया।"

—"ओह! यह तो अच्छा नहीं हुआ वृक्षपरी।"

वृक्षपरी ने मुसकराते हुए कहा— "जो प्रकृति का रंग-रूप बिगाड़ता है, प्रकृति उसे बिगाड़ देती है। जसवंत ने इतने वृक्ष काट-काटकर खूब धन कमाया था। वह धन इस किले में ही रखा हुआ है। सुमन, तुम जाओ। उस खजाने का सारा धन लेकर अपनी मां के साथ सुख से रहो।"

सुमन ने नम्रता से कहा—"यह धन तो मेरा नहीं है। यह तो हरे-भरे पेड़ों को काटकर इकट्ठा किया हुआ धन है। मैं कैसे ले सकता हूं?"

वृक्षपरी ने सोचकर कहा—"हां, यह बात ठीक है। धरती के भीतर छिपा सारा धन राजा का होता है। जिस धन का कोई मालिक नहीं होता है, उसका मालिक भी राजा होता है। तुम यह धन लेकर राजा के पास जाओ। वह तुम्हारे सारे संकट दूर कर देंगे।"

सुमन उसी क्षण राज दरबार की ओर चल पड़ा। जब राजा ने सारी बात सुनी, वह बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सुमन की पीठ थपथपाते हुए कहा—"मैं तुम्हारे हर काम से प्रसन्न हूं। बोलो, क्या चाहते हो, मांगो?"

"महाराज, मेरी मां को गुलामी से छुड़ाया जाए और आपके राज्य में कोई भी आदमी गुलाम न रहे।" —सुमन ने कहा।

राजा उसकी बात से प्रसन्न हुए। उन्होंने आदेश निकाल दिया कि भविष्य में कोई आदमी किसी अन्य आदमी को बंधक रखेगा, तो उसे मृत्युदंड दिया जाएगा।

अब सुमन अपने घर लौटा। अपनी मां से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ। सेठ गोरधन और उसके बेटे को उसने क्षमा कर दिया।

राजा ने सुमन को पढ़ाया-लिखाया। जब वह बड़ा हुआ, तब उसे वन-मंत्री बना दिया गया। उसने खूब नए वृक्ष लगवाए। वृक्षपरी अब प्रसन्न थी। उसकी मुसकान देख, सुमन को लगता, जैसे परी उसे आशीर्वाद दे रही हो। ●



सोना घाटी

— सुरेंद्र अंचल

अफ्रीका के बीचोबीच कांगो नदी बहती है। इसके आसपास भयंकर घने वन हैं जिन्हें भूमध्य रेखीय वन कहते हैं। साल भर भयंकर गरमी के साथ रोज मूसलाधार वर्षा हुआ करती है। ऐसे भयंकर गर्मी और नमी वाले जंगलों में हब्शियों की छोटी-छोटी बस्तियां हैं।

ऐसी ही एक बस्ती का मुखिया था—टुम्पुटू।

टुम्पुटू ने सींग के लम्बे बाजे में फूंक मारी। यह हब्शियों को इकट्ठा होने का आदेश था। थोड़ी ही देर में बस्ती के लोग इकट्ठे हो गए।

टुम्पुटू ने गम्भीर स्वर में कहा—"रोज-रोज की बरसात से हम परेशान हैं। यहां जमीन पर दलदल और पेड़ों पर सांप हैं। मेरे बूढ़े बाबा कहा करते थे कि यहां से दक्षिण की ओर एक रेतीला मैदान है। वह ऊंटों का देश है। उसे कालाहारी कहते हैं। वहां न ऐसी वर्षा है, न ऐसी सर्दी और गर्मी। वहीं कहीं एक सोने की घाटी है। हमें वहीं चलना चाहिए।

एक बूढ़ा बोला—"तुम लोग पागल तो नहीं हो गए! अपना वतन कैसा भी हो, सबसे अच्छा होता है। सोने की घाटी का भूत तुम सबको खा जाएगा।"

कबीले के ओझा ने कहा—"बूढ़े तो कमजोर और बुजदिल होते हैं। इनकी बातों पर ध्यान मत दो। मैंने भी सुना है कि वहां रेत भी सोने की है। कंकड़ों की तरह हीरे बिखरे रहते हैं। हमें जरूर चलना चाहिए।"

काफिला चल पड़ा।

एक...दो...तीन...दिन पीछे छूटते गए। फल खाते, झरनों का पानी पीते वे बढ़ते गए। अब सघन वन कम होने लगे। घास का मैदान आया। घास का मैदान बीता, तो रेत फैली दिखाई दी।

सभी लोग खुशी में चिल्लाने लगे।

टुम्पुटू मुखिया ने सींग का बाजा बजाया। बोला—"मूर्खो, चिल्लाओ मत। अब सावधान रहना है। रेतीली आंधियां चलेंगी। मगर मेरे बहादुर साथियो! घबराना मत। अब मंजिल दूर नहीं है।"

ओझा बोला—"मगर भूख का क्या करें! इधर ऐसे पेड़ भी नहीं, जिनके फल तोड़कर खा सकें!"

यह सुनकर मुखिया भी परेशान हो गया। लेकिन उसने साथियों से बढ़ चलने को कहा।

काफिला फिर चल पड़ा। लोभ उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा था। सोने की घाटी का भूत उन्हें अपनी ओर खींच रहा था।

भयंकर गरमी, कठिन मार्ग। लेकिन वे बढ़ते गए। एक दिन सचमुच वे सोने की घाटी में जा पहुंचे। वहां रेत भी सोने जैसी पीली, हीरे कंकड़ों की तरह बिखरे हुए। सब तरफ सोने की छोटी-छोटी पीली पहाड़ियां, गरम और ठंडे पानी के सोते भी कहीं-कहीं उमड़ रहे थे। सब खुश होकर नाच उठे। वे दुःख भूल गए।

पर एक-दो दिन में ही परेशान हो उठे। वहां खाने के लिए कुछ नहीं था। अब सोने और हीरों का आकर्षण कम होने लगा।

ओझा भूख से बेचैन, मोतियों को मुंह में डालता और थू...थू करता। वह रोने लगा—"मुखिया! नहीं चाहिएं हमें सोना और हीरे। ये सब तो पत्थर हैं! हमें भोजन चाहिए!"

सभी चीखे—"हां, हमें रोटी दो—रोटी दो।"

ओझा गुर्राया—"मुखिया, तुमने हमको कहीं का न छोड़ा। यहां तक आने में हमारे कितने साथी मर गए। इस सोने की घाटी से तो अपने गांव में मिल रही मेहनत की रोटी अच्छी थी।"

मुखिया ने सिर झुका लिया। वह पछता रहा था—"मैं भी तो भूखा हूं। हम सब पर लोभ का भूत सवार हो गया था—सोने की घाटी का भूत। हमने बड़े-बूढ़ों की सीख नहीं मानी। अब जितनी जल्दी हो सके वापस चलना चाहिए।"

सब वापस भाग चले। लेकिन भूखे कहां तक भागते! गरम, सुनहरी रेत पर वे तड़प-तड़पकर मर गए। रेत पर हीरे बिखरे थे, सब तरफ सुनहरी पहाड़ियां चमक रही थीं। ●

खोई हुई बेटी

—वीणा वर्मा

कनकपुर के राजा भानुप्रताप बहुत ही साहसी, शक्तिशाली तथा सहृदय थे। प्रजा उनसे बहुत प्रसन्न थी। राजा भानुप्रताप किसी काम को आरम्भ करने से पूर्व अपने मंत्री जयसिंह की राय अवश्य लेते थे।

पड़ोसी देश का राजा कोकालसिंह अत्यंत दुष्ट तथा धूर्त था। कनकपुर की सुख, शांति एवं उन्नति देख-देखकर उसका कलेजा फटता रहता। हर समय यही सोचा करता था कि कैसे कनकपुर को अपने अधीन कर लिया जाए। उसे पता था कि वह कनकपुर को जीत नहीं सकता, क्योंकि कनकपुर की विशाल सेना के सामने उसकी सेना का टिकना असम्भव था। अतः कोकालसिंह ने एक चाल चली। अपने एक भेदिए को उसने कनकपुर भेजा।

वहां कुछ दिन रहकर भेदिया स्वदेश लौटा। आकर कोकालसिंह से बोला—"महाराज, मंत्री जयसिंह की बेटी हंसा को आज से पंद्रह वर्ष पहले जब वह केवल दो वर्ष की थी, कुछ डाकू उठा ले गए थे। इस दुःख से अभी तक उसकी पत्नी हमेशा बीमार रहती है।"

कुछ ही दिनों बाद कोकाल ने उसी भेदिए को फिर कनकपुर भेजा। इस बार भेदिया साधु बनकर, इधर-उधर घूमने लगा। एक दिन मौका पाकर, वह कनकपुर के मंत्री के घर पर पहुंचा।

वहां उसने दरबान से कहा— "बेटा, आज रात भर के लिए आश्रय चाहिए। मुझे ब्रह्मनगरी जाना है।" मंत्री की पत्नी चंद्रा बड़ी ही दयालु थी। उसकी साधु-संतों में अपार श्रद्धा थी। वह साधु को आदर के साथ अंदर ले गई। साधु बने भेदिए ने उस दिन खूब छककर खाया। दूसरे दिन उसने चंद्रा की नौकरानी से कहा—"अच्छा बेटी। अपनी मालकिन से जाकर कहो, अब हम प्रस्थान करेंगे।" जब चंद्रा को मालूम हुआ कि साधु महाराज जा रहे हैं, तो उसने आकर साधु को प्रणाम किया।

साधु बने भेदिए ने चंद्रा के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"बेटी, हमसे तुम्हारा दुःख छिपा नहीं है। हम अपनी मन की आंखों से देख और समझ सकते हैं। तुम्हें तुम्हारी बेटी मिल सकती है। किंतु इसके लिए कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।"

यह सुनते ही चंद्रा ने व्याकुल होकर कहा—"बाबा, आप तो बहुत कुछ जानते हैं। अगर मेरी जान लेकर भी आप बेटी मुझे ला दें, तो मैं खुशी-खुशी अपनी जान भी दे दूंगी। आप कृपया कहें कि मुझे क्या करना होगा?"

साधु ने थोड़ी देर तक आंखें बंद करके ध्यान करने का अभिनय किया, फिर बोला—"अमावस के तीन दिन पहले ही उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर दो। दो रातें पैदल चलने के बाद एक जगह पांच साधुओं की टोली मिलेगी। साधुओं से लड़की का पिता याचना करे, तो साधु उन्हें उनकी बेटी से अवश्य मिला



देंगे। पर हां, एक बात का ध्यान रखना होगा। जब तक तुम्हारी बेटी यहां तुम्हारे पास नहीं आ जाती, तब तक ये राज की बातें किसी को बताना मत। अन्यथा कार्य सिद्ध नहीं होगा। अच्छा बेटी, अब मुझे विदा करो।'' कहकर भेदिया साधु चला गया।

दो दिनों के बाद मंत्री जयसिंह दौरे से लौटे। चंद्रा ने बड़े प्यार से उनसे बातें कीं। अन्य दिनों की अपेक्षा आज के बर्ताव में फर्क देखकर जयसिंह आश्चर्य चकित थे। बातों ही बातों में चंद्रा बोली—''आप यही चाहते हैं न कि मैं अच्छी तरह रहूं, खुश रहूं। देखिए, आज तक मैंने आपसे कुछ नहीं मांगा। किंतु आज आप मुझे वचन दीजिए कि मैं जो कहूंगी, आप उसे पूरा करेंगे। अन्यथा अब मैं जीवित नहीं रहूंगी।''

चंद्रा की ऐसी बहकी-बहकी बातें सुनकर मंत्री जयसिंह भावुक हो उठे। बोले—''तुम्हारे सिवाय दुनिया में मेरा और है ही कौन ? मैं तुम्हें वचन देता हूं— तुम जो कहोगी, मैं उसे अवश्य पूरा करूंगा।'' तब चंद्रा ने साधु की कही सारी बातें बताईं। बिलख-बिलख कर कहने लगी—''यदि आप मुझे जीवित देखना चाहते हैं, तो फिर मेरी बेटी मुझे ला दें।''

जयसिंह गम्भीर होकर बोले—''चंद्रा, हंसा तुम्हारी बेटी है, तो मेरी भी बेटी है। उससे तुम्हें जितना मोह और प्यार है, उतना मुझे भी है। यदि इस तरह हंसा मिल सकती है, तो मैं उसे ढूंढ़ने का पूरा प्रयास करूंगा। हालांकि कुछ साधु ढोंगी भी होते हैं। लेकिन परिणाम जो हो, मैं इस को कार्य करूंगा अवश्य।''

मंत्री जयसिंह अपने राजा भानुप्रताप से कोई भी बात नहीं छिपाते थे। लेकिन यह बात वह राजा को नहीं बता सके, क्योंकि अमावस में सिर्फ तीन दिन बाकी थे। चंद्रा से विदा लेकर जयसिंह उत्तर दिशा की ओर चल पड़े। रास्ता बड़ा ही दुर्गम था। आखिरकार अमावस की रात के एक दिन पहले उन्हें पांच साधुओं की टोली नजर आई। जैसे-तैसे जयसिंह साधुओं के पास पहुंच तो गए, किंतु कुछ कहने से पहले ही बेहोश होकर गिर पड़े।

मंत्री जयसिंह को जब होश आया, तो उन्होंने अपने आपको कई सिपाहियों से घिरा पाया। वहीं राजा जैसी पोशाक पहने, भारी-भरकम, काला-कलूटा राक्षस के समान रूप रंग वाला एक आदमी भी बैठा था। जयसिंह को होश में आया देख वह दुष्टतापूर्ण हंसी हंसता हुआ बोला—''बड़ी तीमारदारी के बाद तुम होश में आए हो। कहीं फिर बेहोश मत हो जाना।''

जयसिंह ने आश्चर्य से चारों तरफ देखते हुए कहा—''मैं कहां हूं ? और वे साधुगण कहां गए, मेरी बेटी कहां है ?''

सिपाहियों ने कहा—''अपनी जुबान बंद रखिए। देखते नहीं आपके सामने महाराज बैठे हैं।''

उसके बाद कोकालसिंह बोला—''मैं लंगूरपुर का राजा कोकालसिंह हूं। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए ?''

''महाराज, मैं कनकपुर देश का महामंत्री जयसिंह हूं। बड़े परिश्रम के बाद आपके राज्य में पहुंचा हूं। जो साधुगण मुझे मेरी बेटी हंसा से मिलाने वाले थे, वे यहां कहीं नजर नहीं आ रहे हैं। अब मैं क्या करूं ? मेरे तो प्राण जल्दी नहीं निकलेंगे, किंतु बेटी के गम में मेरी पत्नी चंद्रा अब जीवित नहीं रहेगी।''

कोकालसिंह बोला—''हम आपकी समस्या का समाधान कर देंगे। आप मेरे अतिथि हैं, कष्ट में भी हैं। इसलिए पहले हम आपकी दवा-दारू करेंगे, फिर आपका मनोरंजन करेंगे। बासंती नाम की नर्तकी मेरे दरबार में नई आई है। बहुत अच्छा नृत्य करती है।''

फिर जयसिंह का पूरा स्वागत किया गया। कोकालसिंह बोला—''मैं तुम्हें तुम्हारी बेटी से भी मिला दूंगा। अगर तुम चाहोगे, तो कनकपुर का आधा राज्य भी तुम्हें दे दूंगा। किंतु इससे पहले तुम्हें मेरी एक बात माननी पड़ेगी। तुम भानुप्रताप सिंह को उनके सारे जरूरी कागजात के साथ यहां ले आओ। हमें मालूम है, भानुप्रताप सिंह तुम पर बहुत विश्वास करते हैं। इतने दिनों से तुम वफादारी से उनका साथ निभाते आए हो। बदले में तुम्हें क्या मिला ? हम तुम्हें बेटी

भी देंगे और राज्य भी। तुम केवल भानुप्रताप को ले आओ।"

यह सुन जयसिंह गरजकर बोले—"कोकाल, मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। मुझे किसी चीज की कमी नहीं है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि राजा भानुप्रताप मुझे अपने भाई जैसा समझते हैं। मुझ पर उन्हें अटूट विश्वास है। मैं उनके साथ विश्वासघात नहीं कर सकता।"

कोकालसिंह यह सुनते ही चिल्लाकर बोला—"चुप रहो। हम सोचते थे, तुम आसानी से रास्ते पर आ जाओगे। पर लगता है हमें अपना ही तरीका अपनाना पड़ेगा। फिर भी हम तुम्हें एक मौका और देते हैं। कल सवेरे तक तुम अगर मेरी बात नहीं मानोगे, तो तुम्हें फांसी पर चढ़ा देंगे।" इतना कहकर कोकालसिंह महल में चला गया।

जयसिंह के चारों ओर कड़ा पहरा था। जयसिंह की नींद खुली, तो आधी रात बीत चुकी थी। और उन्हें झिंझोड़कर जगाने वाली थी नर्तकी बासंती। बासंती बोली—"बाबा, कोकालसिंह बड़ा ही जालिम राजा है। हम दोनों यहां से फौरन भाग चलें। अभी सारे लोग बेहोश पड़े हैं। मैंने ही इन्हें बेहोशी की दवा शर्बत में मिलाकर पिला दी थी।" जयसिंह झिझकते हुए उठे और दरवाजे की तरफ लपके। बासंती बोली—"नहीं बाबा, उधर से जाने में खतरा है। हम इधर चोर रास्ते से चलेंगे, ताकि जल्दी निकल सकें।" कहकर बासंती ने वहां रखी मूर्ति को एक ओर घुमाया, तो चोर रास्ता खुल गया।

जल्दी-जल्दी दोनों उसमें उतर गए। चोर रास्ते के बारे में किसी को मालूम नहीं था। वहां की एक पुरानी नौकरानी को ही पता था। एक दिन बासंती के बर्ताव से खुश होकर, उसने बतला दिया था।

दोनों जल्दी-जल्दी सुरंग पारकर बाहर निकले, तो चारों तरफ धूप फैल चुकी थी। जयसिंह के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि वह अपने देश की सीमा पर आ चुके हैं। जयसिंह बोले—"बेटी, ईश्वर तुम्हें सदा सुखी रखे। आज तुमने मेरी जान बचाकर मेरे ऊपर बड़ा भारी उपकार किया है। नहीं तो अपनी बेटी की याद में बेहाल मेरी पत्नी का न जाने क्या होता?"

यह सुन बासंती बोली—"पिता जी, मैं ही आपकी बेटी हंसा हूं। जो डाकू मुझे उठाकर ले गए थे, वे सब मुठभेड़ में मारे गए। सिर्फ एक सरदार बचा था जो मुझे लेकर दूसरे राज्य में भाग गया। वहीं वेश बदलकर रहने लगा। उसने सारे बुरे काम छोड़ दिए थे। उसी ने मुझे पढ़ाया-लिखाया, नृत्य आदि सिखलाया। उसकी भी मृत्यु हो गई। किंतु मरने से पहले उसने मुझे सब कुछ बता दिया। यह ताबीज भी दिया था। कहा था, इसमें तुम्हारे माता-पिता का चित्र तथा तुम्हारा नाम-पता सब है इतना कहकर वह इस दुनिया में मुझे अकेला छोड़कर सदा के लिए चला गया।

"मेरा मन बड़ा दुखी था। मैंने सोचा, मुझे डाकू उठा लाए थे। इतने दिनों बाद यदि मेरे माता-पिता ने मुझे स्वीकार करने से इंकार कर दिया, तो फिर मेरा क्या होगा? यही सब सोचती, मैं राज दरबार पहुंची। ईश्वर की कृपा से वहां मैं मुख्य नर्तकी बन गई। कल शाम को जब कोकालसिंह से आपकी बातें हो रही थीं, तो उस समय मैं सब सुन रही थी। आपसे मिलने को मेरा मन विकल हो रहा था। कोकाल के प्रस्ताव का जो मुंहतोड़ जवाब आपने दिया, उसे सुनकर मेरा मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया। मैं कितने महान पिता की पुत्री हूं, यह जानकार मेरी खुशी की सीमा न रही।"

तावीज देखते ही जयसिंह अधीर हो उठे। अपनी बिछुड़ी पुत्री को गले लगाकर, फूट-फूटकर रोने लगे। हंसा बोली—"पिता जी, मां के बिना एक पल भी नहीं रहा जाता।"

जल्दी ही ये दोनों अपने घर पहुंच गए। चंद्रा को तो मानो बेटी के रूप में नया जीवन मिल गया। सब खुशी से रहने लगे। मंत्री जयसिंह से सारी जानकारी मिलने के बाद, कनकपुर के राजा भानुप्रताप सिंह ने पड़ोसी देश पर चढ़ाई करके, कोकालसिंह को बंदी बना लिया। ●

चटपट

● सुनील—दो रसगुल्ले और तीन आदमी। इस समस्या का हल कैसे खोजोगे?
अनिल—एक आदमी तुम्हारे जैसा समझदार होना चाहिए, जो रसगुल्ला खाने से इंकार कर दे। फैसला अपने आप हो जाएगा।

● यात्री—अरे, याद आया। मुझे तो रेलवे स्टेशन जाना था, तुम मुझे कहां ले जा रहे हो?
स्कूटर वाला—पता नहीं। आपने मुझसे बस, इतना कहा था—चलो।

● नीता—इस गली में यह आदमी तीन दिन से तोते बेचने आ रहा है, पर बिका एक भी नहीं।
सीमा—यहां सब पहले ही बहुत टें-टें करते हैं, भीड़ बढ़ाने से क्या फायदा हैं।

● रमा—कहते हैं, यह पेड़ दो सौ साल पुराना है। पर पत्ता एक भी नहीं है।
गीता—और बुढ़ापे में हो भी क्या सकता है?

● मोहन—मैं कितनी देर से कह रहा हूं, पर तुम हो कि सुनते ही नहीं।
सोहन—मैं तुम्हारी आवाज कितनी देर से सुनने की कोशिश कर रहा हूं, पर तुम हो कि कुछ कहते ही नहीं।

● अध्यापक—वाक्य पूरा करो—दो बिल्लियों की लड़ाई में....
छात्र—सर, मुझे बिल्ली से डर लगता है।

● अमिता—लोग दरवाजे में लकड़ी की जगह शीशा क्यों लगाते हैं?
विमला—ताकि बिना दरवाजा खोले आगंतुक से जाने के लिए कह सकें।

● विनायक—इस रेस्टोरेंट का मालिक झूठा है। लिखा है 'गरमागरम भोजन'। जब मैंने खाया, तो एकदम ठंडा था।
बैरा—हुजूर, कितनी ठंड पड़ रही है। बेचारी लिखावट का क्या दोष?

● अजय—पांच संतरे, दो नींबू और तीन अमरूद कितने हुए?
अमर—एक चाकू और थोड़ा-सा मसाला होता, तो हिसाब कभी का खत्म हो गया होता।

● विशाल—कल तुम लालकिला बेच रहे थे। आज ताजमहल खरीदने की बात कर रहे हो!
बाजीगर—इसमें क्या गलत है बाबू। बेचूंगा नहीं, तो खरीदूंगा कैसे?

● एक पड़ोसी—हमेशा लड़ाई की बात करते हो, कभी हंसकर भी बोला करो।
दूसरा पड़ोसी—मैं आदमी देखकर बात करता हूं।

● अतुल—तुम हिंदी के टाइपराइटर पर अंग्रेजी में कैसे टाइप कर रहे हो?
अजित—कर रहा हूं, टाइपराइटर मेरा है, मैं चाहे जो करूं।

● शशांक—यार, तुम भी क्या आदमी हो। कब से धूप में खड़े हो!
शेखर—नाराज क्यों होते हो! म हट जाता हूं, तुम आ जाओ मेरी जगह।

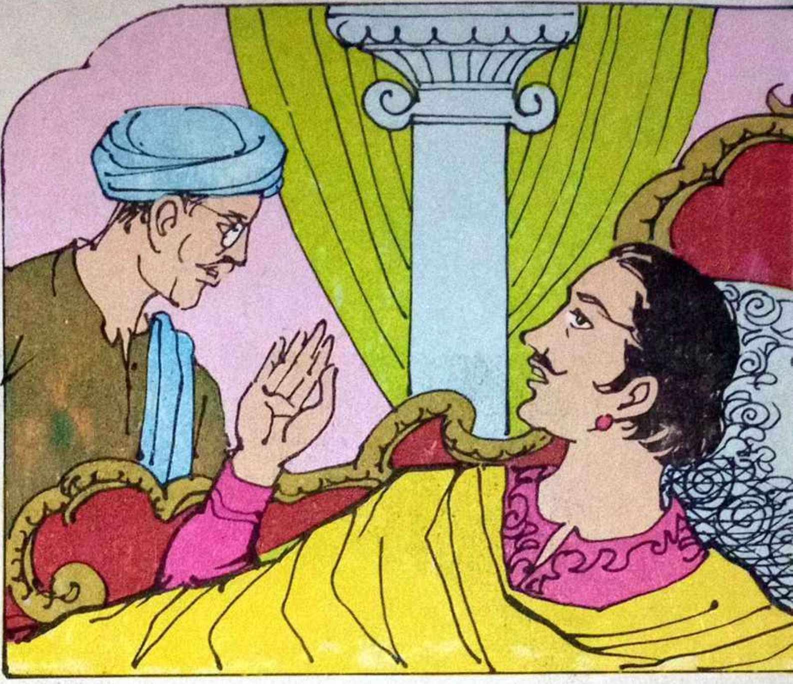
● सिपाही—ऐ बच्चे, दाएं-बाएं देखकर सड़क पार करनी चाहिए।
बच्चा—तो सामने कब देखूं?

● चुन्नू—चिड़िया घोंसला बनाकर हीं क्यों रहती है।
मुन्नू—उसे अपना ही घर चाहिए, इसीलिए। ●



तेनालीराम (२७३)

राज की बात



सर्दी के दिन थे । राजा कृष्णदेव राय बीमार पड़ गए । दरबारियों को पता चला, तो उनमें राजा की मिजाज़पुर्सी करने,महल में जाने की होड़ लग गई । बीमार राजा सारे दिन दरबारियों से घिरे रहते । न आराम मिल पाता, न रानी ढंग से सेवा कर पातीं ।

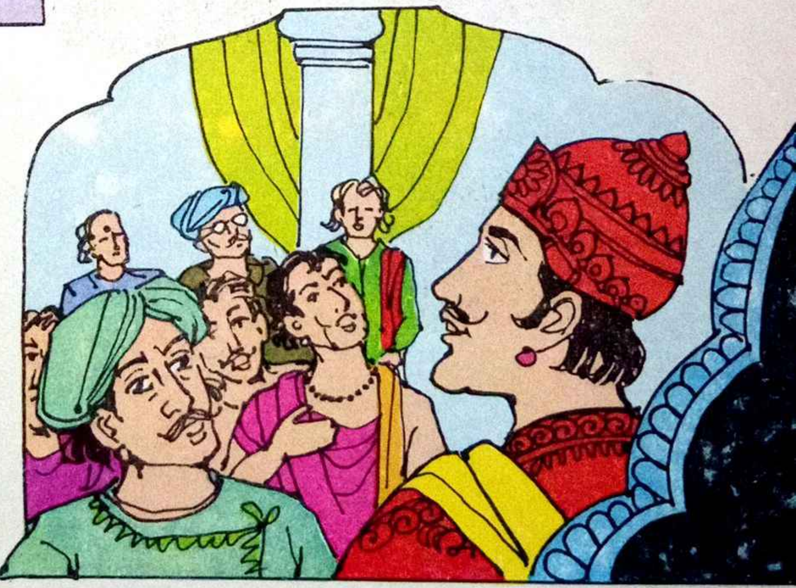
राजा ने तेनालीराम को अपनी परेशानी बताई । कहा—"दरबारी मेरी बीमारी की बात सुन, इतने चिंतित हैं कि बिना यहां आए रह नहीं सकते । मैं उन्हें मना कैसे करूं ?"



तेनालीराम ने मुसकराकर कहा—"मैं कर दूं !"

"हां, मगर ऐसे कि किसी को बुरा न लगे ।" —राजा ने कहा ।

अगले दिन तेनालीराम ने पुरोहित से कहा—"राज की बात है । आपके भले के लिए बताता हूं । किसी से कहिएगा नहीं । राजा को कोई ऐसी बीमारी हो गई है, जो साथ वाले व्यक्ति को कब लग जाए, भरोसा नहीं ।"



सुनकर पुरोहित परेशान हो गया । तेनालीराम तो चला गया, मगर पुरोहित को चैन कहां ! तुरंत मंत्री और सेनापति को बात बता दी । बोला—"अब मैं तो महाराज को देखने नहीं जाऊंगा ।"

होते-होते बात सारे दरबारियों में फैल गई । धीरे-धीरे सबने महल में जाना छोड़ दिया ।

राजा ठीक होकर दरबार में आए, तब भी सब उनसे दूर-दूर रहते । राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ । पूछताछ की, तो तेनालीराम की करतूत का पता चला । सारी बात समझ, गुस्से की जगह उनकी हंसी छूट पड़ी ।



दरबारियों को भी जब असली बात पता चली, तो दांत भींचते हुए क्रोध से तेनालीराम की ओर देखने लगे । राजा ने कहा—"भले ही ऐसी बीमारी की बात फैली, मगर हमें आराम तो मिल गया ।" कहते हुए उन्होंने गले से मोतियों की माला उतार कर तेनालीराम को पहना दी ।

क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा.

क्लिअरेसिल से रोज होमवर्क करते रहें तो दोस्तों के ग्रुप में भी फर्स्ट क्लास नम्बर पाना बिल्कुल आसान.



क्योंकि क्लिअरेसिल त्वचा यानी ज़्यादा साफ़ त्वचा.

कॉलेज में पॉप्युलर होना हो तो पीछे रहकर नहीं चलता और चार लोगों में अलग दिखने के लिए चाहिये ज़्यादा साफ़ त्वचा यानी क्लिअरेसिल त्वचा.

क्लिअरेसिल तीन तरह से मुंहासों पर अपना असर दिखाती है:

एक-यह मुंहासों के अन्दर तक जाती है. दो-ज़्यादा चिकनाई हटाती है. और तीन-मुंहासों को सुखाकर मिटा देती है

क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा.

क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा. • क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा.



क्लिअरेसिल तीन तरह से अपना असर दिखाती है.



बात साफ़ है, दुनियाभर में मुंहासों का नं. १ इलाज है— क्लिअरेसिल.

क्लिअरेसिल लगाइए और दोस्तों का बड़ा ग्रुप बनाइए.



दुनियाभर में मुंहासों का नं.1 इलाज.

क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा. • क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा.

Enterprise/PG/CC/P/2/Hn d



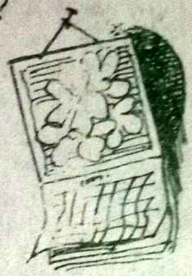
एक नई स्फूर्ति का अनुभव कीजिए...
टर्बो लाइए
नया
Campco
TURBO
नए कैम्पको टर्बो से पाइए एक नई स्फूर्ति. इस क्रीमी मिल्क चॉकलेट में है स्फूर्ति का भण्डार. आज़मा कर देखिए और यौवन के उमंगभरे जोश का लुत्फ़ उठाइए. कैम्पको का नया टर्बो
-स्फूर्तिदायक चॉकलेट
TOP QUALITY LOW PRICE
R K SWAMY/CL/8351/HIN
भारत के सबसे बड़े, सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित. कैम्पको लिमिटेड, मैंगलोर
Campco chocolates
Milk
White
Treat
TURBO
Eclairs
mega bite
Playtime
RUBIES
TOFFEE
Campco beverages
WINNER
COCOA

मैं कहता हूं

धनीराम ने भैंस खरीदी, भैंस भली मोटी-ताजी,
किंतु दूध देने पर होती कभी नहीं वह तो राजी।
जब देखो, तो नौटंकी के नौटंकिए-सी इठलाती,
बछरू को सब दूध पिलाकर धनीराम पर फुफुआती।
चाहे जितना मारो-पीटो, भैंस न चाल पकड़ती थी,
धनीराम की दाल न गलती, अक्ल नहीं कुछ करती थी।
धनीराम के द्वार एक दिन पहुंचे गोनू झा पंडित।
देखा धनीराम को बैठे, सोच और दुख से पीड़ित।
सारी बातें समझ-बूझकर गोनू झा ने कहा— 'धनी,
चिंता क्यों करता है, तेरी भैंस दूध के लिए बनी।
मैं कहता हूं, सुन उसको तू, एक उपाय बताता हूं,
सांप मरे, लाठी ना टूटे, ऐसा गुर सिखलाता हूं।
बछरू को जब दूध पिलाए भैंस, पास आ जाना तू,
हाथ फेर उसकी गर्दन पर, अपना प्यार जताना तू।
फिर रख देना उसके आगे थोड़ा-सा चारा-दाना।
चुपके बैठ, भैंस के थन को धीरे-धीरे सहलाना।
खुश हो जाए भैंस, दूध से तेरा मटका भर जाए।
यह नुस्खा देखा-परखा है, कुछ कमाल तो कर जाए।'
फिर तो रामधनी के घर में खूब दूध की नदी बही,
दिया दक्षिणा में पंडित को छाल्ही वाला जमा दही।
'अकल बड़ी या भैंस ?' विहंसकर गोनू झा ने उसे कहा,
गोनू झा के चरण पकड़कर धनीराम मुसकरा रहा।

— आरसीप्रसाद सिंह

नया कैलेंडर



नए साल क्या-क्या लाओगे ?

नया कैलेंडर फूलों वाला
ताजा दिन, ताजी-सी शाम,
मेला-ठेला, सैर-सपाटा,
गपशप करते दोस्त तमाम।



कलाकंद, चमचम, रसगुल्लों
से मुंह मीठा करवाओगे ?

नई किताबें किस्सों वाली
सपनों में परियों की बातें,
एक झील गुनगुनी धूप की
या फिर घोर अंधेरी रातें।



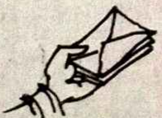
कैसे होंगे रंग तुम्हारे,
कैसा ताज पहन आओगे?

जंगल, पर्वत, हरी वादियां
चांद और तारों के गाने,
मीठी-मीठी एक बांसुरी
बहती नदियों-सी मुसकानें।

बोलो, मेरी कोरी कापी
में तुम क्या-क्या लिख जाओगे ?

— प्रकाश मनु





डाकिया

कंधे पर लटकाए थैला
रोज डाकिया आता है।

उस थैले में ढेरों चिट्ठी,
कड़वी, रूखी, खट्टी-मीठी,
नाम-ठिकाना पढ़ता पहले,
फिर आवाज लगाता है।

कार्ड, पार्सल, बंद लिफाफे,
आते जाने कहां-कहां से,
सब होते हैं थके मुसाफिर,
मंजिल तक पहुंचाता है।

क्रिसमस, ईद, दिवाली, होली,
आती राखी, कुंकुम-रोली,
पहुंचाकर उपहार, बधाई,
सबको खुश कर जाता है।

कड़ी धूप में चलता रहता,
वर्षा होती, मगर निकलता,
हर चिट्ठी में खुशखबरी हो,
मन में यही मनाता है।

करता सेवा, मदद, भलाई,
जिस दिन पड़ता नहीं दिखाई,
उसकी बाट देखता जो भी
अपना मुंह लटकाता है।

— शम्भूप्रसाद श्रीवास्तव



अनोखा फल

—श्रीनिवास वत्स

किसी गांव में चंदरू नामक एक गरीब किसान रहता था। उसके पास थोड़ी-सी जमीन थी। इसमें साग-सब्जी उगाकर वह अपनी गुजर-बसर कर रहा था। उसके परिवार में उसके अलावा और कोई नहीं था।

चंदरू सुबह-शाम हरी तरकारी तोड़कर गांव के मुखिया के घर पहुंचा देता। बदले में मुखिया उसे अनाज, वस्त्र और कुछ पैसे भी देता था। चंदरू अपनी ईमानदारी की कमाई से संतुष्ट था। वह सुबह जल्दी उठकर खेत में चला जाता। दिन भर क्यारियां बनाता, पौधों को पानी देता तथा शाम को घर आकर भगवान का भजन करता।

एक दिन चंदरू दोपहर को अपने खेत में काम कर रहा था। एक चरवाहा अपनी भेड़-बकरियों के साथ उधर से गुजरा। चंदरू ने चरवाहे से कुछ देर विश्राम करने को कहा। चरवाहा चंदरू के पास बैठ गया। उसने बताया—"हमारे इलाके में भयंकर सूखा पड़ा है। इसीलिए मैं अपने पशुओं को लेकर किसी पानी-भरे इलाके में जा रहा हूं।"

उसके रेवड़ में कई अद्‌भुत नस्ल की भेड़ें थीं। उनकी चमकदार, मुलायम ऊन बहुर सुंदर लग रही थी। चरवाहे ने बताया—"यह ऊन बहुत दुर्लभ है, इसलिए बहुत कीमती होती है।"

चंदरू उसकी बात सुनता रहा। फिर कुछ खरबूजे और ककड़ियां चरवाहे को देकर कहा—"भाई, तुम भूखे हो, ये खा लेना।" अपना भोजन भी चंदरू ने चरवाहे को दे दिया। चरवाहे ने मना किया, पर चंदरू बोला—"मैं तो शाम को घर जाकर खा लूंगा। लेकिन तुम्हें तो बहुत दूर जाना है।"

चरवाहा भोजन लेकर आगे चल पड़ा। चंदरू साहूकार के लिए हरी तरकारी तोड़कर घर आ गया।

अगले दिन जब वह खेत पर पहुंचा, तो हैरान था। उसके खेत में अद्भुत ऊन वाली एक भेड़ घास चर रही थी। चंदरू सोचने लगा—'यह कहां से आई ?'

उसने इधर-उधर देखा। पर कोई दिखाई न दिया। चंदरू ने सोचा —'अवश्य यह भेड़ झुंड से अलग हो गई है। मुझे इसके मालिक को ढूंढ़ना चाहिए।' चंदरू पेड़ पर चढ़ गया, परंतु दूर-दूर तक उसे चरवाहा नजर नहीं आया। अब चंदरू परेशान था। चरवाहे को किधर ढूंढ़े ? पता नहीं, किस दिशा में गया है ?

भेड़ उसके खेत से बाहर जाने का नाम ही नहीं ले रही थी। चंदरू ने निश्चय किया, यदि चरवाहा भेड़ को ढूंढ़ता हुआ वापस आया, तो वह भेड़ उसे सौंप देगा। तभी उसके मन में विचार आया-'यहां तो कोई हिंसक जानवर इसे मार सकता है। क्यों न इसे घर ले चलूं ?' चंदरू उस भेड़ को लेकर घर आ गया।

गांव वालों ने अद्‌भुत ऊन वाली भेड़ देखी, तो हैरान रह गए। उन्होंने आज तक ऐसी भेड़ नहीं देखी थी। धीरे-धीरे बात मुखिया तक पहुंची। मुखिया ने चंदरू को बुलाकर कहा—"यह भेड़ बहुत सुंदर है। इसे मुझे दे दो। मैं इसकी चमकदार ऊन से अपना कोट बनवाऊंगा।"

चंदरू ने मना कर दिया। बोला—'मुखिया जी,

यह भेड़ मेरी नहीं है। इसका मालिक आएगा, तो मैं इसे वापस कर दूंगा।''

मुखिया ने कहा—''इसके मालिक को आना होता, तो अब तक आ जाता। अब वह बहुत दूर जा चुका है। फिर एक भेड़ के लिए वह अपनी बाकी भेड़ों को छोड़कर कैसे आएगा ? तुम इसे मुझे दे दो। मैं तुम्हें पैसे दूंगा।''

चंदरू ने भेड़ देने से इंकार कर दिया। मुखिया को बहुत गुस्सा आया, पर वह चुप ही रहा।

गांव के कई लोग हर साल गंगा स्नान के लिए पैदल हरिद्वार जाते थे। इस साल चंदरू की भी इच्छा थी कि वह गंगा स्नान करे। पर हरिद्वार तक आने-जाने में एक महीना लग जाएगा। पीछे से भेड़ को कौन संभाले ? चंदरू रात भर सोचता रहा। अचानक उसे ख्याल आया—'क्यों न एक माह के लिए भेड़ मुखिया को दे दूं ! बदले में वह मेरे खेत से मुफ़्त हरी तरकारी लेता रहेगा। गांव के लोगों के सामने समझौता होगा, तो किसी तरह की बेईमानी का प्रश्न ही नहीं उठता।'

अगले दिन उसने गांव के पंचों को इकट्ठा किया। कहा—''मैं गंगा स्नान के लिए हरिद्वार जा रहा हूं। यदि मुखिया जी एक महीने के लिए मेरी इस भेड़ को संभाल लें, तो बदले में मेरे खेत से मुफ़्त हरी तरकारी तोड़ सकते हैं।'' मुखिया ने समझौता मान लिया। पंचों ने कहा—''जब तुम आओगे, तो तुम्हारी भेड़ तुम्हें मिल जाएगी।''

चंदरू गांव के अन्य लोगों के साथ गंगा स्नान को चला गया।

मुखिया भेड़ को घास डालता, पानी पिलाता और बदले में चंदरू के खेत से मनचाही तरकारी तोड़ लाता।

अभी बीस दिन ही गुजरे थे कि एक दिन भेड़ ने दो बच्चों को जन्म दिया। दोनों उसी की तरह सुंदर और मुलायम ऊन वाले थे। जमींदार बहुत खुश हुआ। उसने भेड़ को हरी-हरी घास खिलाई। दो-चार रोज बाद मेमने फुदकने लगे।

लगभग एक महीने बाद चंदरू गंगा स्नान से लौटा। आते ही वह जमींदार के घर गया। वहां भेड़ के साथ दो बच्चों को देख, उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने मुखिया से कहा—''आपने एक माह तक मेरी भेड़ का ध्यान रखा, इसके लिए मैं आभारी हूं। अब मेरी भेड़ मुझे दे दो।''

मुखिया बोला—''देखो चंदरू, तुम मुझे एक भेड़ देकर गए थे। एक माह बाद वापस आने का समझौता हुआ था। अब समझौते के अनुसार, मैं तुम्हें तुम्हारी भेड़ वापस कर देता हूं, पर इसके बच्चे मैं अपने पास रखूंगा।''

मुखिया की बात सुन, चंदरू दंग रह गया। उसने पंचों को इकट्ठा किया। पर पंच क्या करते ? एक भेड़ का ही तो समझौता हुआ था। मेमनों का तो कोई जिक्र ही नहीं चला था। समझौते के मुताबिक चंदरू को भेड़ मिल गई, पर मेमने मुखिया के पास ही रहे।

बच्चों के बिना भेड़ चलने को तैयार नहीं थी। वह भाग-भागकर मेमनों के पास आ जाती। चंदरू परेशान हो गया। हारकर उसने भेड़ भी मुखिया के पास छोड़ दी।

अभी कुछ दिन ही गुजरे थे कि एक दिन गांव में एक हकीम आया। उसने बताया—''मैं काबुल से आ रहा हूं। मेरे पास स्वादिष्ट मेवे हैं। तीन दिन तक



इनका काढ़ा पीने से पेट के सभी रोग ठीक हो जाते हैं। मुझे तिब्बत के राजा का इलाज करने जाना है। रात भर आपके यहां रुकूंगा।''

वह मुखिया के घर ठहर गया। उसने मुखिया को एक मेवा दिया। कहा—''अगर इसे बो दोगे, तो छह माह में ही इसका पौधा बढ़कर फल देने लगेगा। तुम्हें प्रतिदिन सुबह-शाम इसकी पत्तियों में सुगंधित धूप देनी होगी। थोड़ी देर तक रंगीन चादर से भी ढकना होगा। नहीं तो यह नष्ट हो जाएगा। ऐसी दवा दुर्लभ होती है।''

मेवा पाकर मुखिया बहुत प्रसन्न हुआ। अगली सुबह हकीम चला गया। मुखिया ने सोचा—'इस मेवे को बो दूंगा। जब इस पर फल आएंगे, तो उन्हें बीमार आदमियों को बेचकर खूब धन कमाऊंगा। लेकिन छह माह तक, सुबह-शाम सुगंधित धूप का झंझट है। इस पर कुछ देर रंगीन चादर भी ढकनी होगी।'

तभी उसके मन में विचार आया—'क्यों न यह काम चंदरू को सौंप दूं? उसे कुछ पैसे दे दूंगा।' उसने चंदरू को बुलवाया और सारी बात समझा दीं।

चंदरू मेवे को अपने खेत में ले गया। वहां उसने एक क्यारी बनाकर उसके बीज को बो दिया। सुबह-शाम धूप देने और थोड़ी देर रंगीन चादर ढकने से धीरे-धीरे पौधा बढ़ने लगा। छह मास बाद उस पर फल लग आए।

अब गांव में जो भी व्यक्ति उदर रोग से पीड़ित होता, चंदरू फल तोड़कर उसे दे देता। तीन दिन तक इसका काढ़ा पीने से रोगी पूरी तरह स्वस्थ हो जाता।

जब मुखिया को पता चला कि चंदरू मुफ़्त में बीमार लोगों को मेवे बांट रहा है, तो वह गुस्से से उफन पड़ा। चिल्लाता हुआ चंदरू के पास आया। बोला—''क्यों, ये मेवे मुफ़्त बांटे जा रहा है?''

चंदरू ने धीरे-से उत्तर दिया—''मुखिया जी, आप अपना एक मेवा ले जा सकते हैं। बाकी मेवों का मैं क्या करता हूं, यह मेरी मर्जी।''

मुखिया गरजा—''क्या कहा? मैं अपना एक मेवा ले जाऊं? इस पर उगे सारे फल मेरे हैं। मैंने ही तुझे बीज दिया था।''

चंदरू बोला—''इसका फैसला पंचों के बीच होगा।''

शाम को चंदरू ने पंचों को इकट्ठा किया। सारा किस्सा कह सुनाया। बोला—''भाइयो, जब मैंने इसे एक भेड़ दी, तो इसने बदले में एक ही भेड़ वापस की। मेमने अपने पास रख लिए। अब यह किस मुंह से सारे फलों पर दावा करता है? इसे भी सिर्फ एक ही फल मिलना चाहिए, क्योंकि इसने मुझे सिर्फ एक फल दिया था।''

पंचों ने चंदरू के पक्ष में फैसला कर दिया। मुखिया अपनी बात में खुद ही उलझ गया था।

अगले दिन गांव वालों को राजा की मुनादी सुनाई दी—'राजकुमार भैरवीप्रसाद भयानक उदर रोग से पीड़ित है। जो भी उसका इलाज करेगा, उसको एक हजार स्वर्ण मुद्राएं पुरस्कार स्वरूप दी जाएंगी।'

मुखिया ने चंदरू से प्रार्थना की—''तुम मुझे कुछ मेवे दे दो। मैं आधी मुद्राएं तुम्हें दे दूंगा।''

चंदरू बोला—''मुखिया जी, तुम्हारा ध्यान अभी भी पैसों की तरफ है। इसलिए राजा के पास सभी गांव वाले जाएंगे।''

अगले दिन चंदरू मेवे लेकर गांव वालों के साथ राजमहल पहुंचा। राजकुमार को मेवों का काढ़ा पिलाया गया। तीसरे दिन राजकुमार पूरी तरह स्वस्थ हो गया। राजा ने चंदरू को पुरस्कार देना चाहा। पर चंदरू ने यह कहकर पुरस्कार लेने से मना कर दिया कि यह तो हकीम जी का उपहार है।

हकीम के विषय में राजा ने पूछा, तो चंदरू ने सारी कहानी कह सुनाई। चंदरू की बातों से राजा बहुत प्रभावित हुआ। उसने उसे अपने दरबार में रख लिया। मुखिया से कहा—''भेड़ और मेमने तुरंत चंदरू को सौंप दो।''

मुखिया ने राजा से क्षमा मांगी। शीघ्र ही पड़ोसी गांव की एक सुयोग्य कन्या से चंदरू का विवाह भी हो गया। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

ऊपर से नीचे

१. इस— का सबसे बड़ा आकर्षण क्या है ? (नदी/सदी)

२. अजीब आदमी है, बार-बार— कर देख रहा है। (घूम-घूर)

५. अब— ही रहोगे, या कुछ बोलोगे भी। (रोते/गाते)

१०. तुम्हारी— टोकरी में क्या रखा है, देखूं भला ! (लाल/गोल)

बाएं से दाएं

३. पापा, जन्म दिन पर— ला दोगे न ! (मोर/कार)

४. और— के मारे चलना मुश्किल था। (धूप/धूल)

६. —बैठो और ठंडे दिमाग से सोचो। (यहां/वहां)

७. पांच पवित्र पेड़ों में से एक।

८.— गए, तुम हो कमाल के आदमी ! (मान/जान)

९. हां बंधु, ऐसा— हो सकता है। (तो/भी)

११. इस— ने मुझे बहुत चोट पहुंचाई। (बात/बाघ)

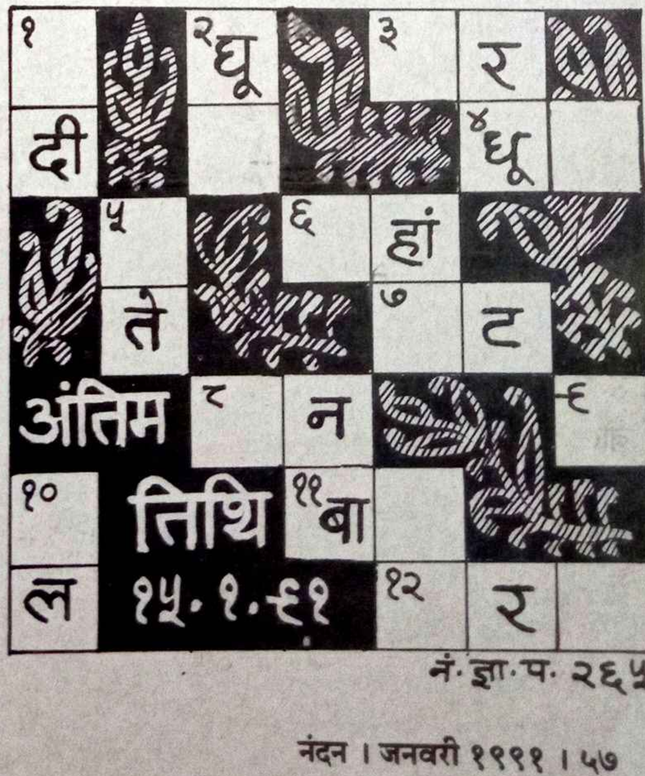
१२. प्राचीन काल के प्रसिद्ध भारतीय चिकित्सक।

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २६५

नाम ______________________

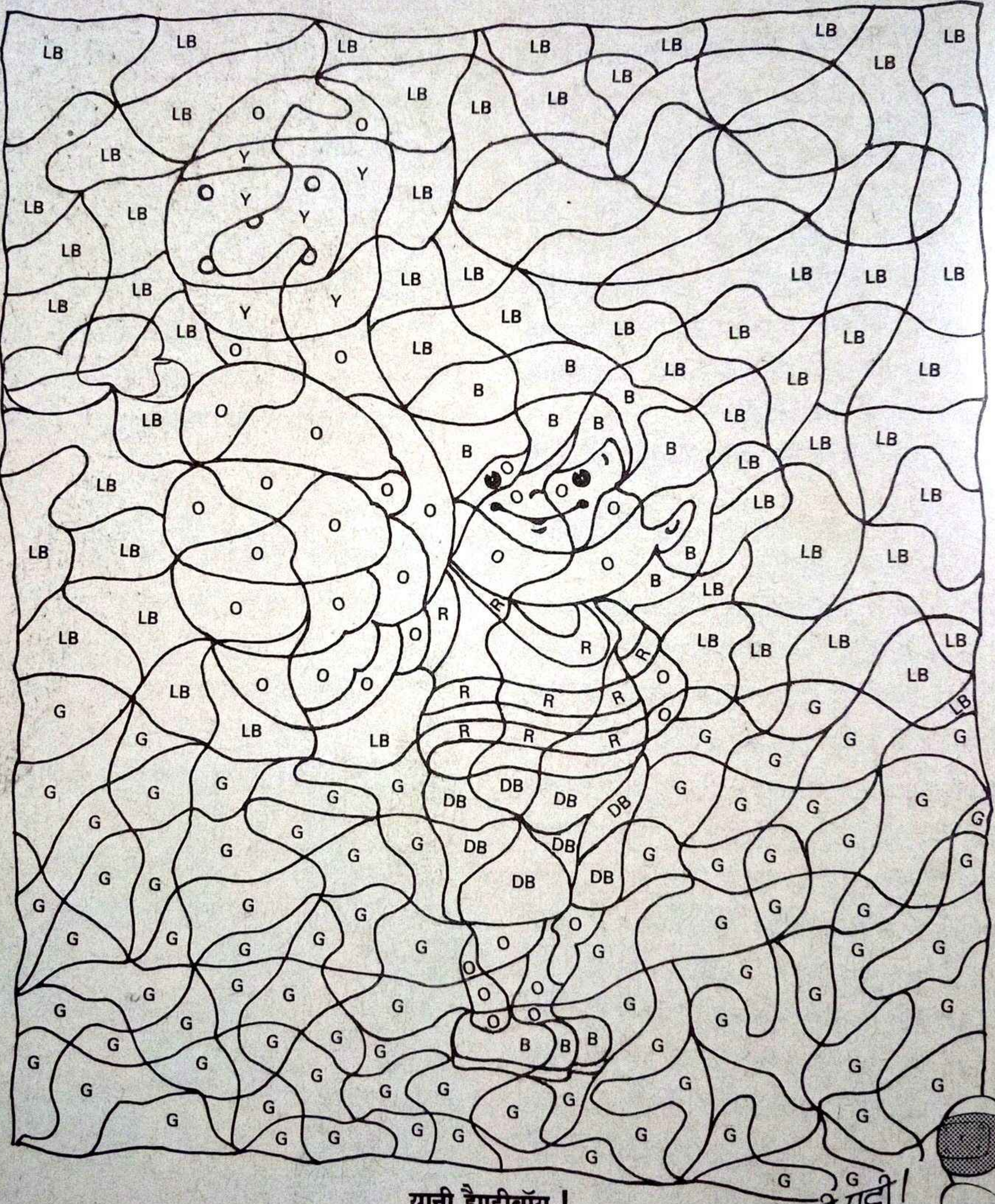
आयु ______ पता ______________________



नं. ज्ञा. प. २६५

भूल-भुलैया में छिपा दोस्त !

इस चित्र में यहां बताए अनुसार सही रंग भरो और
देखो कैसे प्रकट होता है तुम्हारा सच्चा प्यारा
दोस्त—मददगार और भरोसेमंद.



यानी हैण्डीबॉय !

रंग संकेतः

R – लाल
O – नारंगी
B – काला
DB – गहरा नीला
LB – हलका नीला
G – हरा
Y – पीला

बिन्दु वाली रेखा पर काटें

गूंगी राजकुमारी

—ओमीश परुथी

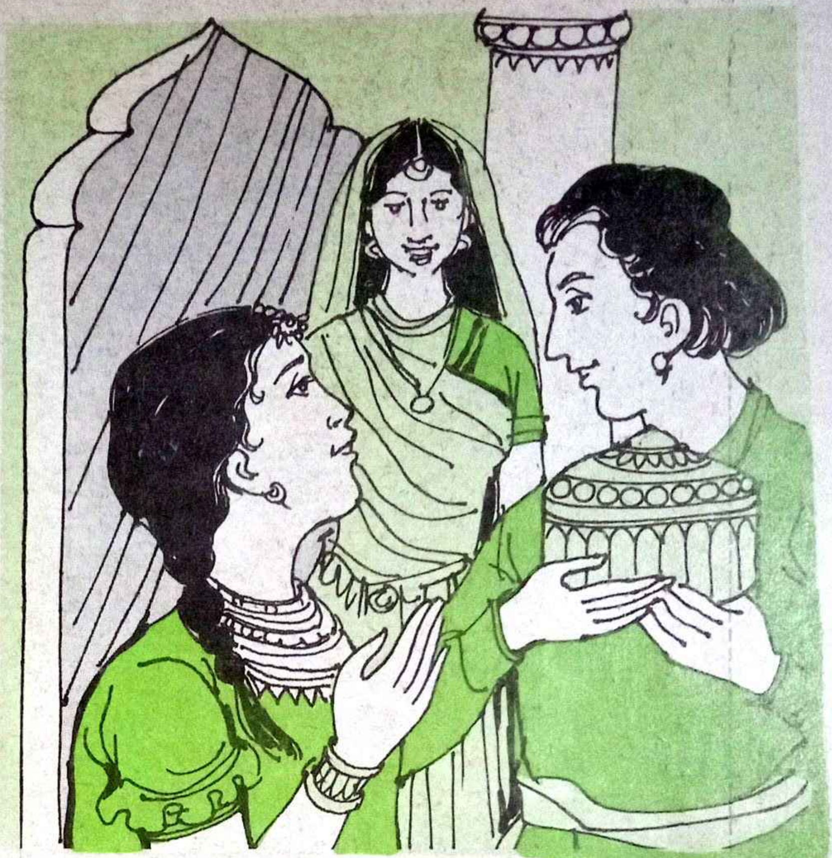
विराट नगर में राजा पद्म सिंह राज्य करते थे। वह अत्यंत क्रोधी तथा अहंकारी थे। जनता उनसे बहुत भयभीत रहती थी।

राजा की दो संतानें थीं। एक पुत्र तथा एक पुत्री। पुत्र का नाम अम्बुज था। उसकी आयु पंद्रह वर्ष थी। पुत्री का नाम सुनंदा था, जो अपने भाई से पांच वर्ष छोटी थी। भाई-बहन में परस्पर बहुत प्रेम था। राजा तो राज-काज में व्यस्त रहने के कारण अपने बच्चों के लिए समय न निकाल पाते थे, किंतु रानी बच्चों से बहुत प्यार करती थी।

राजकुमारी सुनंदा बहुत सुंदर थी, किंतु दुर्भाग्यवश वह जन्म से गूंगी थी। राजा ने अनेक वैद्यों तथा हकीमों से उसका इलाज करवाया, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। गूंगी होने के कारण सुनंदा सहमी-सहमी रहती थी।

एक दिन राजकुमार अपनी बहन के लिए कोई भेंट लाया। भेंट पाकर सुनंदा बहुत प्रसन्न थी। कुछ कहना चाहती थी, मगर कुछ न बोल सकी। उसकी आंखों से ढुलककर आंसू अम्बुज की कलाई पर आ गिरे। अपनी बहन को विवश देखकर उसकी आंखें भर आईं। उसने सारा दिन कुछ नहीं खाया। मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करता रहा कि उसकी बहन बोल सके। रात को वह इन्हीं विचारों में खोया-खोया सो गया। सपने में उसे देवी सरस्वती ने दर्शन दिए। उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा—"पुत्र, दुखी क्यों होते हो ? तुम्हारे राज्य की दक्षिणी सीमा पर एक छोटा-सा गांव है—विनयपुर। वहां एक कवि बाबा रहते हैं। उनकी शरण में जाओ। वह तुम्हारी बहन का दुःख अवश्य दूर करेंगे।"

अम्बुज कुछ और पूछना चाहता था, किंतु तभी सपना टूट गया। सुबह उठकर अम्बुज ने रात का सपना अपनी मां को सुनाया। उसने कवि बाबा से मिलने का निश्चय किया। मां उसे रोकना नहीं चाहती



थी। वह पिता को बताए बिना ही जाना चाहता था, क्योंकि उसके पिता कोई अड़चन डाल सकते थे। वह अपने घोड़े पर सवार हो, दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ा। लम्बा सफर तय करके राजकुमार अम्बुज विनयपुर गांव के समीप जा पहुंचा। वह एक साधारण नागरिक के वेश में था। गांव में प्रवेश करने से पहले उसे एक पथिक मिला। अम्बुज ने पथिक से कवि बाबा के विषय में पूछा। उसने बताया कि कवि बाबा एक नेक दिल इंसान हैं। कभी बहुत अच्छे गीत लिखते थे और मधुर स्वर में सुनाते भी थे। एक बार गांव में अकाल पड़ा। सारी खेती सूख गई। लोग भूख से मरने लगे। लेकिन राजा ने गांव की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। कवि बाबा उस समय जवान थे। वह राज दरबार में जा पहुंचे। बाबा ने निडरता से गांव वासियों के कष्टों के विषय में राजा को बताया। कहा—'राजन, जब प्रजा भूखी मर रही हो, तो आपका ऐश्वर्य तथा मौज-मस्ती में डूबे रहना ठीक नहीं।'

यह सुनकर राजा आग-बबूला हो उठा। उसने गरजते हुए कहा—'मुझे मेरा कर्तव्य समझाने वाले

भला तुम कौन होते हो ? मेरा गुस्सा नहीं जानते ? तुम्हें सख्त दंड दिया जाएगा ।'

"इसके बाद क्या हुआ ?" —अम्बुज ने जिज्ञासा से पूछा । पथिक ने बताया कि राजा ने कवि बाबा की जबान कटवा दी । साथ ही गांव वालों को बाबा से किसी प्रकार का सम्बंध रखने की मनाही कर दी । राजा के डर से न कोई बाबा से बोलता था, न ही सहायता के लिए आगे आता था । अब बाबा बूढ़े हो गए हैं । दिन-रात बस ईश्वर के ध्यान में लीन रहते हैं । बाबा की कथा सुनाकर पथिक ने ठंडी सांस ली ।

अम्बुज का दिल भी भर आया । उसे अपने पिता पर बहुत गुस्सा आया । उसने मन ही मन प्रायश्चित्त स्वरूप बाबा की सेवा करने की ठानी ।

जब अम्बुज गांव के एक कोने में बाबा की झोंपड़ी में उनसे मिलने गया, तो बाबा को बीमार देखकर वह बहुत परेशान हुआ । उसने अपना वास्तविक परिचय दिए बिना, बाबा की एक महीने तक खूब सेवा की । इससे बाबा के स्वास्थ्य में काफी सुधार हुआ । बाबा को लगता था, मानो अम्बुज कोई देवदूत है । बाबा उसके अच्छे व्यवहार तथा सच्ची सेवा से बहुत खुश हुए ।

एक दिन अम्बुज ने अपना वास्तविक परिचय देते हुए अपनी बहन की समस्या बताई । सुनकर बाबा विचार मग्न हो गए । उन्होंने कुछ पल के लिए अपनी आंखें बंद कर लीं । पहले उनके चेहरे पर क्रोध का भाव आया, लेकिन अगले ही पल वह दया में बदल गया । उन्होंने जब आंखें खोलीं, तो अपने सामने अम्बुज़ को हाथ जोड़कर बैठे पाया । बाबा ने उसके हृदय की सच्चाई व बहन के प्रति उसके अनूठे प्यार को पहचान लिया था । उन्होंने मुसकराते हुए अम्बुज के सिर पर स्नेह से हाथ फेरा और एक कागज पर लिखकर दिया—'तुम्हारी बहन अवश्य ठीक हो जाएगी । मैं तुम्हें एक शंख दूंगा । आज से ठीक दस दिन बाद, पूनम की रात को तुम इसे अपनी बहन के सामने जोर से बजाना ।' यह पढ़कर अम्बुज खिल उठा ।

बाबा ने अपनी चारपाई के नीचे पड़े लकड़ी के पुराने संदूक में से एक शंख निकाला । उसे अम्बुज को सौंप दिया । उसने शंख लेकर बाबा के चरण स्पर्श किए । घोड़ा हवा की गति से दौड़ाता हुआ राजमहल लौट आया ।

बाबा के कहे अनुसार उसने पूनम की रात को शंख को जोर से बजाया । शंख की ध्वनि सुनकर सुनंदा के होंठ फड़फड़ाने लगे । सबसे पहले 'भैया' शब्द बोला । राजा सहित सारा परिवार उसकी आवाज सुनकर खुशी से झूम उठा ।

बेटे से कवि बाबा की दुःख भरी कहानी राजा ने सुनी । उनके द्वारा किए गए उपकार के विषय में जानकार राजा को अपने किए पर पश्चात्ताप हुआ । उनके स्वभाव में बदलाव आया । वह बहुत विनम्र तथा दयालु बन गए । वह बाबा से क्षमा मांगने के लिए विनयपुर गांव गए, परंतु बाबा पहले ही स्वर्ग सिधार चुके थे । विनयपुर में एक मंदिर बनवाकर उसमें कवि बाबा की मूर्ति स्थापित की । उनकी कविताओं की एक सुंदर पुस्तक भी प्रकाशित करवाई । ●




चीटू-नीटू
नए साल में गुल्लक के पैसों से बादाम खरीदे हैं। खाएं और दिमाग तेज करें
बेटे, जरा ढाई सौ ग्राम मूंग की दाल ले आना
चल नीटू तू भी
कहाँ जा रहे हो बच्चो, पहले जरा यह मेरे घर पहुंचा देना
अच्छा, मास्टर जी
आए हो, तो एक काम मेरा करते जाओ, कमेटी के नल से एक बालटी पानी
पानी मैं भर दूंगी, तब तक तुम कोने की दूकान से माचिस... मम्मी से भी पूछकर आओ सत्संग कब चलना है
मौसी पूछ रही हैं सत्संग में कब चलना है
मौसी के बच्चे, तुम तो सुबह से दाल लेने गए थे
सारे बादाम तो इसी सोच में खत्म हो रहे हैं कि किसने कहां भेजा था

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इस के अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई बढ़िया-सा, छोटा-सा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० जनवरी '९१ तक **शीर्षक बताइए, 'नंदन' मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली** के पते पर भेज दीजिए। सबसे अच्छे शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम मार्च '९१

चित्र : देवेन्द्र अग्रवाल





पुरस्कृत चित्र

कु. जामवंती वर्मा, २०० यूनिट ३२/बी, नंदिनी नगर-४९००३६

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे—
यूसुफ मर्फिया, मदरास; कैलाश चन्दर, नैनीताल; उषा कुमारी, गया; स्मिता गर्ग, दिल्ली; हरप्रीत सिंह, चितरंजन।

पत्र मिला

□ लोक कथाओं से भरपूर, मनोहारी 'एलबम', रंगीन चित्र, चुटकुले एवं अनोखी प्रतियोगिता में बड़ा आनंद आया। 'राम पंडित' और 'मीठी रोटी' जैसी कहानियां पसंद आईं। 'रंगचाल' खेल आकर्षक लगा। **—नीरजकुमार अग्रवाल, ललितपुर**

□ जिन बच्चों के पापा-मम्मी करते उनको प्यार,
वे बच्चों को लाकर देते, 'नंदन' का उपहार।

—सुमन पटवारी, साहेबगंज

□ 'देवता की पूजा', 'शिलांग देवता', 'सोने की ईंटें' बहुत रोचक एवं शिक्षाप्रद लगीं। 'कवि एक रंग अनेक' में बालस्वरूप राही की कविताएं मन को छू गईं। 'नंदन' का यह अंक याद रहेगा। **— अंतर्यामी प्रधान, रायपुर**

□ नवम्बर अंक की सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक थीं। 'नंदन पाठक प्रतियोगिता' शुरू करने के लिए बधाई। इससे बहुत लेखकों तथा कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। **—बसंतकुमार मंडल, हजारीबाग**

□ लक्ष्मी-गणेश का चित्र सुंदर लगा। डाक टिकटें और रंग-बिरंगा जापान बहुत अच्छा था। प्रभु से प्रार्थना है कि 'नंदन' हर रोज छपे, हर रोज पढ़ने को मिले।

—उदयवीर सिंह, जगाधरी (हरि.)

□ कहानियों में 'देवता की पूजा', 'मुझे मत छूना', 'थाली रख लो', **'छोटी बहू'** 'चांदकंवर' ज्यादा अच्छी लगीं, लेकिन आपसे एक शिकायत है, जो कहानी रुचिकर होती है, वह छोटी होती है। **— उदयकांत मूंदड़ा, रूद (राज.)**

□ नवम्बर अंक मेरे विचार में सभी को पसंद आया होगा।

—राजेशकुमार कोठारी, कलकत्ता

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : राजीव नामदेव, छिंदवाड़ा; शैलेशकुमार सिंह, औरंगाबाद; गोपाल सरवेल, जयपुर।



होनहार बच्चे

वर्तिका नंदा भावनापूर्ण कविताएं लिखती है। उसकी पहली कविता तब छपी, जब वह चौथी कक्षा में थी। फिर तो उसने ढेरों कविताएं लिखीं। इतनी कम उम्र में ही उसका कविता संकलन 'मधुर दस्तक' छप गया। शिशु साहित्य सदन, पठानकोट में उसे वर्ष की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री का पुरस्कार मिला। इसके अलावा कहानियां, नाटक, निबंध और बाल कविताएं भी लिखी हैं वर्तिका ने। भोरूग्राम (चुरू) में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में उसे प्रथम पुरस्कार मिला। भाषण और वाद-विवाद प्रतियोगिता में वर्तिका ने अनेक इनाम जीते हैं।

वर्तिका सन ८५ से जलंधर दूरदर्शन पर 'बच्चों के लिए' कार्यक्रम का संचालन कर रही है। दूरदर्शन से प्रसारित एक नाटक में अभिनय भी किया। बड़ी होकर वह लेखक और पत्रकार बनना चाहती है। नाटकों में निर्देशन करना भी उसका शौक है। **पता है—रेलवे बंगला, १५४ ए, बर्ड रोड, फिरोजपुर छावनी**

आगामी अंक

□ एलबम में प्रधान मंत्री श्री चंद्रशेखर का फ्रेम कराने योग्य चित्र।

□ **अंगूठी ने राजा को बचाया, कैसे? चित्र-कथा में पढ़िए। साथ में दूसरी चित्र-कथा 'भक्त कवि जयदेव।'**

□ बाल समाचार, 'तेनालीराम,' 'चीटू-नीटू' तथा सभी मजेदार स्तम्भ।

घना जंगल चारों ओर खूंखार सैनिक और वे दो बहनें—फिर क्या हुआ—पढ़िए विश्व की महान कृतियों में अंग्रेजी भाषा की कृति 'द लास्ट आफ द मोहिकन्स की संक्षिप्त कथा

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए



जीवन के रंग अजीब...
MACAQUE
(MACACA MULATTA)
CAN BE DISTINGUISHED FROM ANY OTHER
INDIAN MONKEY BY ITS ORANGE RED LION
AND RUMP. FOUND IN NORTHERN AND CENTRAL
INDIA ON THE OUTSKIRTS OF JUNGLE OR IN
AND AROUND VILLAGES AND TOWNS. CAN
SWIM WELL.
ZOO
शुक्र है बोरोलीन करीब
बोरोलीन
खुशबूदार ऐन्टिसेप्टिक क्रीम
सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर
जी डी फार्मास्यिटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३
BOROLINE
ANTISEPTIC PERFUMED CREAM
साठ साल पहले अव्वल
आज भी अव्वल
KNOW YOUR ZOO
बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं
Response 1079

बातें रंग-बिरंगी

डूरंड कप : भारत में डूरंड कप का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि भारतीय फुटबाल का। यह पूरे एशिया की सबसे पुरानी फुटबाल प्रतियोगिता है। इसकी पहली प्रतियोगिता १८८८ में हुई। इसे हेनरी मारटिमर डूरंड ने शुरू किया। पहले इसका उद्देश्य सेना के जवानों का मनोरंजन करना था। इस कप पर कलकत्ता की मोहन बागान और ईस्ट बंगाल टीम ने सबसे अधिक बार अपना अधिकार जमाया। मोहन बागान ने १४ बार और ईस्ट बंगाल ने ११ बार इसे जीता। कप के साथ-साथ अब विजेता टीम को डेढ़ लाख रुपए का इनाम भी दिया जाता है। २३ अक्तूबर, १९९० को ईस्ट बंगाल को ११वीं बार कप जीतने पर, कप के साथ-साथ डेढ़ लाख रुपए का चैक भी दिया गया। शुरू-शुरू में इसका आयोजन शिमला में होता था। १९४० से इसका आयोजन दिल्ली में होता है।

क्रिकेट ओलम्पिक खेल नहीं है : क्रिकेट की लोकप्रियता किसी से छिपी नहीं। लेकिन इसके समर्थन और विरोध का वाद-विवाद कभी समाप्त नहीं हो सकता। भारत के भूतपूर्व क्रिकेट कप्तान बिशनसिंह बेदी कहते हैं—"क्या यह आश्चर्य नहीं कि क्रिकेट ओलम्पिक खेलों में नहीं है !" यह खेल भारत में उस समय आया, जब भारत अंग्रेजों के अधीन था। आज यह खेल ब्रिटेन की तरह भारत का राष्ट्रीय खेल माना जाता है। लेकिन अमरीका, फ्रांस, जर्मनी, चीन, सोवियत संघ और जापान के खेल प्रेमी तो इस पर कोई बात या टीका-टिप्पणी ही नहीं करते। जबकि भारतीय खेल प्रेमी इसकी एक-एक गेंद और एक-एक रन का हिसाब रखते हैं। टैस्ट क्रिकेट पांच दिन खेला जाता है। ज्यादातर टैस्टों में हार-जीत का फैसला नहीं हो पाता।

राष्ट्रीय कप-रणजी ट्राफी : क्रिकेट की राष्ट्रीय प्रतियोगिता का नाम है रणजी ट्राफी। इसकी शुरुआत १९३४-३५ में हुई। इसका नाम नवा नगर के राजकुमार रणजीत सिंह पर रखा गया। इस देश में टैस्ट क्रिकेट (यानी अंतर्राष्ट्रीय मैच) पहले खेला गया और राष्ट्रीय मैच बाद में। भारत को टैस्ट बिरादरी में सन् १९३२ में शामिल किया गया। सी. के. नायडू की कप्तानी में भारत ने पहला टैस्ट २५ से २८ जून, १९३२ को लाईस के मैदान पर खेला था।

फुटबाल में संतोष ट्राफी : देश में फुटबाल की प्रतियोगिताएं — डूरंड, डी. सी. एम., आई. एफ. ए. शील्ड, रोबर्स कप, फेडरेशन कप होती हैं। फुटबाल की राष्ट्रीय प्रतियोगिता का नाम 'संतोष ट्राफी' है। इसकी शुरुआत १९४१ में हुई। यह राजा मन्मथनाथ राय चौधरी की याद में शुरू की गई थी।

हाकी की राष्ट्रीय प्रतियोगिता : १९३५ में भारतीय हाकी टीम ने न्यूजीलैंड का दौरा किया। उस समय माउरी लोगों ने भारतीय टीम को एक शील्ड उपहार में दी। १९४७ में जब भारत का विभाजन हुआ उस समय वह शील्ड पंजाब हाकी एसोसिएशन के पास थी। इसके सचिव उसे अपने साथ पाकिस्तान ले गए। इसके बाद राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए ट्राफी का नाम 'रंगास्वामी कप' रखा गया।

वेस्टइंडीज कोई देश नहीं : क्रिकेट के खेल में वेस्टइंडीज का बड़ा दबदबा है। लेकिन क्या कभी आपने गौर किया है कि दुनिया में वेस्टइंडीज नाम का कोई देश है भी या नहीं। दुनिया के मानचित्र पर वेस्टइंडीज़ नाम का कोई देश नहीं है। कैरेबियन सागर में गुआना, जमैका, त्रिनिडाड, बारबडोस आदि छोटे-छोटे अनेक द्वीप हैं। इन द्वीपों की अलग-अलग इकाई और अलग-अलग शासन-व्यवस्था है। राष्ट्रकुल या ओलम्पिक खेलों में इन देशों के खिलाड़ी अपने-अपने देश की ओर से हिस्सा लेते हैं, लेकिन जब क्रिकेट की कोई टीम चुननी होती है, तब इन सब द्वीपों से मिली-जुली टीम तैयार की जाती है। उसे वेस्टइंडीज के नाम से पुकारा जाता है। क्रिकेट का खेल ही इन सब द्वीपों को एक डोर में बांधे रखता है।

—योगराज थानी

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. बाएं कोने में लेटे शिशु का मुंह अधिक खुला हुआ है ।

२. इसका दायां हाथ भी दिखाई देने लगा है ।

३. हैट वाले व्यक्ति का हैट आगे से मुड़ा हुआ है ।

४. अल्मारी के ऊपर वाले खाने में एक तौलिया अधिक दिखाई दे रहा है ।

५. नोटिस बोर्ड वाली कील छोटी हो गई है ।

६. बच्चे को उठाए खड़ी नर्स का एप्रन पीछे से कम खुला हुआ है ।

७. चश्मे वाले आदमी का सिर अधिक गंजा है ।

८. नर्स के पास वाली ट्राली पर लगा कार्ड गायब है ।

९. नीचे दाएं कोने में मेज पर पहले साबुन रखा था ।

१०. दीवार घड़ी की सुइयां खिसक गई हैं ।

शीर्षक बताइए परिणाम



नवम्बर '९० अंक में छपे रंगीन चित्र पर पुरस्कार के लिए इन शीर्षकों को चुना गया—

फूल हंसे कलियां मुसकाईं, जन्मदिन की तुम्हें बधाई ।

—भंवरलाल कुमावत, द्वारा गोपाललाल कुमावत, ग्राम— बोराज, वाया— फुलेरा, जयपुर (राज.) ।

फूलों का लगा है मेला, पर मैं रह गया अकेला ।

—शबाना यासमीन, ७४७ शास्त्रीनगर, पटना ।

फूलों से मैं करता प्यार, करते लोग मुझे दुलार ।

—तनु तनिया, द्वारा कुंवर मोहनस्वरूप, १८६, सिविल लाइंस, बरेली (उ.प्र.)

इनके शीर्षक भी पसंद आए : **इंद्रप्रीत कौर, बख्शीनगर, जम्मू-कश्मीर; मनीष शर्मा, सम्बलपुर (उड़ीसा); राजेशकुमार कोठारी, कलकत्ता; अजय नागराज, बिलासपुर (म.प्र.) ।**

नंदन ज्ञान-पहेली : २६३

परिणाम

१ गि		२ टू	ट		३ म	न
ने			४ को	ड़ा		
	५ श्या	ल			६ रो	ने
७ क		८ ल	ड़ा			
पि				९ सी	ख	
ल		१० हा	ट			११ ला
			१२ ग	दा		ने

नं. ज्ञा. प. २६३

इस बार भी सर्वशुद्ध हल किसी प्रतियोगी का नहीं आया। एक और दो गलती वाले प्रतियोगियों में पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है

एक गलती : एक : दो सौ पचास रुपए

१. प्रियंक श्रीवास्तव, सी-३५/४ पेपर मिल कालोनी, लखनऊ।

दो गलती : दस : प्रत्येक को पचहत्तर रुपए

१. सोमेशकुमार जैन, गुना; २. संतोष कुमार, रामपुर (गया); ३. नरेश पांचाल, कोटा; ४. संतोषकुमार जायसवाल, राउरकेला; ५. सोमनाथ दास, भागलपुर; ६. हरीश कुमार छाबड़ा, करनाल; ७. धर्मनाथ दुबे, कलकत्ता; ८. तिलकराज मुद्गल, रोहतक; ९. निकिता महांती, बिलासपुर (म. प्र.); १०. महेश मान सिंहका, भीलवाड़ा।

अपनी प्रिय पत्रिका 'नंदन'

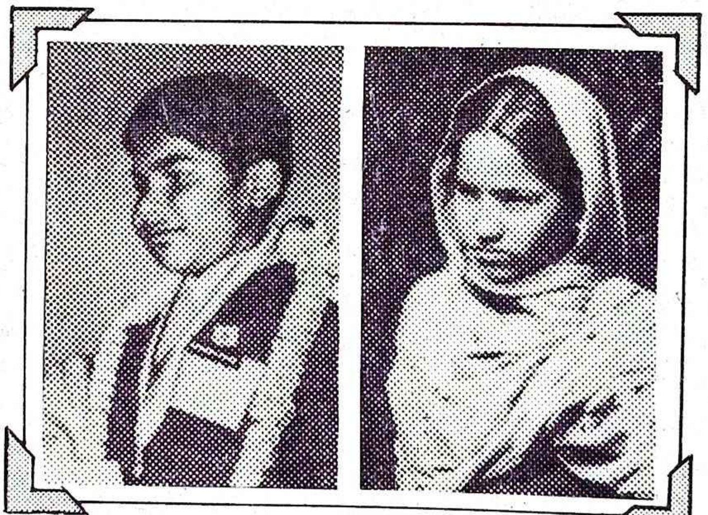
घर बैठे मंगाइए
छूट का लाभ भी उठाइए

एक वर्ष का शुल्क : ४० रुपए
(आठ रुपए की छूट)
दो वर्ष का शुल्क : ७५ रुपए
(इक्कीस रुपए की छूट)

शुल्क भेजने का पता-
प्रसार व्यवस्थापक
'नंदन' मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

उसे नहीं रोक पाया कोई जाति, वर्ग या वर्ण का बन्धन, उसने सोचा तो सिर्फ़ इतना कि बचाना है एक मानव जीवन.

अभिवादन! भारत के छोटे लेकिन बहादुर बच्चों का. इस उम्मीद के साथ कि उनकी मानव बन्धुओं का ख़्याल करने और उनके प्रति निःस्वार्थ प्रेम की भावना यूँ ही बनी रहेगी. और फलेगी-फूलेगी. ताकि हम भी उनसे कुछ सीख सकें. देश की एकता को बनाए रखें.और इस तरह नेहरूजी के सपने को साकार कर सकें...



उड़ीसा के **कुमार कृपासिंधु प्रधान** ने एक सात वर्षीय बच्चे को बाघ से बचाया

हरियाणा की **संध्या देवी** ने पूरे गांव में आतंक फैला देने वाले गीदड़ को मारा.

"हमें स्वतंत्र भारत का एक ऐसा सुंदर भवन बनाना है जिसमें उसकी सारी संतानें सुख-चैन से निवास कर सकें."

योगक्षेमं वहाम्यहम्

भारतीय जीवन बीमा निगम

बीमा करवाइए, उनके सुरक्षित भविष्य के लिए.

MAA COMMUNICATIONS-B-LIC/19A HIN

पुरस्कृत कथाएं

पत्ती लाओ

बिट्टू का साथी एक अनोखा पक्षी था। एक दिन बिट्टू ने पक्षी से कहा-"किसी नई जगह पर चलें।" पक्षी उड़ चला। जंगल के बीचोबीच एक गुफा थी। बिट्टू को वह स्थान बहुत पसंद आया। वह पक्षी के साथ नीचे उतर आया। दोनों घूमते-घूमते गुफा के दरवाजे के पास आए। बिट्टू ने गुफा के दरवाजे पर तीन बौनों को बैठे देखा। तीनों बौने रो रहे थे। बिट्टू को आश्चर्य भी हुआ और बौनों पर दया भी आई। पास जाकर उसने बौनों से रोने का कारण पूछा। एक बौना बोला—" गुफा के ऊपर वह पेड़ देख रहे हो। इसकी ये पत्तियां अद्‌भुत हैं। जो तीन पत्तियां खा लेता है, उसे अच्छी तरह. नींद आती है।

"इसीलिए हर हफ्ते राजा के पास ये पत्तियां पहुंचानी पड़ती हैं। महल यहां से बहुत दूर है। हमें आज पत्तियां पहुंचानी थीं लेकिन थकान से हमें नींद आ गई! न जाने क्या होगा?"

"चिंता की कोई बात नहीं है। लाओ, पत्तियां मुझे दो। मैं दे आता हूं।"- बिट्टू पत्तियां लेकर गया और जल्दी ही वापस आ गया।

एक दिन बिट्टू पत्तियां लेकर जा रहा था। तेज हवा चलने लगी। सारी पत्तियां उड़ गईं। बिट्टू नीचे उतर पत्तियां ढूंढ़ने लगा, मगर वे कहां मिलतीं। बिट्टू उन्हें ढूंढते हुए थक गया। उसे नींद आ गई। बहुत रात हो जाने पर वह हड़बड़ा कर उठा। पक्षी की पीठ पर सवार हो राजमहल की ओर चल दिया। वहां राजा परेशान टहल रहा था। वह बिट्टू को डांटने लगा। कहा कि तीनों बौनों को वह जेल में डाल देगा। बिट्टू ने कहा—"महाराज, आप एक दिन की तकलीफ से इतने परेशान हो उठे। क्या आपने कभी यह जानने की कोशिश की कि वे तीनों बौने कितना कष्ट उठाकर यहां आते हैं। आज आप उन्हीं को सजा देना चाहते हैं।" राजा को बात समझ में आ गई। उसने पेड़ बगीचे में ही लगवा लिया। —**संगीता अग्रवाल, रानीखेत**

छलनी में पानी

पर्वतों के मध्य में सुंदर नगर बसा था। वहां का राजा वीर सिंह प्रजापालक था। राजा का एक पुत्र था—विजय। लेकिन बचपन में ही उसकी मां गुजर गई। राजा वीर सिंह ने दूसरी शादी कर ली।

एक दिन रानी ने राजा से कहा—"महाराज, अगर विजय सब विद्याओं में निपुण है तो मैं उसकी परीक्षा लूंगी। अगर वह असफल रहा, तो उसे देश निकाला दिया जाएगा और सफल रहा, तो राजा बनाया जाएगा।" राजा वीरसिंह ने बात मान ली। रानी ने विजय से कहा कि वह इस छलनी में पानी भर कर लाए और एक बूंद भी जमीन पर न गिरे, ऐसा कैसे हो पाता? विजय को देश निकाला दे दिया गया।

रास्ते में विजय ने एक सांप को देखा। वह एक पक्षी के अंडे को निगलने जा रहा था। विजय ने सांप को भगा दिया। आगे बढ़ने पर उसे एक बूढ़ी परी मिली। उसकी लड़की को राक्षस समुद्र पार उठाकर ले गया था। विजय ने परी की सहायता करने का वचन दिया। लेकिन समस्या थी कि समुद्र को कैसे पार किया जाए। तभी एक विशाल पक्षी विजय के पास आया। बोला—"तुमने मेरे बच्चों को बचाया था। आओ, मैं तुम्हें समुद्र पार करा दूं।"

विजय राक्षस के महल की छत पर उतरा। संयोग से राक्षस महल की छत पर चहलकदमी कर रहा था। विजय ने राक्षस पर वार किया। पक्षी अपनी तीखी चोंच से उससे लड़ने लगा। काफी देर तक लड़ाई होने के बाद राक्षस मर गया। विजय ने देखा, एक लड़की सलाखों के बीच से उसे पुकार रही थी। वही बुढ़िया परी की लड़की थी। विजय और राजकुमारी को पक्षी ने वहीं समुद्र के किनारे पहुंचा दिया। परी ने राजा वीरसिंह को सारी बात बताई, तो राजा ने विजय से क्षमा मांगी। —**कु. मधु, कालका (हरि.)**

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं: राजशेखर, छपरा; मुकेश आडवाणी, जयपुर।



बुलबुल नील आशीष क्षमा ज्ञानेन्द्र

नई पुस्तकें

रोचक सत्य, रोचक विज्ञान, रोचक जादू, और रोचक गणित; लेखक : आइवर यूशिएल; प्रकाशक : बाल-साहित्य शोध संस्थान, नई दिल्ली; प्रत्येक का मूल्य : ८ रुपए।

'रोचक सत्य' पुस्तक में चित्रों सहित एक-एक पृष्ठ में कई विचित्र बातों की जानकारी दी गई है। जैसे-एक छछूंदर रात भर में २२५ फीट सुरंग खोद सकती है। एक खास किस्म का पत्थर पानी पर तैर सकता है। मनुष्य के शरीर में पाई जाने वाली रक्त कणिकाओं को यदि एक पंक्ति में रख दिया जाए, तो इनकी लम्बाई से पूरी पृथ्वी को चार बार लपेटा जा सकता है। 'हार्सपोलो' खेल का जन्म भारत में हुआ था। तब इसे 'चौगान' कहते थे। ह्वेल तैरते हुए पीछे नहीं लौट सकती आदि रोचक जानकारियों से पुस्तक भरी पड़ी है।

दूसरी पुस्तक 'रोचक विज्ञान' में भी 'करो और सीखो' के आधार पर विज्ञान के सिद्धांतों को खरा उतारने की कोशिश की गई है। सोडे-सिरके के मेल से कार्बन-डाइ-आक्साइड पैदा कर, आग बुझाई जा सकती है। आलू से बिजली पैदा कर, बल्ब कैसे जलाया जा सकता है? छोटी-सी बोतल के अंदर पूरा गुब्बारा समा सकता है। प्रयोगों के साथ चित्र भी दिए गए हैं।

'रोचक जादू' में जादू के चमत्कारों को आसान ढंग से बताया गया है। इस पुस्तक को पढ़कर पता चलता है कि सचमुच जादू में चमत्कार का इतना महत्व नहीं होता, जितना कि हाथ की सफाई और कुशलता का।

श्रृंखला की चारों पुस्तकों में सबसे दुरूह पुस्तक 'रोचक गणित' है। छोटी-छोटी बातों को काफी घुमावदार तरीके से सुलझाया जाता है। इससे पुस्तक की रोचकता समाप्त हो गई है। इसे पुस्तक की असफलता ही कहा जाएगा।

गोरा बादल : लेखक : यादवेंद्र शर्मा चंद्र; किसान और कौवा : लेखिका : लक्ष्मी रस्तोगी; सोने का अनार : लेखिका : शशि गुप्ता; प्रवीण प्रकाशन, १/१०७९ई, महरौली, नई दिल्ली; प्रत्येक का मूल्य : १० रुपए।

चित्तौड़ के राणा रतनसिंह के दरबार का बांसुरी वादक राघव चेतन अलाउद्दीन खिलजी से मिल जाता है। अलाउद्दीन राणा रतनसिंह को गिरफ़्तार कर रानी पद्मिनी की मांग करता है। गोरा-बादल युद्ध करने जाते हैं। बादल राणा को बचा ले जाता है। गोरा युद्ध करता शहीद हो जाता है। बाद में बादल भी मारा जाता है। लेखक ने पुस्तक रोचक शैली और सरल भाषा में लिखी है। पुस्तक का मुख पृष्ठ आकर्षक है।

दूसरी पुस्तक 'किसान और कौवा' एक ऐसे किसान की कहानी है, जो अपने मित्र कौवे की सलाह मानता है। कौवा वे सारी बातें किसान को बता देता है, जो ब्रह्माजी के दरबार में सुनकर आता है। यद्यपि ब्रह्माजी को भी इस बात पर आश्चर्य है कि उनकी सारी बातें किसान को कैसे मालूम पड़ जाती हैं, मगर भेदिए का पता नहीं चल पाता। पुस्तक कहीं-कहीं उबाऊ हो गई है।

राजा के बगीचे में सोने के अनार लगते हैं। चोर न पकड़ पाने पर राजा बड़े दो बेटों को देश निकाला दे देता है। छोटा बेटा चोर का पता लगा लेता है। फिर वह अपने दोनों भाइयों को ढूंढ़ता है। भाई उसे कुएं में धकेल देते हैं। राजकुमार को कुएं से एक राजकुमारी निकालती है। विवाह कर वह अपने राज्य में जाता है। मगर दोनों भाइयों की शिकायत नहीं करता।

पुस्तक के भीतरी चित्र बढ़िया नहीं है। मुख पृष्ठ आकर्षक है।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

नंदन रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

